मानसिक रोग

कारण और निवारण

डॉ० प्रकाश भारती

सुबोध पब्लिकेशन्स

मूल्य ३० ०० रुपये

 / प्रकाशक सुबोध पब्लिकेशंस, २/३ बी, अंसारी रोड नई दिल्ली-११०००२ / संस्करण १९८७ / मुद्रक अजय प्रिण्टर्स, नवीन शाहदरा दिल्ली ११००३२

क्रम

सुख और स्वास्थ्य

आधुनिक रहन सहन के कारण उत्पन्न होनेवाली मानसिक अशान्ति के कारण मानव-जीवन अत्यधिक जटिल एवं दुःखी होता जा रहा है। उसे दूर करने में 'होम्योपैथी' किस प्रकार और किस सीमा तक सहायक और सफल सिद्ध हो सकती है यही इस पुस्तक के लिखने का उद्देश्य है। यद्यपि प्रस्तुत पुस्तक का विषय औषधि विज्ञान है, तदपि अस्वाभाविक और अप्राकृतिक रहन-सहन के कारण मनुष्य को जो मानसिक रोग तथा कष्ट घेर लेते हैं होम्योपैथिक औषधियों के प्रयोग से उनसे मुक्ति पाई जा सकती है, इसमें सन्देह नहीं।

आज समस्त संसार में मानसिक रोगियों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। प्रत्येक व्यक्ति निराश, श्रान्त, चिंतित-सा दिखाई देता है। यदि उसे किसी प्रकार की कोई चिन्ता न भी हो तो वह किसी इस या उस कारण से चिंतित हो ही जाता है। किसी को अधिक सन्तान उत्पन्न होने का दुःख है तो कोई निस्सन्तान होने के कारण दुःखी है। किसी का दाम्पत्य जीवन सरस और आनन्दमय नहीं है तो कोई परिवार-नियोजन की चिंता से ग्रस्त है।

ये समस्यायें तब और अधिक जटिल बन जाया करती हैं, जब मनुष्य का धन का अभाव हो। आयुर्वेज्ञानिकों के मत से इसका मूल कारण मनुष्य के शरीर और मस्तिष्क में प्रवाहित होनेवाले रक्त में निहित है। उनका मत है कि माता पिता से उत्तराधिकार में जैसा रक्त मनुष्य के शरीर में आता है उसके परिणामस्वरूप ही उसके मन और बुद्धि कार्यशील होते हैं। विभिन्न प्रकार का वातावरण परिस्थितियाँ और साधन मन और बुद्धि के विकास तथा ह्रास के कारण बनते हैं। यही कारण है कि प्रत्येक व्यक्ति का स्वभाव और विचार करने का ढंग विभिन्न प्रकार का होता है।

जीवन को दुःखी अथवा सुखी बनाने में विचार मूल अथवा मुख्य कारण माने गये हैं। कुछ लक्षणों के रूप में विचारों का प्रभाव आहार के साथ-साथ बुरा अथवा अच्छा दिखाई देता है। 'होम्योपैथी' इन्हीं लक्षणों के आधार पर औषधि का निर्धारण कर रोग को दूर करती है।

द्रुत गति से चलनेवाला मानव-जीवन आधुनिक युग की सबसे बुरी देन है। इसके परिणामस्वरूप मनुष्य के अपने शारीरिक स्वभाव के कारण उसका रक्तचाप घटता अथवा बढ़ता है अर्थात् वह 'लो-ब्लडप्रेशर' अथवा हाई-ब्लडप्रेशर' का रोगी बन जाता है। मनुष्य के साधन सीमित होने से घबराहट बेचैनी, दाम्पत्य जीवन का सरस और आनन्दमय न होना गलत ढंग से इच्छाओं की पूर्ति करना, चिंता, क्रोध आदि आदि अनायास ही जीवन को दुःखी बनाये रहते हैं।

इन सब कष्टों और बाधाओं से होम्योपैथी' किस प्रकार मुक्ति दिला सकती है, यही इस पुस्तक का विषय है। हमने यह समझाने का प्रयास किया है कि ईश्वर की ओर से प्रदत्त प्राण अथवा सजीवनी शक्ति किस प्रकार स्थिर रखकर और किस प्रकार अपनी इच्छाओं को नियन्त्रित कर मानसिक तथा शारीरिक व्याधियों से मुक्ति प्राप्त की जा सकती है।

इस युग की सर्वाधिक हास्यास्पद देन है विज्ञापन। कुछ लोग तो इस को वैज्ञानिक युग कहते हैं, किन्तु यह वास्तव में 'विज्ञापन-युग' है। उन विज्ञापनों में होता है—'एक सप्ताह में यौवन वापस' 'सदा युवा बने रहिये' 'इच्छित सन्तान प्राप्त कीजिये' 'सुन्दर और आकर्षक बने रहने की रामबाण औषधि' आदि आदि। यह मान भी लिया जाय कि ऐसी विज्ञापित औषधियों के प्रयोग से, जो कि सामान्यतया उत्तेजनात्मक ही होती हैं कुछ क्षणों के लिए दाम्पत्य जीवन का रस कुछ अधिक आ भी जाय तो क्या हृदय और मस्तिष्क पर उसका दुष्प्रभाव पड़े बिना रह सकता है? हृदय के रोगी क्या बढ़ रहे हैं? मनुष्य अपने गुण कर्म और स्वभाव का अवलोकन करने के लिए उद्यत नहीं होता, यही कारण है कि वह बाह्योपचार अथवा औषधियों का आश्रय लेकर स्वस्थ रहने की अभिलाषा करने लगता है।

होम्योपैथी का यह सिद्धान्त है कि जब मनुष्य की 'सजीवनी शक्ति' क्षीण होती है तो मानव शरीर पर रोग के लक्षण उभरने लगते हैं। उस शक्ति को किस प्रकार सुरक्षित रखा जाय, यह उन उभरनेवाले लक्षणों को देखकर होम्योपैथी के माध्यम से किया जा सकता है। जहाँ एक ओर मनुष्य मानसिक रोगों और समस्याओं पर होम्योपैथिक औषधि द्वारा नियन्त्रण रख सकता है, वहाँ दूसरी ओर वह इनके माध्यम से अपनी बुरी आदतों का परित्याग करने में सफल हो सकता है। चाहे कोई अत्यधिक क्रोधी हो अथवा अत्यधिक कामनाओं से परिपूर्ण हो इस प्रकार के दोष भी होम्योपैथिक चिकित्सा द्वारा दूर कर जीवन को रसमय बनाया जा सकता है।

इस पुस्तक के प्रारम्भिक अध्याय में ही इनका उल्लेख कर दिया गया है।

अपनी प्रथम प्रकाशित पुस्तक 'घर का डाक्टर' मे यद्यपि हमने अनेक शारीरिक तथा मानसिक रोगो की चिकित्सा और ओषधियो का उल्लेख किया है, तदपि प्रस्तुत पुस्तक जहाँ साधारण रोगियो के लिए सहायक सिद्ध होगी, वहाँ यह युवावग, विशेषतया विवाहित युवक-युवतियो की समस्याओ का सर्वाधिक समाधान करने मे समर्थ होगी। अपनी आदतो को नियन्त्रित करने के इच्छुक अविवाहित युवक-युवतियाँ भी इसमे लाभ उठा सकते हैं। उदाहरणार्थ यदि कोई सिगरेट पीने अथवा अफीम खाने या मद्य-पान की आदत से मुक्ति प्राप्त करना चाहता है तो वह इस पुस्तक म दी गई ओषधियो से लाभ उठा सकता है।

हीन भावना से ग्रस्त और नपुसकता का शिकार होनेवाले युवक भी इसमे वर्णित चिकित्सा के आधार पर लाभ उठा सकते है। उन्हे चाहिये कि वे आकर्षक विज्ञापनो पर मुग्ध होकर अपने धन और जीवन को नष्ट न होने दें।

होम्योपैथी 'परिपूर्ण चिकित्सा विधान' है, अत यह सब प्रकार के शारीरिक एव मानसिक रोगों की सफल चिकित्सा करने मे समर्थ है।

सामान्य भारतवासियो की विभिन्न समस्याओ का समाधान करने मे यह पुस्तक सहायक हो और पाठकगण इससे पूर्ण लाभ प्राप्त कर सकें, इसी आशा और विश्वास के साथ हमने विस्तार से विषय का प्रतिपादन करने का प्रयास किया है। हम अपने प्रयास म किस सीमा तक सफल सिद्ध हुए हैं इसका निर्णय तो पाठक ही कर पायेंगे।

जुलाई ८, १९८६ —प्रकाश भारती

भय और क्रोध

भय और क्रोध ये दोनों ही मानसिक अवस्थायें हैं। जिस व्यक्ति में इनके लक्षण सामान्य से अधिक दिखाई देते हों, उनकी चिकित्सा करवानी अनिवार्य है। इसके लिए वंशपरम्परागत लक्षणों की छानबीन करना भी अत्यन्त आवश्यक है। पारिवारिक इतिहास, शिक्षा, भय अथवा क्रोध का वातावरण या फिर किसी प्रकार के असाध्य रोग का होना आदि आदि इन दोषों का मूल कारण होता है।

जो व्यक्ति अधिक भयभीत रहते हैं अथवा जिनको अत्यधिक क्रोध आता है वे कभी भी शारीरिक रूप से पूर्ण स्वस्थ नहीं रह सकते। उन्हें कोई न कोई रोग लगा ही रहता है। हैनिमन के सिद्धान्त के अनुसार वे केवल सोरा के रोगी ही नहीं होते अपितु साइकोसिस अथवा सिफलेटिक दोष के कारण भी ऐसे रोगी बन जाया करते हैं अथवा बन सकते हैं।

ऐसे रोगियों का लक्षणसमूह देखते समय अथवा उनका इतिहास जानते समय होम्योपैथिक सिद्धान्त के अनुसार यह आवश्यक हो जाता है कि सर्वप्रथम सम्बन्धित व्यक्ति के पारिवारिक इतिहास को कुरेदकर कारणों की खोज करना और फिर उसके बाद ऐण्टी सोरिक ऐण्टी-साइकोटिक अथवा ऐण्टी सिफलैटिक ओषधियों में से एक ऐसी ओषधि का चयन करना होगा जिससे कि रोगी का लक्षणसमूह मिलता हो। यदि माता पिता में भी इसी प्रकार के दोष पाये जायें तो इन्हें रक्त सम्बन्धी मानकर ओषधि के अतिरिक्त भी दृढतापूर्वक अभ्यास से इन दोषों को दूर करने का यत्न करना होगा। मानसिक दृढता के लिए यम नियम और ध्यान तथा प्राणायाम का आश्रय लेना लाभकर होगा।

मानसिक दृढता के लिए योगाभ्यास का सुझाव देनेवाले सरल उपाय बताते हैं। इसके लिए ध्यान सर्वश्रेष्ठ बताया गया है। स्वच्छ और समतल भूमि पर आसन जमाकर निमीलित आंखों से ध्यान का मस्तिष्क में केन्द्रित करना होता है। दृष्टि को एक स्थान पर जमाना अनिवार्य है। सामान्यतया नासिका के अग्रभाग पर दृष्टि जमाने का सुझाव दिया जाता है। इसका गहन अभ्यास करने से मनुष्य शून्य में विचरने लगता है।

अभ्यास करते समय आरम्भ में कुछ दिनों में मस्तक-पुटल में हल्की-सी पीड़ा-सा अनुभव तो होता है, किन्तु यह अधिक समय तक नहीं रहता और शनै-शनै अभ्यास हो जाने पर हृदय में आनन्द और मस्तिष्क में शान्ति की अनुभूति होने लगती है। प्रतिदिन पन्द्रह मिनट अथवा आधा घण्टा नित्य ही इस प्रकार का अभ्यास करने से बुद्धि तीव्र एवं निर्मल होने के साथ-साथ मनुष्य अपनी भावुकता पर भी नियन्त्रण करने में सफल हो जाता है। जो व्यक्ति-वंश परम्परा से क्रोधी अथवा भयभीत रहनेवाला हो अर्थात जिनको माता पिता के रक्त में इस प्रकार के भाव प्राप्त हुए हों, उनको होम्योपैथिक औषधि के साथ-साथ इस प्रकार की योग क्रिया की सहायता से पूर्ण स्वास्थ्यलाभ होता है।

साधारण सी बात पर भी भय अनुभव करनेवाला अथवा आवेश में आ जानेवाला व्यक्ति सर्वथा स्वस्थ नहीं रह सकता। कुछ समय बीतने पर जहाँ उसकी पाचनशक्ति तथा यकृत दुर्बल हो जायेंगे वहाँ उसकी परिश्रम करने की शक्ति और उसके साथ-साथ स्मरणशक्ति भी मन्द हो जायेगी। ऐसा व्यक्ति एकाकी रह जाता है वह मित्रविहीन बन जाता है। इसके कारण स्वयं उस व्यक्ति को न केवल शारीरिक और मानसिक हानि होगी, अपितु उसके क्रोधी स्वभाव के कारण उसके मित्र और सम्बन्धी भी उससे रुष्ट हो जायेंगे। इस प्रकार उसका जीवन दुःखदायी बन जायेगा।

हम अपनी पहली पुस्तक 'घर का डाक्टर' में गर्भावस्था के प्रकरण में यह कह आये हैं कि गर्भवती महिला को भय क्रोध और वासनायुक्त वातावरण से दूर रखा जाना चाहिये। ऐसे वातावरण का प्रभाव गर्भस्थ शिशु पर पड़ता है जो कि हानिकर होता है। ऐसी अवस्था में किन किन औषधियों का प्रयोग उचित है इस विषय में हम इस पुस्तक में यथा-स्थान उल्लेख कर रहे हैं। यहाँ केवल इतना ही संकेत करना उपयुक्त समझते हैं कि वही बच्चे अधिक क्रोधी अथवा भयभीत बनते हैं जिनकी माता का मन गर्भस्थिति के अनन्तर अर्थात गर्भावस्था में स्वस्थ नहीं रहता, जिनका गर्भकाल उपरिलिखित वातावरण में व्यतीत होता है।

औषधि का चयन सदा लक्षणसमूह को दृष्टि में रखकर ही किया जाना उपयुक्त होता है।

अगले पृष्ठों पर हम पहले भय के विभिन्न लक्षणों पर उपयुक्त औषधियों का उल्लेख कर रहे हैं, तदनन्तर क्रोध के लक्षणों पर उपयुक्त औषधियों का उल्लेख करेंगे।

भय

एकोनाइट (Acotine Nap) ३०, २००, १००० भय के विभिन्न लक्षणो पर यह मुख्य ओषधि मानी गई है। इसके रोगी म मत्यु का भय अत्यधिक होता है। उसे पीडा होने पर, ज्वर होने पर, सडक पार करते समय या फिर भीड मे से निकलते समय भय लगता है। कई बार तो भय इतना अधिक हो जाता है कि रोगी अपनी मत्यु के समय की घोषणा तक कर देता है। वह कराहने लगता है और कहता है 'मैं मर जाऊँगा कमरे मे टँगे क्लाक की ओर सकेत कर चिल्लाता है, 'घडी की सुई दस बजे तक आते ही मैं मर जाऊँगा। अब नही बच सकता।' इस प्रकार पीडा अधिक होती है बेचैनी बढती है, रोगी अँधेरे म जाने से डरता है न केवल किसी अन्य से अपितु वह स्वय से और अपनी परछाइ तक से डरता है। उसे बार बार प्यास का अनुभव होता है।

मत्यु भय के कारण उसकी जबान सूखने लगती है वह पानी मागता है। उसका शरीर उष्ण होता है और नाडी की गति बहुत तीव्र हो जाती है। अत्यधिक बेचैनी होती है। मत्यु भय और प्यास तथा बेचैनी के रहते शेष लक्षण गौण हैं, चाहे वह ज्वर हो अथवा अतिसार हो। ये उसके मुख्य लक्षण ही यह निणय कर देंगे कि वह व्यक्ति एकोनाइट का रोगी है। यही उसकी ओषधि है।

रोगी के मुखडे से मत्यु का भय भाँपा जा सकता है। जो महिला 'हाय मैं मर गई, मैं नही बचूगी इस प्रकार चिल्लाती है निश्चय ही वह एकोनाइट की रोगिणी है। पुराने रोगी को उच्च शक्ति एक हजार अथवा दस हजार की एक खुराक देकर दो सप्ताह या एक मास तक छोड दीजिये और उसके बाद उसका पुनरावलोकन कीजिए कि उच्च शक्ति देने का कैसा प्रभाव हुआ है।

लम्बी अवधि के बाद उच्च शक्ति म एकोनाइट गहरे प्रभाव दिखाता है और शनै शनै रोगी भय मुक्त होता जाता है।

अपराध करके भय लगना स्वाभाविक है। यह जीवात्मा का लक्षण है। यह लक्षण मानव मे आजीवन रहता है। किन्तु सामान्य स्थिति मे मानव

का भययुक्त रहना रोग का लक्षण है।

आर्सेनिकम एलबम (Arsenicum Album) २००,१०००—इस ओषधि का रोगी एकोनाइट से भिन्न होता है। यद्यपि यह बेचैन होता है किन्तु इसकी बेचैनी उससे भिन्न होती है। वह सदा अपना स्थान बदलते रहना चाहता है, बिस्तर से कुर्सी पर कुर्सी से सोफे पर तो कभी किसी और स्थान पर, यहाँ तक कि एक कमरे से दूसरे कमरे में चला जाता है किन्तु कहीं चैन नहीं पाता। क्षण-क्षण पर प्यास का अनुभव करता है होठ सूखते हैं दो घूंट पानी पीकर ग्लास रखता है तो फिर थोड़ी ही देर बाद पाच दस मिनट से भी पहले ही फिर पानी मांगने लगता है। यद्यपि प्यास केवल दो घूंट की ही होती है किन्तु थोड़े-से समय के अन्तर पर लगती रहती है। अकेला होने पर उसको भय लगता है, अतः उसकी यही इच्छा होती है कि उसको अकेला छोडकर न जाया जाय। रोगी की नाडी मध्यम और अनियमित चलती है। इस ओषधि का रोगी 'टिप-टॉप' और स्वच्छता पसन्द करनेवाला होता है। प्रत्येक कार्य काल्पनिक ढंग से करता है।

यदि कोई गृहिणी इस रोग की रोगिणी हो तो वह भले ही बिस्तर पर लेटी हो किन्तु घर की गन्दगी को देखकर वह सो नहीं सकती, बेचैन होकर वह बिस्तर पर से उठकर कमरे की सफाई करना आरम्भ कर देगी सफाई करने के बाद ही वह सो पायेगी। रोगी उत्साहहीन होता है। भय लगा रहता है। ठण्डा पसीना आता है। उसको लगता है कि ओषधि के सेवन से कोई लाभ नहीं है। घबराहट के कारण एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता है किन्तु उसको चैन नहीं मिलता।

अर्जेंटम नाइट्रीकम (Argentum Nitricum) २००,१०००—इसके रोगी की मानसिक अवस्था विचित्र होती है। सदा भय लगा रहता है। अपनी सूझ-बूझ पर भी सन्देह होता है और समझता है कि उसको असफलता ही प्राप्त होगी। भय के कारण उसको किसी भयानक रोग की आशंका रहती है। खिड़की से कूद जाने की प्रेरणा जागती है। घबराहट और कम्पन होता है, सन्तुलन नहीं रख पाता। आँखें बन्द करके चल नहीं सकता घबरा उठता है। सारे कार्य जल्दी में ही करता है। उसको लगता है कि समय बहुत धीरे-धीरे व्यतीत हो रहा है। चलने पर तेज चलता है। गली में गुजरते हुए मोड पर डरता है कि कोने से कहीं कोई टकरा न जाय। साइकल अथवा स्कूटर पर बैठे हुए भी उसकी मानसिक स्थिति ऐसी ही होती है। इसलिये वह जल्दी जल्दी चलता है। चर्च, सिनेमा अथवा किसी समारोह में जाते समय घबराहट में शौच अथवा लघुशंका के लिए जाता है। उस पर अतिसार का आक्रमण होता है। इस प्रकार के रोगी को मीठा

बहुत पसन्द होता है किन्तु मीठा खाने से उसको अतिसार (डायरिया) हो जाता है। इन सभी मुख्य लक्षणों पर किसी भी रोग में सबसे पहले अर्जेण्टम नाइट्रिकम पर विचार करना उपयुक्त होगा।

औरम मेटेलिकम (Aurum Metallicum) २००,१००—इसके रोगी को भय के साथ साथ निराशा भी घेरे रहती है। उसको सदा मृत्यु का भय रहता है। आत्महत्या की बात सोचने लगता है, कभी-कभी आत्महत्या के लिए तैयार भी हो जाता है। भार सहन नहीं होता रोगी डरता है। मस्तिष्क का सन्तुलन बिगड़ा रहता है। अपना काम यथेष्ट तेजी के साथ नहीं कर पाता। उत्तेजित रहता है। आत्महत्या पर उतारू होता है। जीवन से उसका मोह नहीं रहता।

जिस रोगी को सदा आत्महत्या की बात करते पाया जाय अथवा वह आत्महत्या करने का निश्चय प्रकट करे उस रोगी को औरम मेटलिकम की २०० शक्ति की दो चार खुराक देकर स्वस्थ किया जा सकता है।

पचास वर्ष का एक रोगी निराश होकर मेरे पास आकर आत्महत्या की बात करने लगा तो मैंने उसको औरम मेटेलिकम की दो सौ शक्ति की एक खुराक दी तो दूसरे दिन ही उससे पूछने पर कहने लगा, "क्या करूँ छोटे छोटे बच्चे हैं सिर पर ऋण चढ़ा हुआ है, फिर भी बच्चों को देखकर मरने का मन नहीं करता, आखिर जीवित रहना ही होगा।" उसके बाद फिर कभी उसने आत्महत्या की बात नहीं की।

औरम मेटलियम शुद्ध स्वर्ण से बनाई जाती है। उपदंश के पुराने रोगी का अथवा परिवार में किसी सदस्य का ऐसा ही इतिहास मिलने पर उसके लक्षण बच्चों में पाये जाते हों अथवा उपदंश में रोगी का रोग पारे के अधिक सेवन कराने से दबा दिया गया हो तो ऐसे रोगी को यह औषधि स्वस्थ कर देती है।

इस रोग के लक्षण रात्रि के समय बढ़ते हैं रोगी सो नहीं पाता डरावने स्वप्न देखने लगता है नींद में ऊँची-ऊँची सिसकियाँ भरता है, ऐसा लगता है कि डर गया हो। उसमें यह लाभदायक होती है।

एसफोटिडा (Asafoetida) ३०,२००—जब रोगी को भय का आभास होता हो पेट के निचले भाग अर्थात् एबडोमन में गड़बड़ी होती हो और इसके कारण भय हो तो उस अवस्था में इस औषधि का प्रयोग लाभकारी होता है।

बेलाडोना (Belladonna) ३०,२००,१०००—इस औषधि का रोगी विचित्र संसार में रहता है। अनेक प्रकार के भय और भ्रम से वह ग्रस्त होता है। उसके मस्तिष्क में नाना प्रकार के विचार उठते रहते हैं।

डरावने चेहरे देखता है, नींद में बडबडाता है। यदि कोई रोगी भाषण देने लग तो उसको इसका सबसे बडा लक्षण माना जाता है। रोगी का मुख क्रोध से लाल हो जाता है, काटता है, ठोकर मारता है, किन्तु स्वयं पृथक् रहने की इच्छा करता है। कुत्ते से भय, बात करने में अरुचि, उसको अपनी आँखो के सामने डरावने पशु अथवा मनुष्य दिखाई देने लगते है जब कि वास्तव मे सामने कुछ होता ही नही। यह सब रोगी के अपने मस्तिष्क की उपज होती है। रोगी हठी होने के साथ-साथ रोता-चिल्लाता है। ज्ञान की बातें करने लगता है। इन्द्रियो की तीव्रता(एक्यूटनेस आफ सेन्स) तथा लक्षणो मे तेजी के साथ परिवर्तन, मुख लाल, प्यास का न होना अथवा बहुत कम होना, घबराहट तथा भय आदि लक्षणो मे बैलाडोना अत्यन्त लाभकारी होता है।

डॉ० कैण्ट का मत है कि भय लक्षण पर यह बहुत बडी औषधि है। बच्चो के लिए यह महान् औषधि है। कुत्ते के भय अथवा काट लेने पर भी प्रारम्भ मे इसकी दवा की छोटी ३ एक्स शक्ति ही देने से लाभ होता है, क्योकि यह मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव होने से रोगी को बचाती है।

विशेष—एक बच्चा एक दिन स्कूल से लौटने के बाद सहसा रुग्ण हो गया। पूछने पर उसने कुछ बताया नही। उसका मुख लाल हो गया और उसको १०३ डिग्री ज्वर भी। उसके जाँघ के जोड पर गिल्टी-सी दिखाई दी। यह पूछने पर कि उसको कही चोट तो नहीं लगी अथवा उसको उस स्थान पर किसी ने मारा तो नही ? इसका उत्तर नकारात्मक था। इस प्रकार उसका कारण अज्ञात ही रहा। अनुमान लगाया गया कि बच्चा डर गया है। गिल्टी मे पीडा अनुभव करने लगा। तापमान तो अधिक था ही। उसको बैलाडोना ३० की एक खूराक दी गई तो एक घण्टे मे तापमान एक डिग्री कम हो गया। इस प्रकार घण्टे दो-घण्टे के अन्तराल पर तीन चार अन्य खुराकें देने से रात्रि तक बच्चा स्वस्थ हो गया। गिल्टी की पीडा भी समाप्त हो गई और गिल्टी का चिह्न भी नही रहा।

बोरेक्स (Borax) ३०,२००—इस औषधि के रोगी से ऊपर से नीचे की ओर देखने अथवा नीचे की ओर उतरने मे भय का आभास होने लगता है। चढाई की ओर चलते समय अथवा झूले पर बैठा होने पर झूला ऊपर की ओर जब जाता हो तो उस समय बालक को डर नही लगता किन्तु नीचे उतरते समय भयभीत होता है। कभी-कभी छोटे बच्चो को उछालते हुए अनुभव किया होगा कि ऊपर उछलते समय बच्चा प्रसन्न होता है किन्तु नीचे आते समय वह डरने लगता है, चिल्ला पडता है। बाहो मे आने पर सहम जाता है। ऐसे बच्चे को प्राय बोरेक्स की आवश्यकता होती है।

जो बच्चे सहसा नींद खुलने पर चिल्लाते हैं और अपने झूले का किनारा पकड़ लेते हैं, ऐसा वे गिरने के भय के कारण नहीं करते, अपितु यह उनका एक प्रकार का मानसिक लक्षण है। इसमे बोरेक्स उत्तम औषधि मानी गई है।

इस औषधि के रोगी मे अधिक घबराहट दिखाई पडती है। नीचे की ओर जाते समय बेचैनी का भास उसके मुख पर स्पष्ट दिखाई देता है। तनिक-सी बात पर डरनेवाला, तनिक सा शोर होने पर अथवा पटाखा फटने पर, मोटर टायर के फटने की ध्वनि पर, चाहे वह कितनी ही दूर क्यो न हो, उसे घबराहट होने लगती हैं, वह चौंक जाता है। बादल का गर्जन भी उसको चौका देनेवाला होता है। वह तनिक-सा धमाका अथवा आवाज भी सहन नही कर सकता।

ऐसे लक्षणो मे बोरेक्स उत्तम औषधि है।

कल्केरिया कार्ब (Calcarea Carb) २००,१०००—इसका रोगी सायकाल के समय अधिक कष्ट का अनुभव करता है। उसको इस प्रकार का भय सताता है कि वह बात नही कर सकेगा उसका काम बनेगा नहीं (His understanding must fail), दुर्भाग्य से और छूत की बीमारी से भयभीत रहता है। मन म सदा सन्देह बना रहता है तनिक-सा परिश्रम करने पर उसका सिर गर्म हो जाता है सिर म खुजली होती है पसीना इतना अधिक आता है कि तकिया गीला हो जाता है। रोगी को प्रकाश पसन्द नही होता।

डाक्टर कैण्ट के अनुसार इस औषधि के रोगी का मन कभी विचार रहित नही रहता वह अपने आप से ही बात करता रहता है। चलते हुए उसे भय बना रहता है मानो कि कोई उसका पीछा कर रहा हो। किसी अन्य पर अत्याचार की बात सुनकर डरने लगता है। अत्याचार की बात सुनकर उसका जोश आ जाता है। इन सब लक्षणो मे उन्होने इसी औषधि को उपयुक्त बताया है।

कल्केरिया फास (Calcarea Phos) ३० १००० १००००—यह औषधि उन बच्चो के लिए परम उपयोगी है जिनमे रक्तकणो की कमी होती है जो तनिक-सी बात पर चिढ जाते हैं, उदास रहते हैं और फिर भूल भी जाते है। दुबले पतले और डरनेवाले बच्चो के लिए भी यह औषधि उत्तम है। इस औषधि के रोगी के पुट्ठे ढीले-ढाले होते हैं उसकी हड्डियाँ बडी दुर्बल होती हैं और उनके दाँत भी बडे दुर्बल होते हैं।

जो बच्चा दुबला पतला हो देर से चलना सीख रहा हो, भयभीत रहता हो, ऐसे बच्चो के लिए यह औषधि ही अति उत्तम है।

कार्बो वेज (Carbo Veg) ३० २००,१०००—जिस व्यक्ति को अंधेरे से चिढ होती हो, सहसा स्मृति चली जाती हो, भूत प्रेत का भय रहता हो, थकान सी अनुभव करता हो, घबराया हुआ रहता हो, पंखा किया जाना, रुचिकर हो शरीर से रस निकल जाने के कारण अथवा किसी रोग के बाद दुबलता और भय का अनुभव करता हो, उसके लिए यह औषधि उपयोगी है।

कास्टीकम (Causticum) २००,१०००—इस औषधि का रोगी दूसरे का कष्ट म देखकर उसके प्रति सहानुभूति प्रकट करता है। यदि बच्चा हो तो वह अकेला बिस्तर पर जाना पसन्द नहीं करता, उदास रहता है और चाहता है कि कोई उससे सहानुभूति व्यक्त करे। रोगी का मुख गन्दा, दुबला पीला और मस्सा से भरा रहता है। किसी भय, आवेग अथवा दुःख के कारण मनुष्य बीमार पड जाता है। छींकते अथवा खांसते समय मूत्र की बूंद निकल जाती है अथवा वह ऐसा अनुभव करता है कि बूंद निकल गई है। ऐसे लक्षणो म यह औषधि उत्तम है।

घबराहट अथवा डर के साथ यदि पेशाब का लक्षण विद्यमान हो तो अन्य कोई औषधि इतना प्रभावी काय नही कर पायेगी जितना कि कास्टीकम कर सकती है। चाहे कैसा भी रोग क्यो न हो, इन लक्षणो पर यह अचूक औषध है।

इसी लक्षण पर एक चिंताग्रस्त वेचन रोगी को मैंने ठीक किया है। उसको पिंडली पर खुजली बहुत परेशान किया करती थी। इससे पूर्व अनेक औषधियों का सेवन कराया जा चुका था किन्तु सब प्रभावहीन रही थी। अन्त म खांसते समय पेशाब का आना अथवा आभास होना' इस लक्षण को मुख्य मानकर कास्टीकम १००० की एक खुराक दी गई, उससे रोगी स्वस्थ हो गया।

डिजिटलिस (Digitalis) ३० २००—उदासी, भय घबराहट, भविष्य के विषय म चिन्ता, इतना डर समाना कि यदि हिला-डुला तो हृदय गति रुक जायगी, जडता का अधिक होना, लेटे रहने मे ही अपना कल्याण समझना, हिलने म भयभीत होना, अत्यधिक दुबलता मानो शक्ति बिलकुल क्षीण हो गई हो, श्वास मे अनियमितता, आंखो के पर्दों का नीला पड जाना, अत्यधिक मिचली आना, उल्टी होने पर भी मिचली का समाप्त न होना, तनिक-सा भी भोजन करने पर बेचैनी अनुभव करना आदि इस औषधि के मुख्य लक्षण हैं।

बाइं और हृदयस्थल के समीप पीडा का अनुभव होना, नाडी का बहुत ही शिथिल गति से अथवा रुक रुककर चलना, हिलने पर हृदयगति

रुक जाने का भय होना आदि लक्षणसमूह पर यह ओषधि निश्चित ही लाभकारी सिद्ध होती है।

यह ओषधि हृदय को भी शक्ति प्रदान करती है।

जलसिमियम (Gelsemium) ३०, २००—इस ओषधि का रोगी थका मांदा, डरनेवाला और कांपनेवाला होता है। जडता, निद्रालुता और चक्कर आना अर्थात 'डिजिनेस' ये तीन विकार इसके मुख्य लक्षण माने गये है जो इसका वास्तविक चित्र प्रस्तुत करते है। इनके अतिरिक्त कम्पन प्यास का सर्वथा अभाव अथवा नाममात्र की प्यास होना, सहमा हुआ, मन से हारा हुआ सा, यदि ये लक्षण भी हो तो उसके लिए यह ओषधि उपयुक्त है। रोगी मे उत्साह का सर्वथा अभाव होना सूर्य की गर्मी से अधिक पीडित अनुभव करना और दुर्बलता का अधिक होना भी इसका लक्षण है।

इसका रोगी एकान्त मे चुपचाप पडा रहना पसन्द करता है। बोलने के प्रति अरुचि रहती है। सोने की इच्छा होती है किन्तु सो नही पाता। स्नायुओ और पुट्ठो पर बोझ अनुभव करता है। मन की आज्ञा पालन करने मे असमर्थ होता है। इन लक्षणो म भी यह ओषधि उत्तम है।

हाइओसाइमस (Hyoscyamus) ३०, २००—इसके रोगी का स्नायुमण्डल बडा विचित्र होता है। उसका स्वभाव झगडालू होता है। वह सन्देहशील होता है। अश्लील व्यवहार करनेवाला, बहुत अधिक बोलने वाला और ईर्ष्यालु स्वभाव का होता है। उसको सदा यह भय सताता रहता है कि कही कोई उसको विष न दे द। अत्यधिक सन्देहात्मक प्रवृत्ति होती है। कभी कभी वह अत्यधिक प्रसन्न भी दिखाई देने लगता है। हर बात पर हँसने का उसका स्वभाव होता है। व्यवहार म मूर्खता रहती है। अपने सिर को इधर-उधर हिलाता रहता है। शरीर को नग्न करता है।

इस ओषधि के लक्षणवाले रोगी के कष्ट रात्रि के समय अधिक बढ़ जाया करते हैं। यदि कोई नारी हो तो मासिक धर्म के दिनो मे भोजन के बाद वह लेटती है तो उसको कष्ट होता है।

इन सभी लक्षणो के लिए यह ओषधि उत्तम है।

इगनेशिया (Ignatia) २००,१०००—इसको हिस्टीरिया की उत्तम ओषधि माना गया है। भय के लक्षणो पर भी यह उत्तम सिद्ध होती है। भावुकता, तनिक-सा टोकने पर परेशानी का अनुभव करना, टोकने पर आवेश म आ जाना, चिन्ता और दुःख के कारण भी ऐसे लक्षण प्रकट होते हैं। स्त्रियों के लिए यह ओषधि उत्तम मानी गई है उनके लिए अधिक उपयोगी सिद्ध होती है। जिस परिवार म मृत्यु के उपरान्त मृत्यु हो जाया

करती है उसकी प्रतिक्रिया महिलाओं पर कभी-कभी बड़ी घातक भी होती है। इस प्रकार के दारुण दुःख में इगनेशिया का सेवन उनके लिए लाभकारी होता है। इसके सेवन से महिलाओं में दुःख को सहन करने की शक्ति आती है। इगनेशिया का सेवन सामान्यतया प्रातःकाल के समय ही कराया जाता है।

सामान्यतया यह देखा जाता है कि पति के निधन के दुःख से कुछ स्त्रियाँ रुग्ण हो जाया करती हैं। यदि समय पर इस औषधि का सेवन करा दिया जाय तो उनको भविष्य में रोगग्रस्त होने से बचाया जा सकता है। प्रियजन का विछोह अथवा किसी प्रियजन का निधन होने के कारण मन में जो भय समा जाता है अथवा स्नायुमण्डल में जो दुर्बलता आ जाती है, उसके लिए यह औषधि अत्यन्त उत्तम सिद्ध होती है।

एक युवा कन्या जो कि हिस्टीरिया की रोगिणी बन गई थी, इगनेशिया २०० से उसकी चिकित्सा की गई। पारिवारिक इतिहास की जानकारी प्राप्त करने पर विदित हुआ कि कन्या की माता अत्यधिक रुग्ण रहा करती थी, कन्या सदा उसकी सेवा में लगी रहती थी। एक दिन वह अपनी माता के सिर पर तेल मालिश कर रही थी कि सहसा चीख पड़ी और बोली, "हाय ! मेरा गला घुट गया गला घुट गया !" इस प्रकार निराशा और चिन्ता से ग्रस्त वह बिस्तर पर जा लेटी। दो-तीन दिन तक अस्वस्थ रही। दुर्बलता इतनी हो गई कि उससे बोला भी नहीं जाता था। तीन दिन के बाद किसी प्रकार ठीक प्रकार से भोजन किया। टाँगों में दुर्बलता थी। उसके दूर होने पर किसी प्रकार सामान्य स्थिति में आई।

इसके बाद फिर उसको समय-समय पर दौरा पड़ने लगा। चिकित्सा आरम्भ की गई। अनेक आधुनिक चिकित्सा पद्धति के चिकित्सकों ने उसकी चिकित्सा की किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। समय बीतते-बीतते सप्ताह में दो बार दौरा पड़ने लग गया। उसके बाद वह होम्योपैथिक चिकित्सा की शरण में आई।

रोगिणी का पूर्ण इतिहास जानने के उपरान्त उसको इगनेशिया की रोगिणी समझा गया तदपि पुराना केस होने के कारण स्वयं मुझको इगनेशिया की सफलता पर उतना विश्वास नहीं था, क्योंकि प्रथम घटना से आभास होता था कि अपनी माता का रोगग्रस्त देखकर लड़की को दुःख हुआ था, इस कारण वह अपना मानसिक सन्तुलन बनाये नहीं रख सकी। अतः प्रथम लक्षणों के आधार पर उसको इगनेशिया देना ही उचित समझा गया और विचार किया गया कि यदि इससे लाभ न हुआ तो फिर किसी अन्य लक्षण पर अन्य औषधि का प्रयोग किया जायेगा।

रोगिणी को इगनेशिया-२०० की एक खुराक दी गई और देखा गया कि दस दिन तक उसको कोई दौरा नहीं पड़ा जब कि इससे पूर्व सप्ताह में दो बार दौरा पड़ा करता था।

इससे यही निष्कर्ष निकला कि युवतियाँ अथवा महिलायें यदि इस प्रकार रुग्ण हों अर्थात् उनका मानसिक सन्तुलन स्थिर न हो तो प्रथम इगनेशिया का प्रयोग लाभकारी होता है।

'क्षणे रुष्टा, क्षणे तुष्टा' अर्थात् एक क्षण में रूठ जाना और दूसरे क्षण प्रसन्न होना अनेक स्त्रियों का स्वभाव होता है। पुरुषों में भी अनेक ऐसे स्वभाव के होते हैं। उन सभी रोगियों के लिए यह औषधि सर्वोत्तम है।

कली ब्रोमेटम (Kali Bromatum) ३०, २००—जिस प्रकार हायोसायमस के रोगी को सन्देह बना रहता है कि उसको कोई विष न दे दे उसी प्रकार इसका रोगी भी ऐसी सम्भावना से भयभीत रहता है। किन्तु इसके विचार करने के ढंग में कुछ विलक्षणता होती है। उसको ऐसा आभास होता है कि दूसरे लोग उसके विरुद्ध षडयन्त्र कर रहे हैं। वह सोचता है कि परमात्मा के प्रकोप के कारण उसके साथ ऐसा व्यवहार किया जा रहा है। उसको लगता है कि उसकी उपेक्षा कर दी गई है। रात्रि के समय उसको भय लगता है। उसको (रेलिजियस डिप्रेशन) धार्मिक निराशा होती है। वह अनुभव करता है कि उसमें इतनी कमी आ गई है कि अब उसका बचना सम्भव नहीं है। परिणामस्वरूप उसकी चाल लड़खड़ा जाती है। उसको यह भी स्मरण नहीं रहता कि किस प्रकार बात करें। उसके हाथ और उँगलियाँ लगातार काँपती रहती हैं। उसके हाथों में अधीरता और चंचलता (Fidgety) होती है।

कली कार्ब (Kali Carb) ३० २००—इसके रोगी को शीघ्र ही डर लगने लगता है। न केवल छाया देखकर अपितु वह काल्पनिक वस्तु के आभास से भी चौंक उठता है। स्पर्श को वह सहन नहीं कर सकता। चमक उठता है। हल्का-सा छू देने पर विशेषतया उसके पाँव को छू दिया जाय तो वह चौंक उठता है। अकेला रहना उसको पसन्द नहीं होता। घर के लोग यदि उसको अकेला छोड़ दें यह उसको बिल्कुल सहन नहीं होता। इस प्रकार उसके मन में भय का यह स्पष्ट लक्षण प्रकट करता है। रात्रि का दो बजे से चार बजे के मध्य विशेष बेचैनी का समय होता है। अन्यान्य लक्षण भी इसी समय के मध्य में बढ़ते हैं।

कली फॉस (Kali Phos) २००, १०००—इस औषधि के लक्षण हैं घबराहट स्नायुओं की व्यग्रता तथा डर। ये इसके प्रमुख लक्षणों में माने जाते हैं। इसके रोगी को किसी अपरिचित व्यक्ति से बात करने में काफी

सकोच होता है। यहाँ तक कि उसके सामने जाने से भी वह डरता है। लज्जा और सकोच इसके लक्षण हैं। न केवल लडकियाँ अपितु लडके भी जो कि सकोची स्वभाव के अथवा लजीले होते हैं उनके लिए इसका सेवन उपयोगी होता है।

मस्तिष्क जल्दी श्रान्त हो जाय तो इसकी ऊँची शक्ति की एक खुराक देकर एक सप्ताह तक देखना चाहिए। सम्भावना तो यही है कि उससे ही लाभ हो जायेगा।

लिलियम टिग्रीनम (Lilium Tigrinum) ३०, २००—इसका रोगी बडा भयाक्रान्त रहता है। यह न केवल डरनेवाला अपितु रोनेवाला भी होता है। उसके प्रति कुछ भी क्यो न किया जाय वह उस सबसे उदासीन-सा रहता है। उसे सहसा रुलाई आती है जिसे रोकना उसके वश की बात नही होती।

अविवाहित महिलाओ के लिए यह उपयोगी औषधि है। गर्भाशय के लक्षणो में भी यह औषधि उत्तम होती है।

इस औषधि का रोगी व्यस्त रहना अधिक पसन्द करता है।

लाइकोपोडियम (Lycopodium) ३०, २००, १०००—इसका रोगी अकेले रहने पर भयभीत अनुभव करता है। तनिक-सी बात पर खीज उठता है। उसके आत्मविश्वास में कमी होती है। सुबह उठने पर उसपर उदासी छाई रहती है। प्रतिभाशाली होने पर भी शरीर से दुर्बल, विशेषतया शरीर का ऊपरी भाग पतला होता है। सब लक्षण सायकाल चार से आठ के मध्य विशेष रूप से परेशान करते हैं। शीघ्र ही क्रोधित हो जाना और बिना बात के ही झगडा मोल लेना इसका स्वभाव बन जाता है। बिना कारण रोगी अपना सिर हिलाता है। इन लक्षणो में यह औषधि उपयोगी है।

लाइसिन (Lyssin) ३०, २००—इस औषधि के रोगी का मुख्य लक्षण है पागल हो जाने का भय लगा रहना। इसके अतिरिक्त पानी को बहते हुए अथवा गिरते हुए अथवा पानी गिरने की आवाज सुनकर उसमे इसके लक्षण उभर आते हैं। उसे सूर्य की गरमी सहन नही होती। इस प्रकार के लक्षणो में यह औषधि उत्तम है।

नेट्रम कार्ब (Natrum Carb) ३०, २००—इसका रोगी बादलो की गडगडाहट अथवा वर्षा के कारण होनेवाली ध्वनि से डरता है बेचैन होता है। उसमे सोचने की शक्ति नही होती यह उसका बहुत कठिन लगता है। वह चिन्तातुर रहता है। सगीत को सहन नही कर सकता। इस प्रकार के रोगी के लिए यह औषधि सर्वोत्तम है।

नेट्रम म्यूर (Natrum Mur) २००, १०००—इस औषधि के लक्षण हैं डर जाना छोटी सी बात पर बिगड़ जाना, सहानुभूति मिलने पर रोना अथवा बिगड़ पड़ना, जरा जरा-सी बात पर भावुकता व्यक्त करना और उसके परिणामस्वरूप क्रोध के कारण दुःखी होकर अनेक अन्य लक्षणों का प्रकट होना। अच्छे खाते-पीते घर का व्यक्ति भी दुबला-पतला हो जाता है।

उक्त लक्षणों में यह औषधि अचूक सिद्ध होती है।

नेट्रम फॉस (Natrum Phos) ३०, २००—इस औषधि के रोगी का भय का विशेष लक्षण यह है कि वह सोया हो तो बराबर के कमरे में किसी के चलने अथवा पास रहने की आवाज-सी सुनता है जब कि वास्तव में ऐसा कुछ होता नहीं, यह केवल उसको भास होता है। उसकी जब आंख खुलती है तो कमरे में रखा फरनीचर उसको व्यक्तियों के रूप में दिखाई देता है। अँधेरे में कुछ क्षण तक उसकी ऐसी ही स्थिति रहती है। उसका सारा भय काल्पनिक होता है।

नक्स वोमिका (NuxVomica) २००—इस औषधि का रोगी शोर को सहन नहीं कर पाता। वह अधीर रहता है, झगड़ालू स्वभाव का होता है जल्दी भय सताने लगता है। शोर की ही भाँति तीव्र प्रकाश और गन्ध को भी सहन नहीं कर सकता।

ओपियम (Opium) ३०, २००—भय का प्रभाव इसके रोगी पर सदा रहता है। वह न तो अपने कष्ट को समझ सकता है और न प्रकट ही कर सकता है। जिस समय बोलता है तो उस समय उसकी आँखें चौड़ी हो जाती हैं। रोगी को बिस्तर इतना गरम अनुभव होता है कि उसके कारण वह सो नहीं पाता। कब्ज बहुत अधिक होती है और कई दिन तक मल नहीं निकलता। मलत्याग की इच्छा भी नहीं होती। गरमी में परेशानी का अनुभव करता है किन्तु ठण्डे पदार्थ से उसको आराम मिलता है। इस प्रकार के लक्षणों में यह औषधि उत्तम है।

पट्रोलियम (Petroleum) ३० २००—इसके भय के लक्षण विचित्र होते हैं। रोगी अनुभव करता है कि उसकी मृत्यु निकट है अतः उसको चाहिए कि अपने स्थगित कार्यों को वह शीघ्र ही सम्पन्न कर ले। मस्तिष्क की भावनाओं के कारण उसको कष्ट होता है। उसके मस्तिष्क में सदा भाँति-भाँति की अनर्गल एवं असंगत बातें चक्कर काटती रहती हैं। रोगी की दृष्टि भी क्षीण हो जाती है। सोते-सोते उसको यह अनुभव होता है कि कोई अन्य व्यक्ति उसके पास आकर सो गया है दोनों एक ही बिस्तर पर लेटे हुए हैं जब कि वास्तविकता यह नहीं होती। इन लक्षणों में यह औषधि

उपयोगी है।

फासफोरस (Phosphorus) ३०, २००—इसके रोगी के लक्षण हैं भय से चौंक उठना, उसको यह भय सताता रहता है कि कुछ न कुछ होने वाला है। उसका आभास होता है कि कमरे के हर कोने से कोई वस्तु रेंगती-सी निकलती जा रही है। थका-माँदा अनुभव करता है, अत्यधिक जोश आ जाता है, सब प्रकार से उत्तेजित वातावरण उत्पन्न करनेवाला होता है, बेचैन रहता है, सदा उदासी छाई रहती है।

सोरिनियम (Psorinum) २००, १०००, १०,०००—रोगी का सदा यह भय बना रहता है कि वह व्यापार में अथवा अपने कार्य में असफल हो जायगा और जल्दी मर जायेगा। इस प्रकार की बात सोचते सोचते जब उसकी मानसिक व्यथा पराकाष्ठा को पहुँच जाती है तो फिर वह अपने समीप के लोगों का जीवन भी असह्य बना देता है। ऐसे रोगियों के लिए यह औषधि फलदायी सिद्ध होती है।

रस टॉक्स(Rhus Tox)२००, १०००—रोगी को सदा यह भय लगा रहता है कि रात्रि के समय उसको कोई विष दे देगा और उसकी मृत्यु हो जायगी। इस कारण सोते हुए वह बेचैन रहता है और बार-बार करवट बदलता रहता है। उसके लिए बिस्तर में रहना भी कठिन हो जाता है। उसे चित्तभ्रम (डिलेरियम) जैसा रहता है। आत्महत्या के विचार भी आते रहते हैं। इस प्रकार के रोगी के लिए यह औषधि उत्तम है।

पल्सेटिला(Pulsatilla)२००, १०००—इस औषधि के लक्षण हैं कि रोगी शाम के समय अकेला रहने पर भय अनुभव करता है। अँधेरे में उसको भूत प्रेत की सम्भावना बनी रहती है और डर भी बना रहता है। उसके प्रति यदि कोई सहानुभूति व्यक्त करता है तो उसे अच्छा लगता है। जागने पर भय का अनुभव करता है। बहुत ही भावुक प्रकृति का होता है। ऐसे लक्षणों में इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

सिपिया (Sepia) २००—इसके लक्षणों में शाम होते ही रोगी को भय या चिन्ता सताने लगती है। अकेले में डरता रहता है। किसी काम में स्वयं को लगा नहीं पाता। जो लोग उससे अधिक स्नेह रखते हैं उनके प्रति वह स्वयं अधिक उदासीन रहता है विशेषतया महिलाओं में ऐसा व्यवहार पाया जाता है, वह स्वभाव से कंजूस और भयभीत रहनेवाली होती है, किसी भी बात को बहुत शीघ्र ही महसूस करने लगती है, मन मसोसकर रह जाना उसका स्वभाव हो जाता है। इस प्रकार के लक्षणों में यह औषधि फलकारक सिद्ध होती है।

स्पोंजिया टोस्टा (Spongia Tosta) ३०, २००—इसके रोगी को

चिंता और भय से खाँसी बढ़ जाया करती है। आधी रात्रि को अकस्मात भय का अनुभव करता है और नींद से जागकर चिंताग्रस्त हो जाता है, उस समय उसको घुटन अनुभव होती है, हृदय की धड़कन तेज होती है।

श्वास रोग का रोगी यदि भय और चिंता का अनुभव करे तो उसमें यह औषधि तुरंत लाभ करती है। उपरिवर्णित भय लक्षणों में भी इसका प्रयोग लाभकारी सिद्ध होता है।

स्टेनम (Stannum) ३०, २००—रोगी लोगों में मिलने से डरता है उदास रहता है और हर समय रोना चिल्लाना चाहता है किंतु यह रोना अथवा चिल्लाना उसको और अधिक दुःख देता है, दुर्बलता और घबराहट रहती है। जब रोगी सीढ़ियाँ उतर रहा हो उस समय उसकी घबराहट बढ़ जाया करती है।

इस प्रकार के रोगियों के लिए 'स्टेनम' का प्रयोग लाभकारी सिद्ध होता है।

स्ट्रैमोनियम (Stramhnium) ३० २००—रोगी को अँधेरे में और अकेले में डर लगा रहता है। उसको प्रकाश पसन्द है तथा वह सदा किसी न किसी के साथ रहना पसन्द करता है। बहता हुआ जल तथा चमकदार प्रकाश की चमक से वह अधीर हो उठता है और इससे उसको पीड़ा की अनुभूति होती है वह इनसे बचने का यत्न करता है। नींद से उठते ही पहले दिखाई देनेवाली वस्तु से उसको डर लगता है।

शेरो शायरी करना, गाना गुनगुनाना, हर समय बोलना प्रार्थना करना इसके विशेष लक्षण हैं।

ऊपर लिखे सभी लक्षणों में स्टेमोनियम का प्रयोग अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होता है।

सल्फर(Sulphur)३० २००—रोगी को जब कभी भी ठण्ड लगती है अथवा वह ठण्ड सी अनुभव करता है तो इस सम्भावना से भय लगने लगता है कि इससे उसको ज्वर होनेवाला है। यह इसका विशेष मानसिक लक्षण है।

इसका रोगी ठण्डे पानी से स्नान करने से डरता है। प्राय गन्दा रहता है। स्नान कर भी लेता स्वच्छता की उसको चिंता नहीं रहती केवल स्नान की औपचारिकता पूरी करता है। ऊँचे स्थानों पर जाने से डरता है। इन सब लक्षणों में इस औषधि का प्रयोग रोगी के लिए लाभकारी सिद्ध होता है।

सलफ्यूरिक एसिड (Sulphuric Acid) ३० २००—इसके रोगी के लक्षण हैं सदा भयभीत रहना और अधीर रहना प्रत्येक कार्य को शीघ्रता

से करना। यदि उससे कोई प्रश्न किया जाय तो उसका उत्तर देने के लिए उसका मन नहीं करता। सदा भयभीत रहता है।

इस प्रकार के लक्षण जिस व्यक्ति मे पाये जायँ, उसको गलफ्यूरिक एसिड का रोगी समझना चाहिए और उसके सेवन से उसका रोग दूर हो जाता है।

थूजा (Thuja) २००—इस के रोगी का भय विचित्र प्रकार का होता है। सगीत सुनने पर उसको कम्पन होता है और वह रोने लगता है। उसको सदा ऐसा आभास होता है कि उसके पेट मे कोई जीवित प्राणी पडा हुआ है। उसको यह भी आभास होता है कि अनजाने व्यक्ति उसके समीप खडे हैं उनसे वह भयभीत रहता है। इस प्रकार के लक्षणो मे थूजा का प्रयोग लाभकारी होता है।

जिंकम मेटलिकम (Zincum Metallicum) २००—इसके रोगी को यह डर सताता रहता है कि उसको कैद कर दिया जायेगा। उसको लगता है कि उसने कोई अपराध किया है। उसके मन मे काल्पनिक अपराध-भावना के कारण डर बना रहता है। उसे न तो शोर पसन्द होता है और न वह बात करना ही पसन्द करता है। रोगी यदि बच्चा हो तो वह प्रत्येक बात दोहरायेगा जो उसको कही गई है। रोगी भावुक प्रकृति का हो जाता है। काम करने मे उसका मन नहीं लगता। इन लक्षणो में इस औषधि का प्रयोग लाभकारी होता है।

भय के लक्षणो मे उपरिलिखित औषधियाँ मानसिक लक्षणो को दृष्टि मे रखते हुए चयन की गई है। अत उपयुक्त है कि इनका प्रयोग अधिकाशतया २०० या इससे अधिक शक्ति मे ही करना चाहिए। यदि रोग अधिक पुराना न हो तो ३० की शक्ति से भी उपचार आरम्भ किया जा सकता है। यदि रोग के ठीक होने मे प्रगति धीमी हो तो शनै शनै अधिक शक्ति की मात्रा का प्रयोग करना चाहिए। यदि प्रगति बिलकुल न हो तो उस अवस्था मे प्रयोग ही बडी शक्ति का करना चाहिए। रोग यदि पुराना हो तो औषधि का प्रयोग २०० शक्ति से आरम्भ कर हजार, दस हजार या लाख शक्ति की एक मात्रा देकर दो सप्ताह तक रोगी की प्रगति को ध्यान मे रखना चाहिए। ऐसे मे किसी प्रकार की जल्दी करना उचित नहीं होता।

स्वानुभव से स्टैमोनियम, एकोनाइट, सल्फर, स्पाजिया को बहुत उपयोगी पाया है। निम्नलिखित रूप मे इनका सफल प्रयोग किया गया है—

१ पहला रोगी—एक छ वर्ष का बच्चा गली मे खडा था। पास मे एक कुत्ता जोर से भौंकने लगा और फिर दूसरे कुत्ते से लड पडा। बच्चा

इससे डरकर काँपने लगा। माँ ने जब बच्चे की दशा देखी तो उसको पकड़ा और गोद में लेकर उसे शॉल में लपेटकर प्यार किया, किन्तु बच्चा फिर भी काँपता रहा। उसके बाद उसको तीव्र ज्वर चढ़ आया था।

उस बच्चे को एकोनाइट दो सौ की एक मात्रा दी गई। कँपकँपी तो पन्द्रह मिनट में कम हो गई। आधा घण्टे बाद उसकी दूसरी मात्रा दी गई। लगभग एक घण्टे में उसका कम्पन पूर्णतया बन्द हो गया। इसके बावजूद ज्वर बना रहा। अन्य कोई औषधि न देकर दो-दो घण्टे के अन्तर पर उसको एकोनाइट २०० की ही तीन मात्रायें दी गईं। प्रातःकाल तक बच्चे का ज्वर उतर गया और वह पूर्णतया स्वस्थ हो गया।

दूसरा रोगी—एक गर्भवती स्त्री कहीं घूमने के लिए गई हुई थी कि वहाँ भीड़ देखकर वह भयभीत हो गई। वह घर पहुँची तो उसको रक्तस्राव होने लगा था। इस अवस्था में उसका बेचैन होना स्वाभाविक था। पीड़ा तो बहुत थोड़ी थी किन्तु भय और बेचैनी बहुत अधिक अनुभव करती थी।

मुझे जब यह स्थिति बताई गई तो मैंने यही उचित समझा कि उसको एकोनाइट २०० की एक मात्रा दी जाय। एक मात्रा और देकर उसके घरवालों को कहा कि यह मात्रा आधा घण्टे बाद दे दी जाय। दो घण्टे बाद जब पता किया गया तो विदित हुआ कि रोगिणी सामान्य स्थिति में है। उसकी बेचैनी दूर हो गई थी और रक्तस्राव भी सर्वथा बन्द हो गया था।

रक्तस्राव होने से यह शंका होने लगी कि कहीं गर्भस्थिति पर किसी प्रकार का विपरीत प्रभाव न हुआ हो अतः दूसरे दिन उसका चैकअप किया। उससे विदित हुआ कि गर्भिणी और गर्भ दोनों सुरक्षित हैं। रोगिणी का विवरण सुनकर लेडी डॉक्टर ने उसको दो चार औषधियाँ लिख दीं किन्तु मैं इसकी कोई आवश्यकता नहीं समझता था वही परामर्श मैंने उनको दिया।

तीसरा रोगी—मैंने ऐसे बच्चों पर जो कि भयभीत रहते हों सूखी खाँसी के कारण जाग पड़ते हों अथवा जिनकी खाँसी की आवाज ही दिल को हिला देनेवाली हो स्पांजिया टोस्टा ३० २०० का प्रयोग किया जो कि बहुत सफल सिद्ध हुआ।

एक बार एक रोगी को आधी रात के समय हृदय की धड़कन के साथ खाँसी उठी। साँय-साँय की आवाज निकलती थी और बेचैनी तथा भय भी बहुत था। उसको स्पांजिया ३० की दो तीन मात्राओं से स्वास्थ्यलाभ हो गया।

चौथा रोगी—एक लड़के को अपना हाथ अपनी मूत्रेन्द्रिय पर रखने का स्वभाव बन गया था। उसे डर भी बहुत लगता था और वह शीघ्र आवेश

मे भी आ जाया करता था। उस पर स्ट्रेमोनियम ३० का कुछ दिन तक प्रयोग किया गया। उससे जब अधिक प्रगति नहीं हुई तो उसको २०० शक्ति की मात्रा दी गई। इससे उसका अतीन्द्रिय-स्पर्श बन्द हो गया और उसका भय भी भाग गया।

क्रोध

सामान्यतया तो किसी-न किसी मात्रा मे वातावरण के अनुरूप थोडा अथवा अधिक क्रोध प्रत्येक व्यक्ति को आता ही है किन्तु इसका अधिक आना एक प्रकार से रोग ही है। क्रोध स्वय मे सम्पूर्ण रोग भले ही न माना जाय किन्तु यह किसी रोगविशेष का मुख्य लक्षण अवश्य बनता है। आबाल-वृद्ध सभी नर नारियों को क्रोध आता है, किसी को कम तो किसी को अधिक भी। शास्त्रकारों ने इसको मानसिक विकार माना है। क्रोध का पाप की जड बताया गया है। अपराध का तो मूल क्रोध होता ही है।

कामना पूर्ण न होने पर क्रोध आता है। अत काम के उपरान्त क्रोध विकार का द्वितीय स्थान बताया गया है। कहा जाता है कि जिसने क्रोध को जीत लिया उसने ससार को जीत लिया।

होम्योपैथी में इसको मानसिक लक्षण माना गया है। इसके कारणो की गणना कर पाना सम्भव नही है। वे अगणित हैं। किन्तु फिर भी जो इसके मुख्य कारण हैं उनपर हमने इस पुस्तक के आरम्भ मे ही प्रकाश डाल दिया है। रक्त का प्रभाव, माता पिता से जो कुछ बीज और सस्कार-रूप म प्राप्त होता है वही मुख्य बात है। तदनतर शिक्षा, दीक्षा वातावरण, जलवायु, आहार सगति, स्वभाव और शरीर को घेरनेवाले रोग आदि मिलकर व्यक्ति के स्वभाव को क्रोधी बनाने मे सहायक होते हैं।

इसमे तो कोई सन्देह नही कि क्रोध का स्वास्थ्य और मन पर गहरा प्रभाव पडता है। जो व्यक्ति निरन्तर क्रोध करता रहता है उसम अनेक रोग प्रकट होने लगते हैं। क्रोध को यदि सवथा दूर न भी किया जाय तो अभ्यास से अथवा उचित प्रकार की चिकित्सा करने से उसकी मात्रा म कमी तो की ही जा सकती है जिससे कि वह व्यक्ति के जीवन को सवथा असफल बनाने का कारण न बन सके। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन मे

सफलता की आकांक्षा रखता ही है।

क्रोध के शमन के लिए जहाँ मानसिक अभ्यास नितान्त आवश्यक है वहाँ यदि होम्योपैथिक शक्तीकृत औषधियाँ लक्षणों की भली भाँति परख कर सेवन कराई जायें तो मनुष्य के क्रोधी स्वभाव में परिवर्तन लाया जा सकता है।

औषधि का चयन, व्यक्ति में क्रोध किस प्रकार उभरता है उसका कारण, उसके लक्षण और उसके प्रभाव, इस प्रकार पूर्ण लक्षणसमूह देखकर ही किया जाना चाहिए।

डाक्टर जेम्स टाइलर केण्ट और अन्य वैज्ञानिकों ने क्रोध आवेग, चिड़चिड़ापन तथा झगड़ालू स्वभाव को पृथक्-पृथक् लक्षण मानकर इनको क्रम में लिखा है। किन्तु हम इस अध्याय के अन्तर्गत उन सबको एक साथ समाविष्ट कर रहे हैं। स्थान-स्थान पर आवश्यकतानुसार लक्षणों की विवेचना कर दी गई है, तदपि मुख्य विषय तो एक ही है। अतएव विभिन्न लक्षणों पर भिन्न भिन्न औषधियों की सिफारिश की गई।

क्रोध मनुष्य का भीतरी शत्रु है। इसको नियन्त्रण में रखना नितान्त आवश्यक है, अन्यथा क्रोध के कारण अनेक रोग जन्म लेने लगते हैं।

लक्षणसमूह पर इस प्रकार औषधियों का चयन किया जाना चाहिए जिससे कि वह औषधि सफल सिद्ध हो सके तथा उससे क्रोधरूपी आन्तरिक शत्रु ऐसा शत्रु जो निरन्तर हमारी मानसिक, बौद्धिक तथा शारीरिक शक्तियों का ह्रास करता रहता है, उसका शमन किया जा सके।

मुख्य औषधियाँ—क्रोध शमन के लिए मुख्य औषधियाँ हैं—एकोनाइट, एम्बरा ग्रीशिया एनाकार्डियम एपिस मेलिफीका, अर्जेण्टम मेटैलिकम अर्जेण्टम नाइट्रिकम, अर्निका मॉण्ट आर्सेनिकम एलबम, ऑरम मेटैलिकम, ब्रेटा कार्ब बेलाडोना ब्रेटा म्यूर ब्रायोनिया, कल्केरिया कार्ब, कल्केरिया फास, कार्बो वेज कैमोमीला, चैलिडोनियम मेजस कॉफिया, कालासिन्थ कोनियम, कोकस स्टाइवा डल्कामारा फैरम फॉस ग्रेफाइटिस हीपर सलफर हायोसाइमस इग्निशिया आयोडम केलि कार्ब, केलि सल्फ, लैकेसिस लाइकोपोडियम, मसक्स म्यूरेटिक ऐसिड नेट्रम म्यूर, नेट्रम फास, नाइट्रिक ऐसिड नक्स वोमिका पेलेडियम, पट्रोलियम फासफारिक ऐसिड, फासफारस, सौरीनियम, पल्सेटिला, रस टाक्स सिपिया स्टैनम, साफेसगेरिया स्टेमोनियम सल्फर थूजा ब्रेटम एल्बम, साइलिशिया टणटुल्ला, जिंकम मेटेलिकम।

ये साठ औषधियाँ लगभग सभी क्रोध के लक्षणों की हैं। एक औषधि का चयन होम्योपैथी के सिद्धान्त के अनुसार लक्षणसमूह का जाँचकर

किया जाता है। विभिन्न अवस्थाओं में किसी भी एक लक्षण का रोगी पर विभिन्न प्रभाव हो सकता है। अत चिकित्सा करते समय स्पष्ट निदान की अत्यन्त आवश्यकता होती है। उसके लिए लक्षणसमूह अथवा किसी लक्षणविशेष पर ध्यान देना परमावश्यक है।

उदाहरणार्थ किसी व्यक्ति को किसी कारणवश क्रोध आ गया। इसके परिणामस्वरूप उसका सिर मे पीडा होने लगी। उसने बोलना बन्द कर दिया। उस व्यक्ति ने इस बात को मानापमान का प्रश्न बनाकर उस व्यक्ति से बोलना बन्द कर दिया और स्वय अकड गया। उसके लक्षण यही सकेत करते हैं कि वे 'स्टाफेसगेरिया' के लक्षणो के निकट हैं। अत उसको २०० शक्ति की एक मात्रा दे दी गई। सिरदर्द तो दूर हो गया किन्तु रोगी शान्त नही हो सका। उसमे एक अन्य लक्षण भी दिखाई दिया। वह पेट दबाकर बैठा था। स्टाफेसगेरिया के अनन्तर इस "सैंसेशन" पर 'कोलोसिन्थ' उपयोगी होती है। वह दी जानी चाहिए थी। उसके अभाव मे रोगी का न तो उदरशूल ठीक हुआ और न उसका मानसिक द्वन्द्व ही शान्त हुआ।

नीचे कुछ ओषधियों के लक्षणसमूहो पर विचार किया जा रहा है।

एकोनाइट-२००, १०००—क्रोधित रोगी जब बहुत ही बेचैन हो तब इस ओषधि की आवश्यकता पडती है। बेचैनी, भय और पीडा का वर्णन हम भय के प्रकरण मे विस्तार से कर आये हैं। यह ओषधि क्रोध के उन रोगियो पर सफल सिद्ध होती है जो भय के कारण पीडा से कराहते हुए किसी प्रियजन के प्रति क्रोधित हो उठें। किसी के पीछे कोई कुत्ता पड जाय और उसके काटे जाने के भय से त्रस्त होने पर जब वह व्यक्ति सामने उपस्थित किसी प्रियजन अथवा मित्र पर क्रोध करता है तो यह ओषधि उसके लिए सर्वोत्तम सिद्ध होती है।

भयभीत रोगी, चाहे वह किसी भी कारण से डरा अथवा सहमा हुआ क्यो न हो, माता पिता, मित्रो और सम्बन्धियो द्वारा सहानुभूति प्रकट करने अथवा रोगी से कारण पूछने पर यदि वह आवेश मे आ जाय तो समझना चाहिए कि ये लक्षण एकोनाइट के हैं। ऐसा रोगी बालक, वृद्ध अथवा युवा कैसा भी क्यो न हो, स्पर्श मात्र से क्रोधित हो उठता है। उसके लिए एकोनाइट ही सर्वोत्तम ओषधि है।

बच्चे ने अपना पाठ याद न किया हो अथवा स्कूल का काम न करने के कारण उसको स्कूल मे डाट पडी हो, उस अवस्था मे वह डरा-सहमा या लज्जित अनुभव करता हुआ घर पर पहुँचा हो और उसके मुख को देखकर यह आभास होता हो कि उसके साथ कुछ ऐसा-वैसा हुआ है तो उसस

उसके विषय में पूछने पर अथवा उससे सहानुभूति व्यक्त करने पर यदि वह क्रोधित स्वर में उत्तर देता है, 'कुछ नहीं हुआ, कह तो दिया कि कुछ नहीं हुआ।' तो समझना चाहिए कि यह उसके मौलिक क्रोध की अवस्था नहीं है अपितु यह किसी भय के कारण अथवा बेचैनी के कारण है या कि लज्जा के कारण है। जो बच्चा ढीठ और नालायक होता है वह तो अध्यापक की फटकार सुनकर अथवा उसके बेंत खाकर भी स्वाभाविक अवस्था में ही घर आता है, किन्तु भावुक प्रकृति का बालक इससे बेचैनी अनुभव करेगा।

इस प्रकार की अवस्था में एकोनाइट लाभ करता है।

एकोनाइट का रोगी बालक जब भीड़ से निकलता है, अथवा उसके पार जाता है तो उस समय उसको भय लगता है, वह बेचैन हो जाता है, वह धक्के खाने से डरता है। साथ में चलनेवाले को जब इसका ज्ञान हो जाय और वह उसको ताड़ना के स्वर में कहे कि 'डर क्यों रहा है? डरपोक कहीं का!' तो वह आवेश में आ जाता है और कभी-कभी रोने भी लगता है रूठ जाता है बेचैन अथवा क्रोधित भी हो सकता है। उसकी बेचैनी आदि को दूर करने के लिए एकोनाइट २०० की एक मात्रा पर्याप्त है। इसके प्रयोग से शनैः शनैः जहाँ एक ओर उसका भय कम होता जायगा वहाँ उसकी आवेश में आने की आदत और क्रोध के आवरण में अपने भय को छिपाने का स्वभाव दूर होगा और तब पूछने पर कहेगा, 'मुझे भीड़ में डर लगता है कौन जाय भीड़ में धक्के खाने को? इसमें क्या बुद्धिमत्ता है!'

जैसा कि पिछले अध्याय में हमने वर्णन किया है कि मृत्यु के भय से भयभीत एकोनाइट का रोगी बेचैनी के कारण क्रोध करता है आँखों और चेहरे से वह भयभीत प्रतीत होता है, वह चिल्लाकर कहता है 'मैं दो घण्टे में मर जाऊँगा अब मैं बच नहीं सकता।' इतना होने पर भी उसकी वाणी में किसी प्रकार की नम्रता या मिठास नहीं, अपितु कटुता ही होगी। यदि वह मीठा बोलने का यत्न भी करे तो अपने आक्रोश को छिपा नहीं सकेगा। ऐसे लक्षणसमूह जब हों तो सबसे प्रथम उसको एकोनाइट ही देना चाहिए। उससे यदि लाभ न हो फिर दूसरी औषधि के विषय में विचार करना चाहिए।

एम्ब्रा ग्रीसिया-(Ambra Grisea) २००, १०००—जो व्यक्ति अधिक शरमानेवाला हो, भय और क्रोध में आ जानेवाला हो, घबरा जाता हो उसकी यह औषधि है। इसका रोगी संगीत सुनकर उदासी अनुभव करता है। वह अपनी आयु से बड़ा दिखाई देता है तदपि उसकी बातचीत में स्थिरता नहीं होती। बात एक विषय में कर रहा होगा तो

तुरन्त किसी दूसरे विषय पर जा पहुँचेगा।

डॉ० कैण्ट ने इसके रोगी का सुन्दर चित्रण करते हुए लिखा है,—

"प्राय रोगी मुझसे एक प्रश्न करता है, मेरे तुरन्त उत्तर न देने पर वह दूसरा प्रश्न कर देता है और फिर तीसरा प्रश्न कर देता है, जब कि उसको तब तक न प्रथम प्रश्न का उत्तर मिला होता है और न द्वितीय का। उसके सोचने की शक्ति क्षीण हो जाती है। घबराहट के कारण वह एक के बाद एक प्रश्न करता हुआ अनेक विषयों पर प्रश्न करने लग जाता है। उसके प्रश्नों में परस्पर कोई ताल मेल भी नहीं होता। उस समय मेरे मस्तिष्क में 'गण्डा ग्रोसिया' का विचार आता है। यही उसके लिए उपयोगी है। धार्यात् ऐसे मानसिक रोगी का क्रोध भी संतुलित नहीं होता। वह अपनी अगली पिछली शिकायतें बताता हुआ आवेश में और कभी-कभी क्रोध में भी आ जाता है। वह बहुत अधिक क्रोधी हो जाता है।"

किसी साधारण रोग की अवस्था में यदि किसी बालक को कहा जाय कि वह डाक्टर के पास जाकर अपना निरीक्षण-परीक्षण कराये और वह बालक किसी भी मूल्य पर डॉक्टर के पास जाने के लिए उद्यत न हो, न केवल इतना अपितु उनके परामर्श को सुन वह उनपर क्रोध करने लगे, डॉक्टरी जाँच कराना उसको रुचिकर न हो, वह अपने माता पिता अथवा सत्परामर्श देनेवालों से लड़ झगड़ ले, किन्तु डॉक्टर के पास जाने को तैयार न हो निरीक्षण के सुझाव पर उसको अत्यधिक क्रोध आ जाय, यद्यपि वह अपने मन में यह अनुभव करता हो कि वह रुग्ण है। ऐसे व्यक्ति के लिए यह औषधि उत्तम है। प्रथम उसको २०० शक्ति की मात्रा देनी चाहिए। उसके बाद यदि आवश्यकता हो तो ट्यूबरक्युलिनियम १०० की भी एक मात्रा दे दी जाय। इसके उपरान्त न तो वह एक के बाद दूसरा और फिर तीसरा प्रश्न करेगा और न डॉक्टर के पास जाने में उसका कभी भय लगेगा।

एनाकार्डियम (Anacardium) २०० १०००, १०,०००—तनिक टोकने और उसकी बात को काटने पर जो भड़क उठता हो, विचित्र प्रकार का क्रोधी स्वभाव हो गम्भीर, बातों पर जो हँसता हो और उपहास की बातों पर जो गम्भीर बन जाता हो अथवा उसपर उसको क्रोध आ जाता हो, ऐसे रोगी को प्राय इस औषधि से लाभ होता है।

डॉक्टर कैण्ट और डॉक्टर नैश ने इस औषधि का चित्र कुछ इस प्रकार चित्रित किया है—

"इसका रोगी समझता है कि उसपर दो आत्माएँ नियन्त्रण कर रही हैं। उसको ऐसा लगता है कि उसके एक कन्धे पर 'शैतान' और दूसरे

कन्धे पर 'देवता' बैठा है। कभी तो वह इतना अच्छा बन जाता है कि उसको देखनेवाले चकित रह जाते हैं, और जब वह शैतान के आधीन होता है तो वह सब प्रकार का दुर्व्यवहार और लड़ाई झगड़ा करता है। उसकी इच्छाशक्ति उसके आधीन नहीं रहती। उसकी बुद्धि निश्चयात्मक नहीं होती। क्रोध के कारण वह दाँत किटकिटाता है। वह एक प्रकार से पागल सा हो जाता है।

'मस्तिष्क-सम्बन्धी काम करने पर उसके सिर में पीड़ा होती है। थकावट होने पर क्रोध में आवेशभरी बातें करता है। इस प्रकार के रोगी की स्मरणशक्ति भी बहुत शीघ्र क्षीण हो जाती है। स्मृति-दौर्बल्य में उपयुक्त लक्षण होने पर 'एनाकार्डियम' ही उसकी औषधि है।

रोगी आवेश में प्राय औरों को बुरा भला कहने तथा शाप देने की इच्छा करता है। वह शपथ भी लेता है। उसका बदलता हुआ स्वभाव कभी उसको शैतान तो कभी देवता बना देता है। वह व्यक्ति सर्वथा संयम रहित हो जाता है। चलने समय उसको बेचैनी होती है। बैठे रहने का जिन रोगियों का स्वभाव हो, आवेश आता हो, घबराहट होती हो, तो ऐसे लक्षणों में यह औषधि उत्तम है।

'क्रोधी स्वभाव के साथ यदि उक्त रोगी जल्दी जल्दी खाता-पीता हो और उसके लक्षण पेट खाली होने पर भड़क उठते हों अर्थात् कुछ खाने से वे शान्त हो जाते हों तो निश्चय ही उसको 'एनाकार्डियम' का रोगी मानना चाहिए। उसकी औषधि यही है भले ही एलोपैथिक चिकित्सक उसको किसी भी रोग का रोगी घोषित क्यों न कर दें।'

एपिस मेलिफिका (Apis Melifca) २०० १०००, १० ०००-- अत्यधिक चिड़चिड़े, थके-माँद रोगी, जो अत्यधिक कठिनाई से किसी बात का स्वीकार करते हों उनके लिए यह औषधि उत्तम है। महिलायें, विशेष तथा विधवा महिलायें बालक और बालिकायें जो साधारणतया ध्यान से अपना जीवन-यापन करते हैं किन्तु जब बिगड़ पड़ें तो ईर्ष्या और क्रोध की रागिणी बन जाती हैं। ईर्ष्या इसमें मुख्य कारण होती है।

किसी कारणवश जीवनपर्यन्त कुमारी रह जानेवाली महिलायें, विवाहित महिलाओं से ईर्ष्या करने लगती हैं। यद्यपि प्रत्यक्ष में उनके लक्षण उग्र नहीं होते, किन्तु मन ही मन वे कुढ़ती हैं और इसके परिणाम-स्वरूप उनके स्वभाव में कठोरता भी आ जाती है। क्रोध और आवेशयुक्त व्यवहार तथा अविवाहित जीवन में किसी प्रकार का अभाव स्वभाव को बिगाड़ देता है। ऐसी अविवाहिता रागिणी को सर्वप्रथम एपिस २०० पर रखना चाहिए।

यदि किसी पुरुष का इस प्रकार का स्वभाव हो तो उसके लिए 'कोनियम' उत्तम औषधि होती है।

ऐसे रोगी निरुत्साह होने पर भी चिल्लाने से रुक नही सकते। वे निराशा और क्रोध से घिरे रहते हैं। बच्चा यदि इस प्रकार का रोगी हो तो प्राय नींद मे चौंक उठता है।

इस प्रकार के रोगियो के लिए यह दवा उत्तम सिद्ध होती है।

अर्जेण्टम मेटलिकम (Atgentum Metallicunm) २०० १००० १० ००००—जो व्यक्ति लम्बा पतला और क्रोधी हो, जिसका विगत इतिहास यह बताता हो कि हस्तमैथुन की उसकी प्रकृति अथवा प्रवृत्ति रही है किसी साधारण सी बात पर उसके रक्त का दबाव सिर की ओर होने मे सहसा गरम हो जाता हो, इस प्रकार के व्यक्ति के लिए यह औषधि लाभकारी होती है। शुद्ध चाँदी से निर्मित होने से यह औषधि उस रोगी को शीतलता प्रदान करती है। जो व्यक्ति थोड़े से ही परिश्रम से थक जाता हो, जो अधिक मस्तिष्क-सम्बन्धी परिश्रम करता हो जैसे कि व्यापारी, विद्यार्थी, विचारक आदि ऐसे व्यक्ति जब अधिक सोचने और युक्ति करने मे असमर्थ हो जाएँ तो उनके लिए यह औषधि लाभकारी होती है।

मस्तिष्क की थकावट के कारण जिन व्यक्तियो को क्रोध आ जाता हो और वे दुर्बलता का भी अनुभव करते हो, अपनी वास्तविक आयु से इसके कारण अधिक आयु के दीखने लगें, उनको इस औषधि के सेवन से लाभ होता है। इससे उनके मस्तिष्क का सुधार होगा, स्मृतिदोष दूर होकर उनका जो उग्र स्वभाव हो गया है वह शात बन जायेगा और इसके साथ उनकी मस्तिष्क सम्बन्धी दुर्बलता दूर होगी, स्नायुओ को शक्ति प्राप्त होगी और स्फूर्ति आयगी।

लेटने पर टाँगो मे फाड़नेवाली पीड़ा अनुभव करने पर तथा क्रोध करने के उपरान्त थके रोगी के लिए इसका सेवन लाभकारी होता है। इसके प्रयोग से उस रोगी का पुन मस्तिष्क की शक्ति प्राप्त होती है और उसका मस्तिष्क का सन्तुलन स्थिर रहता है।

अर्जेण्टम नाइट्रिकम (Argentum Nitricum) २००, १०००—क्रोध के कारण छाती मे सुई चुभने की-सी पीड़ा अनुभव करना, क्रोध या किसी से विरोध होने पर बाहरी कम्पन होता हो, क्रोध भले ही साधारण हो किन्तु उसके बाद व्यक्ति दुर्बलता अनुभव करता हो, जिसका स्वभाव गरम हो, ऐसे रोगी के लिए यह महौषधि का काम करती है।

गरम स्वभाव से यहाँ पर हमारा अभिप्राय ऐसे व्यक्ति से है जिसको

कन्धे पर 'देवता' बैठा है। कभी तो वह इतना अच्छा बन जाता है कि उसको देखनेवाले चकित रह जाते हैं और जब वह शैतान के आधीन होता है तो वह सब प्रकार का दुर्व्यवहार और लडाई झगडा करता है। उसकी इच्छाशक्ति उसके आधीन नही रहती। उसकी बुद्धि निश्चयात्मक नही होती। क्रोध के कारण वह दाँत किटकिटाता है। वह एक प्रकार से पागल सा हो जाता है।

'मस्तिष्क-सम्बन्धी काय करने पर उसके सिर म पीडा होती है। थकावट होने पर क्रोध मे आवेशभरी बातें करता है। इस प्रकार के रोगी की स्मरणशक्ति भी बहुत शीघ्र क्षीण हो जाती है। स्मृति दौबल्य म उपर्युक्त लक्षण होने पर 'एनाकार्डियम' ही उसकी औषधि है।

"रोगी आवेश मे प्राय औरो को बुरा भला कहने तथा शाप देने की इच्छा करता है। वह शपथ भी लेता है। उसका बदलता हुआ स्वभाव कभी उसको शैतान तो कभी देवता बना देता है। वह व्यक्ति सवथा ग रहित हो जाता है। चलते समय उसको बेचैनी होती है। बैठे रह जिन रोगियो का स्वभाव हो आवेश आता हो, घबराहट होती हो लक्षणो म यह औषधि उत्तम है।

'क्रोधी स्वभाव के साथ यदि उक्त रोगी जल्दी जल्दी ग और उसके लक्षण पेट खाली होने पर भडक उठते हो, अथवा व शान्त हो जाते हो तो निश्चय ही उसको 'एनाकार्डियम' चाहिए। उसकी औषधि यही है भले ही ऐलोपैथिक किसी भी रोग का रोगी घोषित क्यो न कर दें।"

एपिस मेलिफिका (Apis Melifca) २००
अत्यधिक चिडचिडे थके मांदे रोगी, जो अत्यधि का स्वीकार करते हो उनके लिए यह औषधि तथा विधवा महिलायें बालक और बालिका अपना जीवन-यापन करते हैं किन्तु जब या रागिणी बन जाती हैं। ईर्ष्या स्वभाव मु

कारी पाया गया है।

आर्सेनिकम एल्बम (Aasenicum Album) २००, १०००—किसी कारण वश यदि किसी व्यक्ति को सहानुभूति देने का अवसर आ जाय और उसको इस अवसर पर सहानुभूति अथवा ढाढस के वचन कहे जायें और वह व्यक्ति क्रोधित हो जाय।

इसी प्रकार कोई बच्चा कभी एक और कभी दूसरी वस्तु की माँग करे और जब उसको वह वस्तु देने लगो तो लेने से इन्कार करे अथवा क्रोध दिखाये।

कोई श्वास का रोगी हो और किसी कारणवश जब कभी उसको क्रोध आ जाय तो उसके बाद दमे का दौरा पड़ने लगे।

इस प्रकार के क्रोध के जो रोगी होते हैं और क्रोध के बाद जो व्यक्ति श्वास खा बैठे, दमे का रोगी हो अथवा न हो किन्तु क्रोध करने के उपरान्त जिसको खाँसी उठती हो।

प्राय देखा गया है क्रोध में होने के कारण बच्चा बात का उत्तर नहीं देता।

कुछ क्रोधी स्वभाव के व्यक्ति ऐसे भी होते हैं जो सोचते हैं कि औषधि खान का कोई लाभ नहीं है।

जिस व्यक्ति को बेचैनी एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाय, बेचैनी के कारण कभी बैठ जाय और कभी लेट जाय, ठण्डा पसीना आए और भय लगता हो।

इस प्रकार के सभी लक्षणों मे आर्सेनिकम एल्बम का प्रयोग बहुत ही लाभकारी पाया गया है।

औरम मेटलिकम (Aurum Metallicum)—२००, १०००—जिस व्यक्ति को क्रोध मे कम्पन होता हो तथा प्रवृत्ति आत्मघातिनी एवं स्वयं का ही कोसनेवाली हो तथा जो व्यक्ति उसके सम्मुख नहीं हैं उनपर जिसको क्रोध आता हो, ऐसे व्यक्ति के लिए इस औषधि का प्रयोग अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होता है।

बैरेटा कार्ब (Baryta Carb)—२००, १०००—जो व्यक्ति मस्तिष्क और शारीरिक दृष्टि से दुर्बल हो, जो अपने निश्चय पर दृढ न रह पाता हो, जो कभी-कभी स्वयं पर भी विश्वास खो बैठता हो, जिसमें आत्मविश्वास की कमी हो तनिक सी बात पर जो व्यक्ति बच्चो की भाँति दुखी और क्रोधित हो जाता हो, बच्चो को खेलते देखकर अधीर हो क्रोध करने लगता हो, इस प्रकार के व्यक्ति के लिए बैरेटा कार्ब का प्रयोग नितान्त लाभकारी सिद्ध होता है।

गरमी का मौसम रुचिकर न हो गरम पदार्थों का सेवन रुचिकर न हो, अथवा ऐसे पदार्थों के सेवन से उसका किसी प्रकार की हानि होती हो शीतकाल मे भी जो शीत का अनुभव न करता हो, हर काय का जो शीघ्रता म करना चाहता हो अथवा यह समझने लग कि उसकी सूझ-बूझ सब व्यय सिद्ध होगी, भय और घबराहट होती हो, भय और क्रोध आता हो, चीनी और मीठे पदार्थों मे अधिक रुचि हो, चीनी से जल्दी पेट खराब हो जाता हो, घबराहट की अवस्था मे मानो खिडकी से कूदने का प्रवृत्ति हो, शीघ्र क्रोध आने के परिणामस्वरूप घबराहट हो जाती हो, सिरपीडा होती हो, दस्त लग जायें, खाँसी हो जाय, सिनेमा, विवाह अथवा मन्दिर आदि स्थानो पर जाने से पूर्व व्यक्ति का भय का-सा भास हो, घबराहट हो और उसके कारण उसको दस्त आदि लग जायें तो एसे लक्षणो मे यह औषधि उत्तम है। इसके सेवन से रोगी को लाभ होता है।

एण्टिम टाट (Antim Tart) २००—जिस व्यक्ति का किसी प्रकार का पेय अथवा साधारण जल भी देने लगें तो उसे क्रोध आ जाता हो, इसके कारण जो उलझन म पड जाता हो, यदि उससे सहानुभूति रखनेवाले कहे कि उसने दिनभर कुछ खाया नहीं है अत कुछ खा पी ले तो यह खाने पीने का विचार ही उसके स्वभाव को उग्र और तीव्र कर दे, जी मिचलाता हो, घृणा उत्पन्न होती हो, कष्ट बढ जाता हो, ये सब इस औषधि के विशेष लक्षण हैं।

ऐसे रोगी का एण्टिम टाट के सेवन के कराने से निश्चय ही लाभ होता है।

आर्निका मोंटाना (Arnica Montauna) २०० १०००—किसी प्रकार की चोट लगने के कारण जब किसी व्यक्ति म क्रोध की उत्पत्ति होती है तो उसको आर्निका मोंटाना का रोगी समझा जाता है। यदि किसी के मस्तिष्क मे कभी कोई गहरी चोट लगी हो तो उसके कारण भी मनुष्य का स्वभाव क्रोधी हो जाता है। जब उसका किसी प्रश्न का उत्तर देने के लिए विवश होना पडता है तो उसको क्रोध आ जाता है। यदि कोई उससे मिलने आये अथवा कोई उसका स्पश करे तो उसको भय सा लगता है। पीडा का यद्यपि सहन नहीं कर पाता तथापि कहता यही है कि उसको किसी प्रकार की पीडा नहीं है। एकान्तप्रिय होता है।

इसी प्रकार जब बच्चा बहुत अधिक रोष मे आता है रोता और जल्दी जल्दी खाँसी का दौरा पडता है, पूछने पर किसी प्रकार का उत्तर नहीं देता।

इस प्रकार के रोगियो पर आर्निका मोंटाना का प्रयोग नितान्त लाभ-

कारी पाया गया है।

आर्सेनिकम एल्बम(Aasenicum Album) २००, १०००—किसी कारण वश यदि किसी व्यक्ति को सहानुभूति देने का अवसर आ जाय और उसको इस अवसर पर सहानुभूति अथवा ढाढस के वचन कहे जायँ और वह व्यक्ति क्रोधित हो जाय।

इसी प्रकार कोई बच्चा कभी एक और कभी दूसरी वस्तु की माँग करे और जब उसको वह वस्तु देने लगो तो लेने से इकार करे अथवा क्रोध दिखाये।

कोई श्वास का रोगी हो और किसी कारणवश जब कभी उसको क्रोध आ जाय तो उसके बाद दमे का दौरा पड़ने लगे।

इस प्रकार के क्रोध के जो रोगी होते हैं और क्रोध के बाद जो व्यक्ति श्वास खो बैठे, दमे का रोगी हो अथवा न हो किन्तु क्रोध करने के उपरान्त जिसको खाँसी उठनी हो।

प्राय देखा गया है क्रोध में होने के कारण बच्चा बात का उत्तर नही देता।

कुछ क्रोधी स्वभाव के व्यक्ति ऐसे भी होते हैं जो सोचते है कि औषधि खाने का कोई लाभ नही है।

जिस व्यक्ति को बेचैनी एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाय, बेचैनी के कारण कभी बैठ जाय और कभी लेट जाय, ठण्डा पसीना आए और भय लगता हो।

इस प्रकार के सभी लक्षणों में आर्सेनिकम एल्बम का प्रयोग बहुत ही लाभकारी पाया गया है।

औरम मेटैलिकम (Aurum Metallicum)—२०० १०००—जिस व्यक्ति को क्रोध में कम्पन होता हो तथा प्रवत्ति आत्मघातिनी एव स्वय का ही कोसनेवाली हो तथा जो व्यक्ति उसके सम्मुख नही हैं उनपर जिसको क्रोध आता हो, ऐसे व्यक्ति के लिए इस औषधि का प्रयोग अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होता है।

बेरटा कार्ब (Baryta Carb)—२००, १०००—जो व्यक्ति मस्तिष्क और शारीरिक दृष्टि से दुबल हो, जो अपने निश्चय पर दृढ न रह पाता हो जो कभी-कभी स्वय पर भी विश्वास खो बैठता हो, जिसमें आत्मविश्वास की कमी हो तनिक-सी बात पर जो व्यक्ति बच्चो की भांति दु खी और क्रोधित हो जाता हो बच्चो को खेलते देखकर अधीर हो क्रोध करने लगता हो, इस प्रकार के व्यक्ति के लिए बेरटा कार्ब का प्रयोग नितान्त लाभकारी सिद्ध होता है।

बेलाडोना (Belladonna) २००, १०००—क्रोध करते समय जिस व्यक्ति का चेहरा लाल हो जाता हो जो डरावने आकार देखता हो, क्रोध मे आपे से बाहर होकर चिल्लाता हो, काटने की तथा वस्तुओं को ठोकरें मारने की प्रवृत्ति हो, फाडने की भी प्रवृत्ति हो, किसी को देखकर उससे बच निकलना चाहता हो और उससे बोलना पसन्द न करता हो, इस प्रकार के रोगी के लिए यह औषधि उत्तम है।

ऐसा व्यक्ति जब स्वस्थ अवस्था मे होता है तो वह बहुत भला होता है और आगन्तुकों का हृदय से स्वागत करता है। किन्तु तनिक सा भी शारीरिक कष्ट होने पर आवेश मे आ जाता है, क्रोध करने लगता है, भडकता है यदि शराब पी ले तो उसके प्रभाव से दूसरो की हत्या करने पर उतारू हो जाता है इस प्रकार उसका क्रोध चरम सीमा पर पहुँच जाता है। वह व्यक्ति क्रोध मे अपने दाँत किटकिटाता है। इन सब लक्षणों मे यह औषधि उत्तम पाई गई है।

बफो (Bufo) २००—जो व्यक्ति कितने ही आवेश मे होने पर भी किसी अन्य को देखने पर शान्त हो जाता हो, भीतर से वह भले ही शान्त न हो किन्तु किसी अन्य के सामने आते ही वह चिल्लाना तुरन्त बन्द कर देता हो सामान्यतया वह चिल्लाता हो और क्रोध म दाँतो से काटने की प्रवृत्तिवाला हो, इसके अतिरिक्त जिसको कोई गलत समझे तो उसपर उसको क्रोध आता हो ऐसी जिसमे विशेषता हो इन सभी प्रकार के रोगियो पर 'बफो' का बडा ही गुणकारी प्रभाव होता है।

बोरेक्स (Borax) २०० १०००—बादल की गर्जना पर जिसका चिडचिडापन बढ जाता हो अथवा बादल के गर्जन के अवसर पर जिसको भय लगता हो बन्दूक की आवाज अथवा टोकने समझाने पर जिसको क्रोध आता हो नीचे की ओर उतरने पर भय के कारण जिसका स्वेद आता हो, पहाड से नीचे उतरने के लिए जो किसी भी प्रकार तैयार न होता हो, जो बच्चा इस प्रकार के वातावरण मे अथवा ऐसी अवस्था मे चीखे चिल्लाये और विरोध कर इन सब लक्षणो मे बोरेक्स का प्रभाव बडा ही गुणकारी माना गया है।

ब्रायोनिया (Bryonia) २०० १०००—जो व्यक्ति अपनी बात कटने पर क्रोध करने लगे हर बात पर जिसको क्रोध आ जाता हो किसी के यहाँ ठहरे होने पर जिसकी इच्छा बार बार घर जाने की होती हो जो बहुत अधिक चिडचिडा हो श्रम के बाद जिसका मुख लाल या पीला दिखाई देता हो ये सब लक्षण 'ब्रायोनिया' के होते हैं। इन लक्षणो मे इसका प्रयोग लाभकारी है।

कक्टस ग्रैंडीफ्लोरस (Cactus Grandiflorus) ३०, २०० १०००—जिस व्यक्ति का हृदय रोग हो और उसका स्वभाव चिड़चिड़ा हो, उसके लिए यह औषधि उत्तम है।

रोगी ऐसा अनुभव करता है कि उसके हृदय को किसी सुदृढ़ लोहे के हाथ ने जकड़ रखा है।

रोगी को भयानक स्वप्न आते हैं और बाईं करवट लेटने पर कष्ट होता है। सदा मृत्यु का भय बना रहता है। इन लक्षणों के साथ साथ जिनका स्वभाव क्रोधी हो उन सबके लिए यह औषधि आरोग्यकारिणी सिद्ध होती है।

कोलोसिन्थ (Colocynth)३०, २००—पारिवारिक दुरवस्था अथवा इसी प्रकार के किसी अन्य कारण से जिसको क्रोध आता हो और उसके साथ ही पेट में अथवा मस्तिष्क में तीव्र शूल उठे तो सर्वप्रथम इस औषधि का प्रयोग करना चाहिए।

क्रोध करने पर शूल होना इस औषधि का विशेष लक्षण माना गया है।

कल्केरिया कार्ब (Calcarea Carb) २००, १०००—जिस व्यक्ति का स्वभाव हठीला हो, रोगी का शरीर फूला हुआ हो, मोटा ताजा हो किन्तु उसका रंग साफ हो, उसकी यदि क्रोध की प्रवृत्ति हो तो उसके लिए औषधि उत्तम है।

ऐसे रोगी के लक्षण सायंकाल के समय उग्र होते हैं।

क्रोध के उपरान्त यदि चक्कर आ जाय तो उसमें यह औषधि उत्तम गुणकारी सिद्ध होती है।

कल्केरिया फॉस (Calcarea Phos) २००, १०००, १०,०००—तनिक सा टोकने अथवा बात कटने पर जिसको क्रोध आ जाता हो, जो बालक दुबला-पतला हो और सदा कहीं-न-कहीं बाहर जाने की इच्छा रखता हो, इस प्रकार के रोगियों में 'कल्केरिया फास' का प्रयोग बड़ा गुणकारी सिद्ध होता है।

कैन्थरिस (Cantheris) २००,१०००—क्रोध या आवेश आने पर जिस व्यक्ति की बेचैनी समाप्त हो जाती हो, जो मेज पर रखी वस्तु को यों ही धकेल देता हो, अथवा फेंक देता हो (सामान्यतया बालकों का ऐसा स्वभाव होता है) जिसका विचित्र प्रकार का क्रोधी स्वभाव हो जो गम्भीर बात पर हँस देता हो और हँसनेवाली बात पर जो गम्भीर हो जाता हो, ऐसे व्यक्तियों पर यदि 'कैन्थरिस' का प्रयोग किया जाय तो उससे लाभ होता है।

कैप्सीकम (Capcicum) ३०, २००—जिस व्यक्ति का स्वभाव अत्यधिक चिड़चिड़ा हो, जो तनिक सी बात पर क्रोधित हो जाता हो यद्यपि छोटी-सी बात पर जो आधित और रुष्ट भी हो जाता हो, जो तनिक-सा भी ठण्ड या आभा न सहन कर सकता हो, जिसको हर बार मलत्याग के उपरान्त प्यास लगती हो और पानी पीने के उपरान्त जिसको कंपकंपी आती हो मलत्याग करते समय जिसको मिर्चों की-सी जलन होती हो और इन लक्षणों के साथ जिसमें सजीवनी शक्ति की दुर्बलता भी हो, जिनका रक्त शीतल हो इस प्रकार के रोगियों के क्रोध को शान्त करने के लिए 'कैप्सीकम' का प्रयोग बड़ा ही लाभकारी सिद्ध होता है।

कार्बोनियम सल्फरेटम (Carboneum Sulphuratum) २००—जो व्यक्ति चिड़चिड़ा हो चिन्तातुर रहता हो, जिसमें मानसिक जड़ता हो, जिसकी मन स्थिति अस्थिर हो, उदासी के साथ जिसका रोष भी रहता हो, जिसमें शक्ति की कमी हो, इस प्रकार के लक्षणों के साथ जिसमें क्रोध की प्रवृत्ति हो उसके लिए यह औषधि सर्वोत्तम है।

कास्टिकम (Causticum) २००—जो बालक अपने बिस्तर पर अकेले सोना अथवा जाना न चाहता हो जरा-सी बात पर जो चीखने पर एक प्रकार से विवश सा हो जाता हो जो उदास रहता हो, जो व्यक्ति दूसरे के कष्ट में उसके प्रति बड़ी सहानुभूति रखता हो, इस प्रकार के लक्षणों में इस औषधि का प्रयोग करना उत्तम है।

कैमोमिला (Chamomilla) २००,१०००—जो बच्चा अत्यधिक क्रोधी स्वभाव का हो झुंझलाने तथा खीजनेवाला हो उठाने पर शान्त हो जाता हो जो अधीर हो कभी कुछ तो कभी कुछ मांगता हो उसके मन की न करने पर क्रोध करता हो उस समय जो स्वयं को दयनीय समझता हो यह समझे कि जो वह चाहता है उसे पा नहीं रहा है ऐसे समय में यदि उसको वह वस्तु दे भी दी जाय तो वह लेने से इन्कार कर देता हो, सहानुभूति प्रकट करने पर क्रोध करने लगता हो डाक्टर को देखकर आवेश में आ जाता हो, और कहता हो कि उसको डाक्टर नहीं चाहिए उसने नहीं बुलाया।

इसी प्रकार जो महिला मासिक धर्म के दिनों में अपने क्रोध पर नियन्त्रण न रख पाती हो। क्रोध के कारण रक्तस्राव अधिक हो जाता हो।

क्रोध के कारण जब किसी को पित्त का ज्वर आ जाता हो, जिसकी मांसपेशियाँ ऐंठने लगती हों क्रोध के बाद जिसका मुख पीला हो जाता हो क्रोध के कारण जिसको पसीना आ जाता हो।

सिर में भी पीड़ा होती हो और जिस स्त्री की जरायु में पीड़ा होती

हो, इत्यादि लक्षणो मे यह औषधि उत्तम होती है।

जिसके क्रोध की कोई सीमा न हो, उसके लिए यह औषधि रामबाण सिद्ध होती है।

चाइना (China) ३०,२००—बात काटने पर जिस व्यक्ति को क्रोध आ जाता हो, जिस रोगी का रक्त बह गया हो, अतिसार के कारण दुर्बलता आ जाने जिसको क्रोध आता हो तो उसको सर्वप्रथम यह औषधि दी जानी चाहिए।

जो व्यक्ति क्रोधी होने के अतिरिक्त उदासीन हो और आज्ञापालन करने से जो कतराता हो, जो दूसरो की भावनाओ को ठेस पहुँचाता हो, जिसके मन को बहुत से विचार घेरे रहते हो, जिसको जीने की सर्वथा इच्छा न हो, फिर भी आत्महत्या करने का साहस न कर पाता हो।

जिसकी निद्रा बहुत जल्दी खुल जाती हो और जो बहुत ही दुबला हो गया हो।

इस प्रकार के सभी लक्षणो मे 'चाइना' का सर्वप्रथम प्रयोग किया जाना उत्तम होता है।

चाइना क्रोध की उत्तम औषधि होने के साथ निरापद भी मानी जाती है।

चिनीनम आर्सेनीकोसम (Chininum Arsenicosum) ३०,२०० —थका मांदा, अति क्रोधी, चिन्तातुर सिर भारी, चक्कर, ऊपर देखने पर कष्ट का बढना, हाथ पैर ठण्डे, इन लक्षणो से युक्त क्रोधी मनुष्य के लिए यह औषधि सर्वोत्तम है।

सिना (Cina) ३०,२००—जो बालक अत्यधिक हठी, चिडचिडा नाक मे उँगली डालनेवाला, उछलने-कूदने तथा दाँत किटकिटानेवाला, क्रोधी बालक-बालिकायें जिनके पेट मे कृमि होते हैं, ऐसे बच्चो के क्रोध को शान्त करने के लिए यह महान् औषधि है। जिस व्यक्ति के क्रोध मे हाथ-पाँव फूलने लगते हैं जो बच्चा तकिये पर अपनी नाक रगडता है जो नीद मे डर जाता है जो बच्चा रोने चिल्लानेवाला तथा चिडचिडा है उन सबके लिए यह औषधि रामबाण सिद्ध होती है।

कॉकूलस इण्डीकस (Cocculus Indicus) २००, १०००— जिस व्यक्ति के मन पर शीघ्र ही और तनिक सी बात पर ही आघात पहुचता हो, जो व्यक्ति तनिक सा भी विरोध सहन न कर सकता हो शीघ्रता से बोलनेवाले क्रोधी व्यक्ति के लिए तथा ज्वर आने पर चक्कर आने और दूसरो के स्वास्थ्य के विषय मे चिन्ता करनेवाले व्यक्ति के लिए यह औषधि उत्तम है।

कोका (Coca) २००—जो व्यक्ति उदास हो, लजीला हो, समाज में आवेश में आने का स्वभाव हो, जो एकान्त में सुख और प्रसन्नता का अनुभव करता हो, थक जाने पर उदास हो जाता हो, ऐसे क्रोधी व्यक्ति के लिए यह औषधि उत्तम है।

कोनियम मॅकुलेटम (Conium Maculatum)—जो व्यक्ति डाँट डपट सहन न करे, जो विरोध न सहन कर सकता हो, किसी भी कारण से आवेश होने पर अत्यधिक मानसिक उदासीनता अनुभव करता हो जो भीरु स्वभाव का हो, मिलना जुलना पसन्द न करनेवाला किन्तु अकेले रहने में भी जिसको डर लगता हो, पढ़ाई अथवा काम में जिसकी रुचि न होती हो, करवट बदलने तथा लेटने पर सिर में चक्कर आता हो, क्रोध के बाद जिसको दस्त लगते हो, दूसरे लोगों की आवाजों पर जिसको क्रोध आ जाता हो, इन लक्षणोंवाले व्यक्ति के लिए यह औषधि लाभकारी होती है।

क्रोकस सटाइवा (Crocus Sativa) २००,१०००—जो व्यक्ति क्रोध करने के तुरन्त बाद पश्चात्ताप करता हो, अति प्रसन्न स्वभाव का, स्नेहिल स्वभाव का, प्रत्येक को प्यार करनेवाला, चूमनेवाला, किन्तु क्षणभर में आवेश में आनेवाला और फिर उसके बाद पश्चात्ताप करनेवाला, ऐसे व्यक्ति के लिए यह औषधि अत्यन्त लाभकारी है।

इस औषधि का मुख्य अंश नृत्य के भर होता है। इसका रोगी साहित्यिक परिश्रम करने पर उत्साहित रहता है, सुख का अनुभव करता है, उसमें शीघ्र परिवर्तन हो—प्रसन्नता से क्रोध, आवेश और फिर पश्चात्ताप।

इस प्रकार के लक्षण जिस व्यक्ति में पाये जायें, उनके लिए यह औषधि अत्यन्त लाभकारी होती है।

क्यूप्रम मेटलिकम (Cuprum Metallicum) २००,१०००—जिस व्यक्ति को क्रोध में पसीना आ जाता हो, स्वभाव से क्रोधी हो किन्तु जिसका मस्तिष्क दुबल हो, उसके लिए यह औषधि उत्तम है।

जिस व्यक्ति के मुख में तांबे जैसा स्वाद हो जो मुह की लार के साथ बहता हो, जिसका स्वभाव सनकी हो, जो व्यक्ति उन्मादी हो, काटनेवाला हो, मारनेवाला हो, वस्तुओं को नष्ट करनेवाला अथवा फाड़नेवाला हो, ऐसे लक्षणोंवाले रोगी के लिए यह औषधि उत्तम मानी गई है।

साइक्लामन (Cyclamen) २००—जो व्यक्ति दुष्टप्रकृति का हो, क्रोधी हो, रोनेवाला हो, एकान्तवासी हो, जिसको खुली हवा रुचिकर न हो, दुःख और भय से जो रुग्ण हो जाता हो, किसी प्रकार का बुरा काम करने पर अथवा अपना कर्तव्यपालन न करने की अवस्था में जो व्यक्ति अस्वस्थता अनुभव करता हो, इस प्रकार के सभी लक्षणों में यह औषधि

उत्तम है।

फरम मेटलिकम (Ferrum Metallicum) २००, १०००—जिस व्यक्ति को तनिक-सा भी शोर सहन न होता हो, यहाँ तक कि कागज़ की खड़खड़ाहट भी जिसको सहन न हो पाती हो, उसकी किसी भी बात का विरोध होने पर जो व्यक्ति आवेश में आ जाता हो, इस प्रकार के व्यक्ति के लिए यह औषधि सर्वोत्तम है।

फरम फॉस (Ferrum Phos) २०० १०००—जिस व्यक्ति को अत्यधिक क्रोध आता हो क्रोध के उपरान्त जिसके सिर मे पीडा हो जाती हो, दुर्बलता आ जाती हो, कम्पन होता हो, पसीना आता हो, घबराहट होती हो चिन्ता रहती हो, जिस व्यक्ति मे रक्त की कमी हो, जिसका मुख पीला हो, अस्थायी रूप म जो अपना मुख लाल कर लेता हो, ऐसे लक्षणो मे यह औषधि उत्तम है।

इसके लक्षणोवाला व्यक्ति अधिक बोलनेवाला होता है, क्रोध मे वह चुपचाप नही रह सकता। सायकाल के समय ऐसा व्यक्ति अधिक आवेश मे आ जाता है। इस प्रकार के लक्षणो से युक्त व्यक्ति के लिए यह औषधि उत्तम है।

जलसिमियम (Gelsemium) २००—स्नायु दुर्बलता के कारण जिस व्यक्ति को क्रोध आ जाता हो, जडता हो, घबराहट हो जिसम साहस का अभाव हो, हाथ-पैर और जीभ काँपते हो चुप रहना जिसको रुचिकर हो, गरमी के कारण उपरिलिखित लक्षण उभर पडते हो, गरमी के मौसम मे शरीर-कम्पन की स्थिति हो इन सब मे यह औषधि उत्तम है।

ग्रेफाइटिस (Graphites) २००, १०००—इसके लक्षणोवाले व्यक्ति का स्वभाव बडा विचित्र होता है। वह व्यक्ति गम्भीर बातो पर हँस पडता है और हँसीवाली बातो अथवा घटना पर गम्भीर हो जाता है। जो व्यक्ति मोटा होता है अथवा पहले कभी मोटा रह चुका हो और अब पतला हो गया हो इस प्रकार के सभी लक्षणो म यह औषधि लाभकारी है।

हेलोनियस (Helonias) २००—तनिक सी बात पर टोकाटोकी करने पर या विरोध करने पर जो व्यक्ति चिढ जाता हो, उसके लिए यह औषधि उत्तम है।

जो व्यक्ति निरन्तर व्यस्त रहे अथवा मस्तिष्क सम्बन्धी कार्य करने मे सुख का अनुभव करता हो, उसके लिए इस औषधि का प्रयोग लाभकारी होता है।

हीपर सल्फर (Hepar Sulphur) २००, १०००—जिस व्यक्ति को साधारण सी बात पर क्रोध आ जाता हो, जो अकस्मात भडक उठता हो,

मद्यपान करने के उपरान्त जोश में आकर तोड़ फोड़ करनेवाला अथवा चोट करनेवाला अथवा हत्या करने के लिए उद्यत हो जानेवाला, अत्यधिक क्रोध आने पर किसी की भी हत्या करने का यत्न करनेवाला, जिससे समीप से देखनेवाले को लगे कि मानो छुरा घोंपनेवाला है, इस प्रकार के लक्षणों वाले व्यक्ति के लिए यह औषधि उत्तम है।

नाई किसी की शेव करते समय उस पर यदि क्रोधित हो जाय तो इस प्रकार के आवेश में आता है कि उस्तरे से उस व्यक्ति का गला काटकर रख दे, बड़ी कठिनाई से उसका संयम रखना पड़ता हो। इस प्रकार के व्यक्ति के लिए यह औषधि उत्तम है।

हायोसाइमस (Hyoscyamus) २०० १०००—जो व्यक्ति तीव्र क्रोध आने के बाद लोगों की हत्या करने की इच्छा अथवा यत्न करना चाहे, क्रोध की स्थिति में लोगों पर थूकने के लिए उद्यत, क्रोध में दाँत किट किटानेवाला, अत्यधिक आवेश में आनेवाला, काटने, ठोकर मारने, थूकने का जिसका स्वभाव हो जो भी आसपास हो उनसे इस प्रकार का व्यवहार करता हो बहुत अधिक वाचाल हो ऐसा प्रतीत हो कि किसी पैशाचिक शक्ति ने उसके मस्तिष्क पर अधिकार कर लिया हो और उसने उसकी कार्य पद्धति को रोक रखा हो, जो व्यक्ति स्वयं को नग्न करने वाला हो लज्जाजनक हाव भाव प्रदर्शित करता हो चरित्रहीनता का चित्र प्रस्तुत करता हो इन लक्षणों के क्रोधी व्यक्ति के लिए इस औषधि का प्रयोग लाभकारी होता है।

इपिकाक (Ipecac) २०० १०००—जिसका स्वभाव चिड़चिड़ा हो जो शीघ्र ही आवेश में आ जाता हो, प्रत्येक बात को विरोधी भावना से देखता हो इच्छाओं से भरा हुआ हो उसके लिए यह औषधि उत्तम है।

जो व्यक्ति बेचैन रहता हो हर शिकायत के साथ जिसका जी मिचलाता हो प्रायः इस प्रकार होता हो तो ऐसे क्रोधी रोगी के लिए इस औषधि का उपयोग लाभकारी सिद्ध होता है।

कलीकार्ब (Kali Carb) २००,१०००—जो व्यक्ति सन्देहशील हो क्रोधी हो अपने परिवार के व्यक्तियों से लड़नेवाला हो, जो अकेला रहना पसन्द न करता हो, मृत्यु का भय रहता हो, भूत प्रेत का भय रहता हो, जिसका स्वभाव बहुत चिड़चिड़ा हो जो कभी शान्त न रह पाता हो जो अपने पेट में बेचैनी अनुभव करता हो, जो कभी चुप और सन्तुष्ट न हो पाता हो, जो हठी हो, क्रोधी हो, जिसके बाल अत्यधिक शुष्क रहते हों, उबासियाँ लेते समय जिसके सिर में पीड़ा होती हो, जो व्यक्ति उसके सम्मुख नहीं है उसके प्रति रोष प्रकट करता हो, बार-बार जो अपना मूड बदलता

हो, इन लक्षणा से युक्त व्यक्ति के लिए इस ओषधि का प्रयोग लाभकारी होता है।

कली आयोड (Kali Iod) २००—जिसका स्वभाव तीखा हो, जो चिड़चिड़ा हो, सिर म बोझ का अनुभव करता हो, थपेडे लगने का आभास होता हो, गरमी लगती हो उसके लिए यह ओषधि उत्तम है।

जिस व्यक्ति का प्राय जुकाम रहता हो, तनिक से ऋतु परिवर्तन से जिसका जुकाम हो जाता हो, जो आग को सहन न कर सकता हो, जिसका स्वभाव भी गरम हो, ऋतु-परिवर्तन से जो परेशान होता हो जिसका पेट खराब रहता हो, सुस्त स्वभाव का हो, यकृत भी दुर्बल हो, इस प्रकार के लक्षणो वाले रोगी के लिए यह ओषधि उत्तम होती है।

कली फॉस (Kali Phos) २००, १०००—जिस व्यक्ति का तनिक-सी बात पर क्रोध आ जाता हो, बेचैन रहता हो, घबरानेवाला हो थका-मांदा, तनिक-से परिश्रम से थक जानेवाला हो जो व्यक्ति चिड़चिड़ा हो उसके लिए यह विशेष ओषधि मानी गई है।

जिस व्यक्ति का थोडा-सा भी काम बहुत बडा प्रतीत होता हो, जो बालक-बालिकायें शर्मीले हो, दूसरे के समीप जाने पर लज्जा का अनुभव करते हो, जब ऐसे व्यक्ति को क्रोध आता है तो वह इतने आवेश मे आ जाता है कि वह ठीक प्रकार से बोल भी नही सकता और न किसी प्रकार की कोई बात ही स्पष्ट कर पाता है। ऐसे व्यक्ति के लिए इस ओषधि का सेवन लाभकारी होता है।

कैलीसल्फ (Kali Sulph) २००, १००—जो व्यक्ति शीघ्र क्रोधित हो जाता हो तथा हठी हो और अत्यन्त रोष प्रकट करनेवाला हो, जो किसी दूर की बात अथवा घटना पर विचार करता रहता हो शाम को बिस्तर पर या उठने पर बेचैनी अनुभव करता हो, काम मे जिसका मन न लगता हो जिसमे सगति पसन्द न हो जिसका ध्यान केन्द्रित न हो पाता हो तथा जिसम आत्मविश्वास की कमी हो, उसके लिए यह ओषधि उत्तम मानी गई है।

लकेसिस (Lachesis) २००, १०००—जो व्यक्ति ईर्ष्यालु तथा क्रोधी हो, ससार मे किसी से मिलने-जुलने की इच्छा न रखता हो, जो बेचैन और विक्षुब्ध रहता हो, प्रात काल उठने पर जो उदास रहता हो, सन्देहशील स्वभाव का हो, ऐसे व्यक्तियो के लिए 'लैकेसिस' सर्वोत्तम ओषधि है।

जिस व्यक्ति को रात के समय मस्तिष्क का परिश्रम अच्छा लगता हो, जिसे आग का भ्रम होता हो, जिसमें प्रतिकार की भावना हो, उसके

लिए भी इस औषधि का प्रयोग लाभकारी होता है।

लिलियम टिग (Lilium Tig) २००, १०००—जिन महिलाओं के जरायु दोष के कारण उनका स्वभाव क्रोधी हो गया हो, उनके लिए यह औषधि परम उपयोगी सिद्ध होती है।

मधुर बात करने पर भी जो स्त्री भड़क उठती हो, झगड़ा करती हो, सान्त्वना देने पर क्रोधित हो जाय, इतनी क्रोधी और चिड़चिड़ी कि उसके मित्र-सम्बन्धी उसको शान्त करने में असमर्थ रहें और उसे संतुष्ट न कर पायें मस्तिष्क में गलत और अयुक्तियुक्त विचार रहते हों, जिसको मनाना कठिन हो जिसकी अपनी ही समस्याएँ उसको कष्ट देती हों, ऐसी महिला के लिए इस औषधि का उपयोग लाभकारी होता है।

लाइकोपोडियम (Lycopodium) २००, १०००—जो व्यक्ति बहुत भावुक होने के साथ-साथ हठी, दुराग्रही, झगड़ालू और झगड़ालू प्रकृति के हों, तनिक-सी बात पर जिसको क्रोध आ जाता हो, क्रोध में आने पर दाँत पीसनेवाला, विचित्र स्वभाव का, हँसने की बात पर गम्भीर होनेवाला और गम्भीर बात पर हँसनेवाला कभी रुष्ट अथवा नाराज होने पर भी रुष्टता व्यक्त न करनेवाला, जो व्यक्ति सम्मुख नहीं है उस पर भी क्रोध करनेवाला, क्रोध में सिर पीड़ा पसीना आना और काँपना आदि लक्षणों पर यह औषधि उत्तम होती है।

नट्रम म्यूर (Natrum Mur) २००, १०००, १० ०००—सहानुभूति प्रकट करने पर जो अधिक भड़क उठता हो, जल्दबाजी करनेवाला, तनिक सी बात पर बिगड़ पड़नेवाला एकान्त में जाकर रोने चिल्लाने की इच्छा करनेवाला एक ओर रोना तो एक हँसना उत्तर देने पर विवश किये जाने पर क्रोधित होना क्रोध के बाद हिस्टीरिया का दौरा आ जाना टाँगों का पक्षाघात स्त्री हो तो मासिक धर्म का आरम्भ हो जाना आदि लक्षण जिस रोगी अथवा रोगिणी में पाये जायें उसके लिए इस औषधि का प्रयोग लाभकारी होता है।

तनिक बोलने पर आवेश में आनेवाला, बच्चा हो तो वह रोना आरम्भ कर दे यदि उसकी बात को बीच में रोका-टोका जाय अथवा उस पर किसी प्रकार का आक्षेप किया जाय अथवा डाँट दिया जाय (बच्चा विचार करता है कि वह उस काम को भली भाँति कर सकता है वह जानता है कि उसको क्या करना है किन्तु अपने माता पिता अथवा किसी शुभचिन्तक के मना करने पर बुरा मान जाता है। बच्चा मनमानी करना पसन्द करता है। टोकने पर वह बिगड़ जाता है)।

इस प्रकार के स्वभाववाले बालक अथवा हठी और क्रोधी रोगियों को

नेट्रम म्यूर-२०० पर्याप्त समय तक सप्ताह में एक बार सेवन करवाना चाहिये, शक्तिक्रम धीरे-धीरे बढाते जाना चाहिए। यदि उपरिलिखित के साथ साथ वह व्यक्ति अधिक नमक खाने की इच्छा करता हो अथवा खाता हो तो उसके लिए तो यह औषधि रामबाण सिद्ध होती है। १००० शक्ति की एक मात्रा देकर दो सप्ताह तक सब लक्षणो की परीक्षा करनी चाहिए।

नट्रम फॉस (Natrum Phos) २००, १०००—जिस व्यक्ति के लिए क्रोध को रोकना अति कठिन हो और यदि क्रोध को रोक भी ले तो फिर बोलने मे असमर्थ हो जाता हो, नीद का उड जाना और काम करने की शक्ति न रहना साधारणतया ऐसा व्यक्ति वायुरोग से भी परेशान होता है—खट्टे डकार आना, गैस बनना प्रात काल के समय शरीर में जडता का भाम होना, ऐसे समय मे इस औषधि का प्रयोग निरन्तर करते रहने से रोगी को लाभ होता है।

२०० शक्ति की मात्रा कुछ दिन तक निरन्तर लेनी चाहिए।

नाइट्रिक ऐसिड (Nitric Acid) २००, १०००—जिस व्यक्ति को अपनी ही भूल पर क्रोध आता हो, ऐसे लक्षणोवाले के लिए यह औषधि सर्वोत्तम है।

प्रतिकार की भावना, क्रोधी स्वभाव, हठी, चिडचिडापन, क्षमा मांगने पर भी शान्त न होनेवाला आदि आदि लक्षणो से युक्त व्यक्ति के लिए यह औषधि उत्तम मानी गई है।

नक्स वोमिका (Nux Vomica) २०० १०००—जो व्यक्ति किसी प्रकार का हस्तक्षेप पसन्द न करता हो तनिक सा विरोध करने पर जिसको क्रोध आ जाता हो, यदि कुछ पूछा जाय तो मौन रहता हो, यदि उत्तर देने पर विवश किया जाय तो लाल पीला हो जाता हो, जरा-जरा-सी बात पर बार बार क्रोध आना, यदि स्त्री हो तो ऋतुकाल में सयम खो बैठती हो और क्रोधित हो जाती हो।

ऐसे लक्षणोवाले व्यक्ति के मस्तिष्क मे गडबडी श्वास का रुकना प्रात काल के समय उल्टी और ठण्ड, क्रोध करने के बाद इन लक्षणो का उभरना अथवा कभी-कभी इस प्रकार दस्त भी लग जाना और उसके साथ ज्वर होना।

बार-बार क्रोधित होने पर पीलिया होने की सम्भावना होना, पेट के लक्षणो के साथ भी क्रोध की यह औषधि उत्तम है।

क्रोध का जब दौरा पड चुका हो उसके बाद दाँत मे पीडा हो तो नक्स वोमिका की ३० अथवा २०० शक्तिक्रम की मात्रा देने से पीडा शान्त हो

जाती है।

उक्त लक्षणवाले व्यक्ति को उदासी तो होती ही है किन्तु कभी कभी टाँगो का पक्षघात भी होने की सम्भावना हो जाया करती है। ऐसे सब रोगियो अथवा व्यक्तियो के लिए इस औषधि का प्रयोग लाभकारी होता है।

पलाडियम (Palladium) २००, १०००—तनिक-सी बात पर कष्ट का अनुभव और किसी भी बात को महसूस करना, रानवाली मुद्रा बनाये रखना अभिमान होना, तीखे शब्दो का प्रयोग करना, सगति म बैठने पर प्रसन्न दिखाई देना परन्तु उसके बाद थका मादा दिखाई देना, जो महिलायें अपनी धुन की पक्की हो और क्रोधी हो, उन सबके लिए इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

पट्रोलियम (Petroleum) २००—दिमागी कष्ट से सन्तुलन खो बैठना क्रोधित अवस्था मे रोगी का गलियो मे अपने माग से भटक जाना जल्दी रुष्ट और क्रोधित होनेवाला रोगी जो अपने मन म समझता है मृत्यु सन्निकट है और उसे सब बातें शीघ्र तय कर देनी चाहिएँ, इन लक्षणो के आधार पर इस दवा का प्रयोग लाभकारी है।

प्लेटीना (Platina) २०० १०००—जो महिला गर्वीली, हठी और स्वय को बहुत कुछ समझने वाली हो, गुस्ताख हो दूसरो के प्रति घृणा की भावनावाली हो तनिक सी बात पर खीझ जाती हो दूसरो को हानि पहुँचाने अथवा मार देने की भावना जिसमे तीव्र हो ऐसी भावना कि जिस पर नियन्त्रण न किया जा सके अन्य महिलाओ को अपने से निम्नस्तर की समझनेवाली हो क्रोधी हो ऐसी महिला के लिए यह औषधि रामबाण सिद्ध होती है।

मासिक धम के दब जाने से दिमागी लक्षणो का उभरना, मासिक स्राव काले रग का और छिछडावाला होता है और जिसम रक्त के काले थक्के होते है, जब कभी कभी अनुभव होती हो स्त्री अपनी दोनो टाँगो को एक दूसरे से दूर रखकर सोती हो, इन सब लक्षणवाली महिला के लिए यह सर्वोत्तम औषधि है।

पल्सेटिला (Pulsatilla) २०० १०००—ऐसी महिला जो तनिक-सी बात पर ही अपमान का अनुभव करती हो और क्रोध करने लगती हो, आँखो म आँसू उमड आते हो, क्रोध के बाद सर्दी अनुभव होती हो, प्यास न लगती हो मध्याह्न के समय अथवा शाम को नीद आती हो, सहानुभूति के शब्दो से जिसे सान्त्वना प्राप्त होती हो, शाम के समय अकेले म जिसे डर लगता हो, विपरीत लिंग के घटक अर्थात् स्त्री हो तो पुरुष से और पुरुष

हो तो स्त्री के प्रति उदासीनता का भाव अथवा भय सा लगना, जो स्त्री अत्यधिक भावुक हो इस प्रकार के लक्षणोंवाले रोगी के लिए यह औषधि उत्तम मानी गई है, विशेषतया स्त्री रागिणी के लिए तो यह रामबाण ही सिद्ध होती है।

रननक्यूलस बलबोसस (Ranunculus Bulbosus) २००, १०००— जिस व्यक्ति का स्वभाव चिड़चिड़ा हो, आँखों और सिर में जिसके पीड़ा रहती हो, खोपड़ी में जिसको कुछ रेंगने की-सी अनुभूति होती, माथे में दर्द हो, क्रोध करने के बाद उदासी छा जाती हो, ऐसे रोगी के लिए इस औषधि का प्रयोग गुणकारी होता है।

रस टाक्स (Rhus Tox) २००, १०००—क्रोध करने के बाद जिसको सिरपीड़ा होती हो, बार-बार करवट बदलने का स्वभाव हो, रात के समय बिस्तर में बेचैनी हो, स्वप्न में भी झगड़े के दृश्य देखता हो, व्यक्ति को इस बात का डर रहता हो कि उसे विष देकर मार दिया जायेगा इस प्रकार के लक्षण जिस व्यक्ति में पाये जायें उसके लिए इस औषधि का प्रयोग उत्तम माना गया है।

सेनिक्युला (Sanicula) ३०, २००—बच्चा हठ करता हो, चिल्लाता हो, चिड़चिड़ा हो पलभर में क्रोध करता हो और पल-भर में हँसता हो, इस प्रकार जिसके लक्षण बदलते रहते हो प्यास थोड़ी-थोड़ी और बार-बार लगती हो, पानी पेट में पहुँचते ही जो उल्टी कर देता हो जिसे नीचे की ओर आने में कठिनाई होती हो और डर लगता हो, जिसे अधिक कब्ज रहती हो, मलत्याग की जिसकी इच्छा ही न होती हो, जो बालक विशेष रूप से क्रोधी हो और चिड़चिड़ा हो, इस प्रकार के लक्षणों के लिए इस औषधि का प्रयोग लाभकारी होता है।

सिपिया (Sepia) २००, १०००—यह औषधि सामान्यतया महिलाओं की औषधि मानी गई है। किन्तु यदि पुरुष में भी इसके लक्षण पाये जाते हों तो उसके लिए भी यह उतनी ही गुणकारी सिद्ध होती है।

जो क्रोधित महिला अपने लक्षण बताते समय रो पड़ती हो—यह इसका विशेष लक्षण है जिनसे अधिक प्रेम है उनके प्रति उदासीन रहती हो, अपने परिवारवालों से विरोध प्रकट करती हो, काम में मन नहीं लगता हो, सन्ध्या के समय जो अधिक बेचैन हो जाती हो, जो अधिक उदास रहती हो और रोती रहती हो, इस प्रकार के यदि लक्षण पाये जायें तो उसके लिए इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

जिस रोगिणी को जरायु के रोग घेरे रहते हो, जो चिड़चिड़े और क्रोधी स्वभाव की महिला हो, जिसके पीछे गर्भ सम्बन्धी लक्षण हो, उनके

लिए यह औषधि लाभकारी होती है।

साइलिसिया (Sillicea) २००, १०००—जिस बालक के क्रोध की पृष्ठभूमि में परिवार में यक्ष्मा का इतिहास हो, यदि उस परिवार के किसी सदस्य को यक्ष्मा हो चुका हो तो लक्षणों के आधार पर परीक्षण करके इस औषधि का प्रयोग किया जा सकता है। यह औषधि क्रोध में सहायक होगी।

व्यक्ति जब क्रोध आने पर किसी को मारने के लिए उद्यत हो जाता हो तो उसे अपने-आपको रोकने के लिए अधिक समय की आवश्यकता होती हो, शीघ्र घबरा जानेवाला जिद्दी, क्रोधी रोगी, जिसके पैरों के पसीने में दुर्गन्ध आती हो, चित्त की स्थिरता न हो, इस प्रकार के रोगियों के लिए यह औषधि उत्तम है।

स्पोंजिया टोस्टा (Spongia Tosta) २००—रोगी जब भी आवेश में आए तो उसकी खाँसी बढ़ जाती हो, चिन्ता तथा भय रहता हो ऐसे लक्षणों पर इस औषधि का प्रयोग लाभकारी होता है।

स्टाफीसगेरिया (Staphysagaria) २००, १०००—जिस बालक की ओर ध्यान से देखने पर वह नाराज हो जाय, जिसे अन्याय होने पर अधिक रोष आ जाता हो, तिरस्कार पाने पर भी जिसको रोष आ जाता हो, जो दूसरों पर ही नहीं अनेक बार स्वयं पर भी क्रोध करता हो, क्रोध में जो मौन हो जाता हो, सिर में पीड़ा उठने लगना अथवा पेट में शूल उठना, मस्तिष्क में ववण्डर उठना हो, तिरस्कार होने पर मेज पर रखी वस्तुओं को इधर उधर धकेलना, क्रोध में कांपना और सर्वथा थका हुआ अनुभव करना, आवाज के साथ साथ नींद का भी लुप्त हो जाना, कार्य करने की शक्ति का लुप्त होना, अनिसार हो जाना, बच्चे का एक अथवा दूसरी वस्तु मांगना तथा क्रोधित हो जाना, अपनी नाराजगी को प्रकट न कर मन-ही मन में रखना।

रोगी को बार बार पेशाब की हाजत होना और ऐसा कई दिन तक चलते रहना, उस अवस्था में भीतर ही भीतर क्रोध को पिये रहना, क्रोध और आवेश का दौरा पड़ना आदि आदि।

जिन क्रोधी व्यक्तियों का मन स्त्री-सहवास की ओर अधिक जाता है अथवा प्रतिक्षण जिनका ध्यान यौन सम्बन्धी बातों की ओर ही जाता है, उन पर इस औषधि का प्रयोग कर चिकित्सक को अद्भुत सफलता प्राप्त हो सकती है।

स्वानुभव की बात है कि एक बार दो मित्र परस्पर इतने क्रोध में आ गये कि एक-दूसरे को खूब गाली गलौज देने लगे और फिर दोनों रुष्ट हो बैठ गये। एक मित्र उनमें से बेचैन होकर मौन हो गया। उसको सिगरेट

पीने की लत थी, वह अपने अपमान को कई दिनों तक भूल ही नहीं पाया। यद्यपि वह बहुत ही बातूनी व्यक्ति था किन्तु तिरस्कार के कारण मौन रहने लगा।

उस व्यक्ति को स्टाफीसगेरिया की १००० शक्ति की एक मात्रा दी गई तो वह दो चार दिन में ही स्वस्थ हो गया।

औषधि देते समय उसको यह नहीं कहा गया था कि उसके मौन की यह औषधि है, उसको कहा गया था कि इस औषधि के प्रयोग से उसके सिगरट पीने की लत छूट जायेगी। औषधि का परिणाम यह हुआ कि न केवल वह स्वयं स्वस्थ और शांत हो गया अपितु सुझाव देने पर वह अपने दूसरे साथी से पुनः मित्रता करने के लिए उद्यत हो गया और इस प्रकार वे पुनः पूर्ववत् मित्र बन गये।

जिस व्यक्ति को क्रोध के बाद उदासी छाती हो अथवा दिमागी थकावट अनुभव करता हो, निरन्तर क्रोध के दौरे पड़ते रहने पर दिमागी दोष भी आ जाय, आदि आदि लक्षणों में इस औषधि का प्रयोग सर्वोत्तम सिद्ध होता है।

स्ट्रेमोनियम (Stramonium) २००, १०००—जो व्यक्ति बहुत ही क्रोध वाला, आंधी-तूफान की भांति तीव्र क्रोधी हो, जिसका अनर्गल प्रलाप कभी बन्द न होता हो, उत्तेजनापूर्ण अहिंसा के बाद लोगों की हत्या करने का प्रयास करने की प्रवृत्ति हो, क्रोध में आसपास के लोगों को जो काट खाने को उछल पड़े जिसके रक्त का संचार सिर को चढ़ जाता हो रह रहकर थूकता हो, अंधेरा और अकेलापन पसन्द न करता हो, जो सदा प्रकाश और संगति की इच्छा करता हो, क्षण-क्षण में परिवर्तनशील स्वभाव का हो प्रसन्नता से तुरन्त क्रोध में परिणत होनेवाला स्वभाव हो, बार-बार अपने सिर को तकिये से उठाने का स्वभाव हो, आँखें चौड़ी और खुली रहती हो, जिसे छोटी वस्तुयें बड़ी दिखाई देती हों, इस प्रकार के लक्षणोंवाले रोगी के लिए यह सर्वोत्तम औषधि मानी गई है।

सल्फर (Sulphur) २००, १०००—स्टाफीसगेरिया और नाइट्रिक ऐसिड के लक्षणों की ही भाँति जिसको अपनी गलती अथवा भूल पर क्रोध आता हो विचार करना जिसको कठिन हो जाता हो जो अधिक भुलक्कड़ हो जिसको स्नान पसन्द नहीं हो, जो फटे चीथड़ों को ही सुन्दर वस्त्र समझता हो जो अत्यधिक स्वार्थी हो, दूसरों के प्रति जिसमें किसी प्रकार की आदरभावना न हो सदा क्रोध में रहनेवाला, अत्यधिक आलसी जो उठने में भी आलस करता हो, दुबला पतला उदास और दुर्बल व्यक्ति किन्तु जिसको भूख अच्छी लगती हो, अधेड़ आयु का व्यक्ति होने पर भी जिसके

स्वभाव मे बचपना हो, दोपहर मे समय जिसके पेट मे खालीपन का आभास होता हो, जिससे भूख सहन न होती हो इस प्रकार के लक्षण जिस रोगी मे पाये जाते हो उन सबके लिए यह औषधि उत्तम मानी गई है।

टयूक्रियम मेरम (Teucrium Marum) २००, १००—नाको की आवाजो पर जिसका क्रोध आता हो जिसका जल्दी ही जाग आ जाता हो, कम्पन, माथे मे पीडा, सूघने की शक्ति की जिसमे कमी हो ये सब इसके लक्षण हैं। इन लक्षणो पर इस औषधि का प्रयोग अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होता है।

थाइरियोडीनम (Thyriodinum) २००, १०००—जो तनिक-से विरोध पर क्रोधित हो जाता हो, छोटी छोटी अथवा साधारण बात पर भी अधिक आवेश आ जाता हो, पागलपन सा छा जाता हो, आक्रोश की प्रवृत्ति हो जिसमे क्रमश बदल बदलकर लडना और बेचैनी हो जाती हो, इस प्रकार के लक्षण जिस व्यक्ति मे हो उसको इस औषधि का सेवन कराने से लाभ होता है।

टयूबरक्यूलिनम (Tuberculinum) २००—जिसका अकस्मात् क्रोध भडक उठता हो उदास रहता हो, लडने की प्रवृत्ति हो क्रोध आने पर दूसरे पर कोई भी वस्तु फेंकने मे किसी प्रकार की हिचकिचाहट का अनुभव न करता हो भले ही उस क्रोध का कोई विशेष कारण भी न हो क्रोध के बाद दुबलता अनुभव करना, उदास निराश, क्रोध मे अट शट बकना शपथ लेने की प्रवृत्ति और दूसरे को कोसना कुत्ते से बहुत डर लगता हो, स्त्री-सम्भोग के बाद जिसको बहुत क्रोध आता हो, इस प्रकार के लक्षणो मे इस औषधि का प्रयोग लाभकारी होता है।

जिंकम मेटलिकम (Zincum Metallicum) २००—तनिक सा भी उकसाने पर जो आवेग म आ जाता हो जिसका स्नायुमण्डल दुबल हो, जिसकी स्मृति भी दुबल हो काम करने मे जी न लगता हो जो आराम से बैठ न सकता हो जो हर समय पाव हिलाता रहता हो, कुछ खाते समय जो कुछ स्वस्थता अनुभव करता हो, स्नायुमण्डल के इन लक्षणो मे यह उत्तम औषधि मानी गई है।

क्रोध वास्तव मे चित्त का आवे...) है ...
करता है अथवा जिसके विरुद्ध अ...
जाता है उसको यह बहुत दु खो क...
भी क्रोध करना पड जाता है। पि...
भाई बहिन के प्रति, पति पत्नी के प्र...
सी नोक झोक तो स्वाभाविक होती है

और थोडी-थाडी देर बाद अथवा छोटी-सी बात पर मन को सन्तोष हान लग तो इसको रोग मानना चाहिये।

मानसिक दुबलता ही नही अपितु यह मानसिक लक्षण है जा यदि निरन्तर बना रहा तो उससे न केवल मन, बुद्धि और स्नायु ही दुबल हाग अपितु इसस अनेक सक्रामक राग उत्पन्न होन की सम्भावना होती है। रक्तचाप सामान्य नही रहता, हृदय की धडकन, पक्षाघात, उन्माद आदि रोग हो जाते हैं।

क्रोध म मनुष्य की तकशक्ति अथवा युक्ति करने की सामथ्य लुप्त हो जाती है। अत मानसिक शक्ति को बनाये रखने के लिए यदि मस्तिष्क शीतल रह तो व्यक्ति रोगों से भी बचा रह पायेगा। मस्तिष्क-सम्बन्धी रोगो से लेकर व्यक्ति के पुराने रोग की पष्ठभूमि मे ईर्ष्या तथा क्रोधी स्वभाव का इतिहास हो सकता है। अत उपरिलिखित ओषधियो मे से सम लक्षणोवाली ओषधि का चयन करके क्रोध का नियन्त्रण म रखने का प्रयास करना चाहिए। क्रोध मनुष्य का बहुत बडा शत्रु है, इस बात को सदा ध्यान म रखना आवश्यक है।

अपने क्रोध को दूर रखकर ईश्वरप्रदत्त शान्ति का बनाये रखिये। यह चेतावनी है, अन्यथा क्रोध करने से कोई भी इस धरती पर शान्ति से नही रह सकता। इस सुन्दर पाठ को सदा स्मरण रखना चाहिए और ज्यो ही अनुभव हो कि कुछ इस प्रकार के लक्षण उभर रहे हैं तो तुरन्त उनके अवरोध के लिए सम लक्षणोवाली ओषधि का चयन कर उसका प्रयोग कर लेना चाहिए। इस प्रकार न केवल स्वय स्वस्थ रह सकेंगे अपितु अपने घर तथा पास पडोसवालो का भी स्वस्थ रहने म सहायक सिद्ध हाग।

घबराहट स्नायु-दौर्बल्य

इस परिच्छेद मे स्नायु दौबल्य से प्रभावित व्यक्तियो अथवा रोगियो के विषय मे वणन किया जाएगा। ये ऐसे व्यक्ति होते हैं जिनकी स्नायुओ अर्थात शिराओ मे तुरन्त प्रतिक्रिया हाती है। कोई साधारण सी घटना भी ऐसे व्यक्तियो को दु खी कर देती है। उनमे घबराहट, बचैनी होने लगती है। कभी कभी वे अपना सन्तुलन भी खो देते हैं। यह लक्षण चिन्ता

जनक होता है। इसका यदि समय पर निदान और चिकित्सा न की गई तो यह मन स्थिति आयुपर्यन्त व्यक्ति को दुखी करती है। इससे रक्त का शोषण होता है। उसका परिणाम यह होता है कि जो व्यक्ति सम्पन्न घर का हो, अच्छा खाने-पीनेवाला हो, तो भी उसके मुख पर दीप्ति नही अपितु पीलापन ही दिखाई देगा। वह दुर्बलता का अनुभव करता है। इतना ही नही, अपितु स्नायु दौर्बल्य वह व्याधि है जो मनुष्य की सभी असफलताओ की जननी सिद्ध होती है।

स्नायु-दुर्बलता का बीजारोपण प्राणी जब गर्भावस्था मे ही होता है तभी हो जाता है। यदि गर्भिणी को स्वस्थ और प्रसन्न रखनेवाला वातावरण न मिले वह भयभीत उदास और चिन्तित रहे तो उसके परिणामस्वरूप गर्भस्थ शिशु पर उसका विपरीत प्रभाव पडता है। गर्भिणी को सदा यही यत्न करना चाहिए कि वह सदा शान्त प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहे। उसके परिजनो का भी इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि गर्भिणी को किसी प्रकार कष्ट और दुख तथा खेद न हो न ही उसकी भावनाओ को किसी प्रकार की ठेस पहुचे। मादक पदार्थों का सेवन तो इस स्थिति मे किया ही नही जाना चाहिए। गर्भिणी के सम्मुख किसी दुघटना का वणन भी सोच समझकर ही किया जाना चाहिए और दुघटनास्थल पर तो गर्भिणी महिला को जाना ही नही चाहिए। इसी प्रकार न तो गर्भिणी को कभी कोई भयानक चित्र देखना चाहिए और न ही क्रोध क्षोभ आदि के वातावरण मे रहना चाहिए। गर्भिणी के सम्मुख रोना धोना भी हानिकर होता है।

इसके विपरीत गर्भिणी महिला को ऐसे वातावरण मे रखना चाहिए अथवा उसको स्वय रहने का यत्न करना चाहिए जो आनन्ददायक हो प्रसन्नता का प्रसारक हो और सुख का सूचक हो। उसके जीवन मे सदा रस भरने का यत्न किया जाना चाहिए। उसके भोजन की विशेष व्यवस्था होनी चाहिए। फल, मेवे तथा दूध आदि सात्त्विक भोजन लाभकारी होता है। सब्जियो का अधिक प्रयोग अच्छा होता है। बातचीत और रहन सहन मे भी उसी प्रकार का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए। गर्भिणी के चारो ओर का वातावरण शान्त सौम्य और सात्त्विक ही होना चाहिए। यह सब गर्भस्थ शिशु पर अच्छे सस्कार डालने मे सहायक होता है। कामातुर तथा क्रोधकारक वातावरण आनेवाले प्राणी के जीवन मे विष घोलने मे सहायक होता है।

होमियोपैथिक औषधियाँ अनेक लक्षणो मे सहायक होती हैं। तदपि गर्भ के सस्कार इतने सुदृढ होते हैं कि उनकी विद्यमानता मे केवल औषधि

से समस्या का समाधान कर पाना सरल नहीं होता। औषधि अन्धे की लाठी तो बन सकती है किन्तु आँखें नहीं। आँखों की ज्योति सामान्य बनाये रखने के लिए तो आरम्भ से ही ध्यान दिया जाना आवश्यक है। तदपि सब-कुछ हो जाने पर भी मनुष्य को कभी निराश नहीं होना चाहिए। आशा पर ही मनुष्य जीवित रह सकता है। यही स्थिति रोगी की भी है।

यहाँ पर उन औषधियों का उल्लेख किया जा रहा है जो लक्षणानुसार यदि उचित रीति से चयन की गई तो कठिन-से-कठिन रोग पर भी नियन्त्रण किया जा सकता है। स्नायु-दौर्बल्य में विभिन्न लक्षणों के आधार पर जिन मुख्य औषधियों का प्रयोग किया जाता है वे निम्न हैं—

एकोनाइट, आर्सेनिकम एल्बम, एसिड फॉस, एमिटिक एसिड, बोरेक्स, ऐलूमीना, एम्ब्रा ग्रीशिया, एमोनिया कार्ब एनाकार्डियम आर्निका मान्ट, अर्जेन्टम मेटेलिकम, एवना सटाइवा अपटीसिया, ब्रेटा कार्ब, ब्रेटा म्यूर, बेंजिम एसिड बोविस्टा, ब्रायोनिया कफा बुटिरिक एसिड, कैक्टिस गडी फ्लारिस, कैलोडियम कल्केरिया आस कल्केरिया कार्ब कल्केरिया फ्लोरस, कल्केरिया फॉस, कैनीबस इण्डिका कार्बो एनिमैलिस कार्बो वेज, कास्टीकम, क्रैटेगस इलैप्स कोरलिनस, फरम मेटलिकम, फैरम फास, जैल्सीमियम, ग्रेफाइटिस, हाइड्रैस्टिस, इग्नेशिया, कैलिब्रामेटम, कैली फास, मैंग मेनिनम लाइकोपोडियम, मैडोरहीनम, नैट्रम म्यूर नेट्रम फॉस, नक्स मैस्केटा, नक्स वोमिका आग्जालिक ऐसिड, पैसिपलोरा इनकारनाटा, फासफारिक ऐसिड, पल्सेटिला, सलिक्स नाइजरा सेनेशियो औरिस, सिपिया, साइलीशिया, स्टोफीसगेरिया स्ट्रेमोनियम, थूजा, टयूबर क्यलिनम, वेलेरियाना, वैट्रम एल्बम, वसानयॉक्साइलम तथा जिन्कम मेटेलिकम।

ये लगभग साठ औषधियाँ हैं जो शिरायों तथा स्नायु-दुर्बलता में सेवन कराई जा सकती हैं। प्रत्येक औषधि का चित्र लक्षणानुसार नीचे दिया जा रहा है। यद्यपि हमने यहाँ पर विस्तार से लक्षणों पर विचार किया है जिससे कि किसी प्रकार की भ्रान्ति न रहे तदपि रोगी अथवा चिकित्सक को चाहिए कि वह लक्षणों के निदान में सावधानी से काम ले तो उपयुक्त होगा। किसी किसी औषधि का विस्तारपूर्वक वर्णन करने के उपरान्त हमने अपने अनुभूत प्रयोगों का भी वर्णन कर दिया है जिससे कि लक्षण, निदान और चिकित्सा में सुविधा हो।

एकोनाइट (Aconite)—इस औषधि का उल्लेख इससे पूर्व भी भय और क्रोध के प्रकरण में किया जा चुका है। सामान्यतया यह औषधि बेचैनी के लिए प्रख्यात है। पग पग पर चिन्ता करना घबराना, पीड़ा अनुभव करना, और ऐसी स्नायु-दुर्बलता कि रोगी यह अनुभव करे कि वह अभी

कर जाता है, इस प्रकार के रोगियों में इस औषधि की एक मात्रा हो जादू का सा प्रभाव दिखाती है। ८-१० गोली मुख में रखते ही घबराहट दूर भाग जाती है। यह स्वानुभूत प्रयोग है।

इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि यदि रोगी को मृत्युभय सता रहा हो तो एकोनाइट ही उसकी एकमात्र औषधि है। मनुष्य भीड़ में घबरा जाए पार करते समय उसके किसी अंग में तीव्र पीड़ा उठ पड़े घबराहट के साथ प्यास मुख्य लक्षण माना गया है, लेटा हुआ हो तो घड़ी की टिक-टिक सुनना और समय देखना कल्पना करना घड़ी की अमुक सुई अमुक स्थान पर आने पर उसका दम निकल जायगा—इस प्रकार तीव्र घबराहट हो रही हो तो उसको एकोनाइट का रोगी मानना चाहिए। कई बार तो २०० शक्ति की एक मात्रा ही ऐसे रोगियों को ठीक कर देती है।

आर्सेनिकम एल्बम (Arsenicum Album)—इस औषधि के रोगी की घबराहट एकोनाइट के रोगी से सर्वथा भिन्न है। यद्यपि मृत्युभय इस का भी होता है किन्तु उसकी बेचैनी और घबराहट विचित्र प्रकार की होती है। औषधि का चयन करते समय यह बात विशेष ध्यान में रखने की है कि रोगी स्थान बदलता है घबराहट के कारण एक स्थान पर टिका नहीं रह सकता कभी इधर तो कभी उधर। एकोनाइट का रोगी पीड़ा में या भयभीत होकर एक ही स्थान पर कराहता-कराहता है। इस औषधि के रोगी की प्यास ही विचित्र घबराहट और बेचैनी का दृश्य प्रस्तुत करती है। उसकी जिह्वा सूखती है इसलिए मिनट दो मिनट में ही वह उसको तरल करने के लिए पानी माँगता है पानी दो घूट से अधिक नहीं पिया जाता। कई बार ऐसा होता है कि वापस ले जाते हुए ग्लास को ही वह फिर माँग बैठता है और अपनी जिह्वा को तर करता है।

ऐसे रोगी को यदि जुकाम लगा हो तो वह बार बार छींकते और स्थान बदलते हुए पाया जाता है। लेटे हुए भी ऐसे रोगी को ऊँचा तकिया रखकर सिर ऊँचा रखकर सोने में आराम मिलता है, यह लक्षण 'पल्सेटिला' से भी मिलता है। रोगी जब अधिक बेचैन होगा, घबरायगा तो उसके मुख से कभी कभी यह भी निकलता है कि औषधि लेना बेकार है इससे कोई लाभ नहीं। घबराहट में उसको ठण्डा पसीना आता है स्थान बदलता है घड़ी घड़ी दो दो घूट प्यास लगना इस औषधि का पूर्ण चित्र प्रस्तुत करता है।

३० शक्ति अच्छा कार्य कर देती है।

हैजे की घबराहट में १००० शक्ति की एक मात्रा कार्य करती है।

ऐसिड फास (Acid Phos)—रोगी के पूर्व इतिहास का इसकी घबराहट से बड़ा गहन सम्बंध है। स्वानुभव से हमने पाया कि जिस रोगी को ऐसिड फास की आवश्यकता होती है, उसके शरीर के रस अधिक मात्रा मे नष्ट हो चुके होते हैं। उसका कारण चाहे वीर्यपात हो अथवा अतिसार या कोई अन्य रोग हो। साधारणतया इसकी घबराहट की एक मुख्य लक्षण से जाचा जा सकता है, वह लक्षण है घबराहट और बेचैनी की दशा मे बार-बार पेशाब के लिए जाना। ऐसी स्थिति म इसका प्रयोग शत प्रतिशत लाभकारी सिद्ध होता है।

यदि किसी को दुर्बलता हो तो उसके लिए भी एसिड फास ही उत्तम है। पहले तो मानसिक दुर्बलता आती है और फिर उसके बाद शरीर दुर्बल होने लगता है और थकान अनुभव होती है। जो बच्चे पढनेवाले हैं व पाठशाला से आते ही सिरपीडा की शिकायत करते हैं। इस प्रकार के लक्षणो म ऐसिड फास उपयोगी होता है।

२०० शक्ति की एक मात्रा इसके लिए पर्याप्त होती है।

बच्चो के अतिसार मे जब बच्चे के साथ उसकी माता भी बेचैन हो ता २०० शक्ति की एक मात्रा पर्याप्त होती है।

किसी कार्य के पूर्ण न होने से चिंता तथा घबराहट म मनुष्य अनेक बार रात्रि म पेशाब करने के लिए उठता है। ऐसा व्यक्ति ३० शक्ति की मात्रा से दो दिन मे ही ठीक हो जाता है।

एसिटिक ऐसिड (Acetic Acid)—यह भी दुर्बलता की ही औषधि है। इस दुर्बलता का कारण रक्ताल्पता होती है। व्यापार म गडबड होने के कारण मनुष्य चिंतित रहता हो घबराहट होती हो, सारा रक्त सिर की ओर चढ जाता हो, धमका देनेवाली सिरपीडा, मुख पीला होता है और मूत्र भी पीला ही निकलता है। जब कोई ठण्डी वस्तु का सेवन करता है तो बेचैनी बढ जाती है, अस्वस्थ हो जाता है। पानी की भाँति पतले दस्त लगते हैं।

स्वभाव चिडचिडा हो तो उसके लिए भी इसकी ३० शक्ति की मात्रा ही पर्याप्त है।

इस बात का ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिए कि इस औषधि को बार बार देना उचित नही, ऐसा करना हानिकारक होता है।

बोरेक्स (Borax)—सामान्यतया यह बालको की औषधि मानी जाती है। तथापि यदि मनुष्य नीचे उतरते समय घबराहट अनुभव करता हो तो उसके लिए यह उपयोगी है।

दूर कही बन्दूक चलने का शब्द, किसी के जोर से छींक मारने पर

ठिठक जाना, इसमे भी थोरेक्स लाभकारी होता है।

किसी बडे पुल से निकलते समय नीचे नदी की ओर देखने पर चक्कर आना, भय खाना, या किसी के जोर से पुकारने पर चौंक जाने की अवस्था में घबराहट के लिए २०० शक्ति की एक मात्रा लाभकारी होती है। सप्ताह मे एक मात्रा देना लाभकारी होता है।

ऐलुमिना (Alumina)—दुर्बलता के कारण जिसको घबराहट होती हो रक्त अथवा रक्त की धारा देखकर जिसको भय लगता हो, घबराता हो, शरीर से पतला और आत्मा भी दुर्बल ही हो जल्दबाज, कब्ज के कारण बहुत दुखी, प्रात काल के समय जो बहुत उदास रहता हो, ज्यों-ज्यों दिन चढने लगे वह सुख का अनुभव करने लगता हो, लेटे रहने की इच्छा हो, प्रात काल के समय निद्रा अधिक आती हो इस प्रकार के रोगियों के लिए यह उत्तम औषधि है।

आवश्यकतानुसार ३० अथवा २०० शक्ति की मात्रा देना लाभकारी होता है।

एम्ब्रा ग्रीशिया (Ambra Grisea)—जो बच्चा चिडचिडा घबराने वाला हो उसके लिए यह बहुत ही लाभकारी होती है।

जो लडके लडकियाँ लजालु स्वभाव के होते हैं किसी से मिलने में सकोच करते है, किसी के सामने कार्य करने मे असमर्थ हो जाते हैं बेचैन, उदास, रक्त की अल्पता और अनिद्रा उँगलियो और बाहो मे पीडा रहती हो एकान्तप्रिय घबराहट के लक्षणो मे शर्माना और सकोच पूर्ण व्यक्ति इसके सेवन से लाभान्वित होता है। उसके लिए यह महौषध का काम करती है।

२०० शक्ति की एक एक मात्रा सप्ताह मे एक अथवा दो बार देने से लाभ होता है।

एमोनिया कार्ब (Ammonia Carb)—जो व्यक्ति चाहे वह बडा हो अथवा बालक हो आधी तूफानवाले मौसम मे उदास रहते है और घबराते हैं जिनका स्वभाव चिडचिडा होता है, दूसरो की बातें जिनके मन पर गहरा प्रभाव करती हो उदासीनता और रोना धोना रहता हो जो स्वभाव से ही अयुक्तिसगत बात करनेवाला हो, भुलक्कड हो उसके लिए यह लाभकारी होती है।

नाक प्राय बन्द रहती है और मुख से साँस लेता है शाम को अथवा ठण्डे और गीले मौसम मे मुख धोने से कष्ट का अनुभव करता है, ऐसे व्यक्ति के लिए यह औषधि उत्तम है।

जिस व्यक्ति ने निरन्तर विक्स इनहेलर का प्रयोग किया हो, नाक

के अवरुद्ध होने पर जो घबराहट और बेचैनी अनुभव करता हो, उसके लिए ३० शक्ति की एक मात्रा पर्याप्त लाभकारी होती है।

एनाकार्डियम (Anacardium)—इसका रोगी विचित्र होता है। कैसा भी हो—उदास, घबराहट, बेचैनी, यदि कुछ खा-पी ले तो सुख की अनुभूति होती है। कभी-कभी तो ऐसा भी देखा गया कि अलसर का रोगी यदि भूखा रहा तो उसको असह्य पीडा हुई और कुछ खा लेने पर उसकी वेदना दूर हो गई। इस प्रकार के लक्षणों मे २०० की एक मात्रा प्रति तीसरे दिन देने से एक मास मे रोगी स्वस्थ हो जाता है।

स्नायु-दुर्बलता मे यह मुख्य औषधि मानी गई है।

पिछले पृष्ठो म एम्ब्रा ग्रीशिया का उल्लेख कर आये हैं। वह तो महा-औषधि ही है।

स्मृति की शिथिलता, चित्त की खिन्नता, घबराहट, बार बार शपथ खाने का स्वभाव और यह सोचना कि उस पर दो शक्तियो का नियन्त्रण है जिनमे से एक तो उसको कुछ करने को कहती है और दूसरी उसके सर्वथा विपरीत करने को, अर्थात् ऐसा व्यक्ति जो किसी प्रकार का निर्णय न ले पाता हो, कुछ खाने के बाद कुछ समय के लिए वह शान्त और सन्तुष्ट रहे किन्तु एक-दो घण्टे के बाद फिर उसी प्रकार के सोच विचारो मे लीन हो जाए, चिन्ता करे अथवा डरता रहे, जिसमे आत्मविश्वास की कमी।

इन सब प्रकार के लक्षणो मे एनाकार्डियम ही एक ऐसी औषधि है जो उसको स्वस्थ कर सकती है। २०० या इससे अधिक शक्ति इसके लिए लाभकारी सिद्ध होगी।

आर्निका माण्ट (Arnica Mont)—सामान्यतया यह बन्द चोट की औषधि मानी जाती है, किन्तु इसका क्षेत्र बन्द चोट तक ही सीमित नही है अन्य अनेक रोगो म भी इसका प्रयोग होता है। इस प्रकार इसका क्षेत्र विशाल है। मानसिक रोगी के लिए यह औषध रामबाण सिद्ध होती है। किसी प्रकार की दुघटना, चोट लगना जिसका सीधा प्रभाव मन पर होता है, उसके लिए सवप्रथम इसका प्रयोग किया जाना चाहिए।

इसके रोगी को आप नरम बिस्तर पर लिटा दीजिये, तब भी वह कहेगा कि यह तो बडा सख्त है। उस पर भी वह बेचैनी और घबराहट अनुभव करता है। पीडा उससे सहन नही होती, वह एकान्त मे रहना चाहता है। उसका सिर गम रहता है किन्तु शरीर ठण्डा।

पुरानी चोट जैसे जीर्ण रोगो म भी इसे अत्यन्त लाभकारी औषधि माना गया है। कमर का पुराना दद, निरन्तर स्कूटर चलाने, खडे रहने के

कारण होनेवाला दद जो कभी कभी घबराहट या बेचैनी उत्पन्न करता रहता है उसके लिए आर्निका की बडी शक्ति की मात्रा लाभकारी होती है साधारणतया इसकी ३० शक्ति की मात्रा ही प्रयोग करनी चाहिए।

अर्जेण्टम मेटलिकम (Argentum Metallicum)—जिस व्यक्ति का स्वभाव जल्दबाजी का हो, जिसकी घबराहट की पृष्ठभूमि म हस्तमथुन का इतिहास रहा हो, इस आदत के कारण जहाँ शीघ्र वीय स्खलित होता है वहाँ थका देनेवाली छींकें जुकाम जस लक्षण उभर आते है और वे निरंतर तग करते हैं। उसके लिए यह औषधि उत्तम है।

यह औषधि शुद्ध चाँदी से तैयार की जाती है। मस्तिष्क पर इसका उत्तम प्रभाव होता है। घबराहट मे हस्तमैथुन का इतिहास, जल्दी थक जाना हर काय को जल्दी करने की घबराहट मे रामबाण सिद्ध होती है। सामान्यतया ३० शक्ति की मात्रा का हमने प्रयोग किया है और इससे अच्छे परिणाम निकले हैं।

एवना स्टेविया (Avena Sativa)—स्नायु मण्डल की दुबलता के लिए यह टानिक का काय करती ह। *मस्तिष्क और स्नायुओं की दुबलता* के लिए थकावट मे यह औषधि शक्तिवद्धक सिद्ध होती है। जिसका जुकाम हो उसके लिए भी उपयुक्त है।

स्त्रियो के ऋतुस्राव मे पीडा या मासिक धम मे रजस्राव रुक रुककर होना अथवा मासिक धम का बिलकुल न आना आदि रोगो म यह अत्यत लाभकारी औषधि है।

इसका रोगी किसी भी एक विषय पर अपना ध्यान केंद्रित करने म असमथ रहता है।

स्त्रियो के रोगो मे इसकी दस से बीस बूद पानी मे डालकर सवन करनी चाहिए। कुछ मास तक दो तीन बार नित्य सेवन करने से जहाँ घबराहट जरायु के राग थकावट दूर होगी वहाँ स्नायु की दुबलता, अनिद्रा और जुकाम म भी राहत प्राप्त होगी।

बपटीशिया (Baptisia) २० ३००—जिसको विचित्र प्रकार की घबराहट होती हो कभी किसी प्रकार की तो कभी किसी प्रकार वह अनमना सा अनुभव करता है। विचार करने की शक्ति क्षीण हो जाती है। भ्रम ग्रस्त रहता है। आभास होता है कि शरीर के विभिन्न अवयव बिखरे पडे है। वह उन्हे एकत्रित करने का यत्न करता है स्वय को टूटा हुआ अनुभव करता है। जिस करवट भी लेटे वही भाग दुखने लगता है।

यदि महिला हो तो वह सो नहीं सकती क्योंकि स्वय का एकसार नहीं कर सकती। उसको अपना सिर और शरीर बिखरे हुए से अनुभव होते

है। उसका अनुभव होता है वह एक नही अपितु तीन टुकडा मे टूटी पडी है। पूणतया उदासीन रहती है। केवल तरल पदाथ ही पी सकती है।

इस प्रकार के रोगियो के लिए ३० अथवा २०० शक्ति की मात्रा का प्रयोग लाभकारी होता ह।

बेटा काब (Baryta Carb)—जिसका मस्तिष्क दुबल हो, किसी व्यक्ति के सम्मुख ध्यान पर जिसका भिभक होती हो, अनिच्छा हो, जो लज्जालु स्वभाव का हो, जो दृढ़निश्चयी न हो जिसका अपने पर भी विश्वास न हो, स्मृति भग रहती हो जो बच्चो जैसा व्यवहार करता हो, थकावट अनुभव करता हो इन सबम यह औषधि लाभकारी सिद्ध होती है।

जो बच्चे किसी नवागन्तुक को घर मे आया देख कुर्सी आदि के पीछे अथवा दीवार के पीछे छिप जाया करते हैं, आंखो पर दोनो हाथ रखकर उगलियों के बीच से नवागन्तुक का देखते हैं सामने आने म जो घबराते हैं, उनके लिए भी यह औषधि अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होती है।

उपरि लिखित मानसिक लक्षणा के साथ किसी को यदि अत्यधिक कब्ज रहती हो अथवा शरीर के किसी भाग का पूणतया विकास न हो पाया हो तो उसमे भी यह औषधि लाभकारी सिद्ध होती है।

मानसिक अथवा शारीरिक रूप मे बौने रोगियो के लिए यह महौषधि मानी गई है।

२०० शक्ति की मात्रा स अच्छा लाभ होता है।

बेटा म्यूर (Baryta Mur)—घबराहट म यह उत्तम औषधि है। सामान्यतया यदि व्यक्ति बुद्धिमान हो और उसमे लक्षण बेटा काब के पाये जाएँ तो बेटा काब की अपेक्षा उसको बेटा म्यूर देने से अधिक लाभ होता है। किन्तु यदि व्यक्ति का मस्तिष्क उतना उवरक न हो तो फिर बेटा म्यूर ही उसके लिए लाभदायक है।

जो बच्चे अपना मुख खोले इधर-उधर घूमते हैं और नाक से बोलते हैं उनको यदि ३० शक्ति की मात्रा दी जाय तो अच्छा लाभ होता है आवश्यकता पडे तो २०० शक्ति की मात्रा भी दी जा सकती है।

बेंजोइक एसिड (Benzoic Acid) २००—जो व्यक्ति सदा गलत ही सोचता हो, अरुचिकर बातें सोचता हो बीती घटनायें जिनका कि भुला देने मे लाभ है उनका निरन्तर विचार करता रहता हो जिसका मन बार-बार अरोचक घटनाओ का ही स्मरण करता हो जो निरुत्साहित रहता हो ऐसे रोगी पर इस औषधि का प्रयोग लाभकारी होता है। इसके लिए २०० शक्तिक्रम की मात्रा लाभकारी होती है।

बोविस्टा (Bovista)—जो व्यक्ति बहुत जल्दी किसी बात को महसूस

मर सता हो, जिसके हाथ से हर वस्तु गिर जाती हो, प्रयुक्त हो जो बच्चे हकलाते हो, जिनके मुख पर दाने अथवा झाइयाँ हो, उन सबके लिए ३० से २०० शक्तिक्रम की मात्रा का प्रयोग किया जा सकता है। इससे इन रोगों म लाभ होता है।

ब्रयोनिया (Bryonia) ३०, २००—प्रत्येक बात पर जो असन्तुलित हो जाता हो कभी प्रसन्न न रहता हो, घर जाने की इच्छा करता हो प्रत्यधिक खीजने वाला हो, सदा व्यापार की ही बातें करता हो, घूमने फिरने मे कष्ट होता हो, ऐसे व्यक्ति के लिए ब्रयोनिया का प्रयोग लाभ कारी सिद्ध होता है।

बफो (Bufo) ३०—जो बालक दुर्बल मन के होते हैं उनके लिए यह बहुत ही लाभकारी है।

जो लोग सदा अपने स्वास्थ्य के विषय मे चिन्तित रहत हो, जो घबराये रहते हो, उनके लिए यह महौषधि है।

चीखना, चिल्लाना, अधीरता और घबराहट मन्दबुद्धि आदि लक्षणो मे इस औषधि की ३० शक्तिक्रम की मात्रा का प्रयोग लाभकारी होता है।

जो व्यक्ति पागलपन के लक्षणा के साथ एकान्त पसन्द करने वाले हो, जिनको मिरगी का दौरा पडता हो ऐसे लक्षणो में घबराहट को दूर करने मे यह औषधि लाभकारी सिद्ध होती है।

जिस व्यक्ति को सगीत सहन नही होता, हस्तमैथुन के कारण अथवा वीर्य दोष के कारण अस्वस्थता होने से घबराहट मे यह औषधि अत्युत्तम मानी गई है।

बुटिरिक ऐसिड (Butyric Acid)—जो व्यक्ति छोटी छोटी बातो पर चिन्ता करता है जिसको निरन्तर घबराहट रहती हो भय सताता हो, जिसे आत्महत्या के विचार उठते हो जिसके कमर और टाँगो मे पीडा रहती हो, जिसके पेट मे खूब गस बनती हो इन लक्षणो म इस औषधि की ३० शक्तिक्रम की मात्रा से लाभ होता है।

स्वानुभव से एक मधुमेह के रोगी जिसकी टागो मे पीडा के कारण उसका घबराहट रहती थी इसका प्रयोग उसके लिए लाभकारी सिद्ध हुआ है।

अनिद्रा भी इस औषधि का एक मुख्य लक्षण है।

कक्टस ग्रंडीफ्लोरस (Cactus Grandiflorus)—जो व्यक्ति घबराहट के कारण चीखता है जिसका स्वभाव चिडचिडा हो जिसको मृत्यु का भय रहता हो पीडा के मारे चिल्लाता हो, बाएँ करवट लेटने पर जिसको पीडा होती हो, हृदय गति तेज होती हो और जोर की धडकन

होती हो, ऐसा अनुभव करना कि मानो किसी ने लोहे के पंजे से दिल को जकड रखा हो, खुली हवा मे अच्छा अनुभव करता हो इन सब लोगो को ३० से २०० शक्ति की मात्रा से लाभ होता है।

कलेडियम (Calodium) २००—तनिक-सी आहट पर चौंक पडना चलने फिरने मे घबराहट होना, बाईं ओर लेटने पर कष्ट का बढना प्यास न लगना और केवल गरम पेय पदार्थ सहन कर सकना। ऐसे व्यक्तियो पर २०० शक्तिक्रम की मात्रा का प्रयोग लाभकारी होता है।

तम्बाकू की आदत को छुडाने मे भी इससे सफलता प्राप्त होती है। इसी प्रकार सिगरेट की आदत को छुडाने मे भी इससे बहुत बडा श्रेय प्राप्त हो सकता है।

कल्केरिया आर्स (Calcarea Ars)—जिस व्यक्ति को अधिक क्रोध आता हो, जो संगति पसन्द करता हो, जो दुविधा मे पडा रहता हो, घबराहट वाला, जिसको घण्टे-घण्टे में पेशाब आता हो जिसका रक्त का दौरा सिर की ओर रहता हो, सिर की ओर रक्त चढने पर जिसको मिरगी का दौरा पड जाता हो डकार आती रहती हो मुँह से लार टपकती रहती हो, हृदय गति बढ जाती हो, इन लक्षणो मे इस औषधि की ३० शक्तिक्रम की मात्रा का निरन्तर प्रयोग अत्यन्त लाभकारी होता है।

कल्केरिया कार्ब (Calcarea Carb)—जिस व्यक्ति की दशा शाम के समय अधिक खराब हो जाती हों, जिसको फेल हो जाने का भय रहता हो, अपने दुर्भाग्य पर जिसको घबराहट होती हो, जिसका छूत की बीमारी का भय सताता हो, जो भुलक्कड स्वभाव का हो, द्विविधा ग्रस्त रहता हो, जिसे अण्डा खाने की अधिक इच्छा रहती हो, विशेषतया उबला हुआ अण्डा, जिसका स्वभाव हठी हो, घबराहट के साथ जिसकी हृदय गति बढ जाती हो, धडकन होती हो, तनिक-सा भी मस्तिष्क सम्बन्धी कार्य करने से सिर गर्म हो जाता हो, किसी प्रकार की थकान अथवा मस्तिष्क सम्बन्धी काय करने की इच्छा का न होना आदि लक्षणो मे दो सौ या अधिक शक्तिक्रम की मात्रा लाभदायक सिद्ध होती है।

यदि कल्केरिया का कांस्टीटयूशन हो तो यही औषधि पूर्ण लक्षणसमूह को ठीक करेगी अर्थात् रोगी देखने मे मोटा फूला हुआ, ढीलाढाला और सुन्दर गोल मटोल भी हो तो उसको कल्केरिया की आकृति माना जाता है।

कल्केरिया फ्लोर (Calcarea Flour)—जिस व्यक्ति को घबराहट मे आर्थिक असफलता का भय रहता हो जबकि इस प्रकार का कोई आधार नही होता, जिसके सिर मे कड-कड करने जैसी आवाज सुनाई देती हो

आवाज बैठी हुई-सी हो नींद का इस प्रकार आना माना कि सोया हो न हो इस प्रकार के लक्षणों में इस औषधि का प्रयोग लाभकारी होता है।

कल्केरिया फॉस (Calcarea Phos)—जो व्यक्ति अस्थिर हो निक कर न रह सकता हो जो सदा कहीं न-कहीं जाना चाहता हो, भुलक्कड़ स्वभाव का हो, दुग्ध के बाद जिसके सिर में पीड़ा रहती हो, झक्की स्वभाव का हो घबराने वाला हो जिसमें रक्त की कमी हो, दाँत भी स्वस्थ न होन हों जाड़ा और स्नायुओं में अकड़न रहती है पीड़ा रहती है। इस प्रकार के व्यक्तियों के लिए इसका प्रयोग लाभकारी है।

दुर्बल बालकों को इसकी ६ एक्स अथवा १२ एक्स शक्ति की मात्रा का प्रयोग लाभकारी होता है।

मासिक धर्म के समय जो लड़कियाँ घबरा जाया करती हैं, उनके लिए यह महौषधि है।

मासिक धर्म के समय जिनको पीड़ा होती है उनके लिए २०० या १००० शक्ति क्रम की मात्रा लाभदायक सिद्ध होती है।

रक्त स्राव की स्वल्पता में भी यह उत्तम औषधि है।

कनीबस इंडिका (Cannibus Indica)—जिसकी दशा विचित्र हो, जिसको बहुत अधिक उदासी रहती हो, जिसको समय बहुत लम्बा प्रतीत होता हो एक मिनट भी जिसको घण्टे के समान रहता हो, कुछ पग चलना ही जिसको बहुत लम्बा रास्ता दिखाई देता हो हर समय दार्शनिकों की भाँति सोचता ही रहता हो अनिश्चित मन रहता हो यह अथवा वह में निश्चय न कर पाता हो जिसको सदा पागल हो जाने का भय सताता हो ऐसे लोगों पर इस औषधि का सोच समझ कर प्रयोग किया जाना चाहिए।

जो अपनी हँसी को वश में न रख सकता हो, जो बहुत अधिक भुलक्कड़ हो, कोई भी काम पवित पूर्ण न कर पाता हो, बीच में ही भूल जाता हो नींद में दाँत किटकिटाता हो। जब इस प्रकार के लक्षण दिखाई दें तो टिंक्चर अथवा छोटी शक्तिक्रम की मात्रा का प्रयोग करने से लाभ होता है।

कार्बो एनिमलिस (Carbo Animalis)—रात के समय जिसको घबराहट होती हो, बात करने से जो कतराता हो उदास रहता है अकेला रहना चाहता है सिर में ऐसी पीड़ा कि सिर के टुकड़े होने की अनुभूति रक्त का सिर की ओर जोर होना असमंजस में पड़ा रहने वाला जो यह नहीं बता सके कि आवाज किस ओर से आ रही है [illegible] ते है। और उसके बाद नाक से रक्त बहता हो, दुर्बल रहता [illegible] [illegible]क न हो मुख से खट्टा पानी निकलना [illegible] स। प्रकार का [illegible] निकलने पर बिगड़[illegible]

बनाने के बाद दुर्बलता अनुभव करना, खाना खाते खाते लेट जाने वाला, जिसके लिए बैठकर खाना खाना कठिन हो जाता हो तथा अत्यधिक दुर्बलता में २०० शक्ति की मात्रा का सेवन लाभकारी होता है।

कार्बो वेज (Carbo Veg)—घबराहट, अंधेरे में अधिक घबराहट और अंधेरा पसन्द न करना, सहसा स्मृति भंग होना, भूत प्रेत का भय लगा रहना, अत्यधिक सिर पीड़ा, किसी कार्य में व्यस्त रहने पर अधिक सिर पीड़ा होना, स्त्री सम्भोग के उपरान्त सिर पीड़ा होना, बाल भी झड़ने लग जाना, जो कुछ रोगी खाता है उससे गैस बनती है, ठण्डा पसीना आना हाथ पाँव ठण्डे, शक्ति की कमी, खिड़कियाँ अथवा दरवाजे खुलवाने की इच्छा, उसका दम घुटता है। स्त्री को मासिक धर्म में अधिक रक्त स्राव होना, रक्त पीला निकलना, शाम और रात के समय कष्ट बढ़ना, खुली हवा से, खाने के बाद श्वास भी ठण्डा आना, दुर्बलता, इन लक्षणों में ३० या २०० शक्तिक्रम की मात्रा का प्रयोग लाभकारी होता है।

कास्टीकम (Causticum)—जो व्यक्ति मैला कुचैला रहता हो, जिसके चेहरे पर मस्से हों, चिन्तित रहता हो, खुश्की और जलन रहती हो, दुखन हो, खुश्की, जलन और दुखन किसी बीमारी के कारण रहती हो, यह जिसकी विशेष अनुभूति हो। बच्चा बिस्तर पर अकेला न जाना चाहता हो, पट्ठे और हड्डियाँ कमजोर हों, जोड़ों में गड़बड़ हो, जोड़ टेढ़े-मेढ़े हों, इन लक्षणों में यह औषधि उत्तम है।

बायीं ओर के श्याटिका की पीड़ा के लिए भी यह उत्तम है।

जिसकी खाँसी ठंडा पानी पीने से अच्छी होती हो, खाँसते अथवा छींकते अपने आप पेशाब निकल जाता हो, उसके लिये यह उपयोगी है। इसके सेवन से इस रोग के साथ साथ वह शरीर के अन्य लक्षणों को भी ठीक कर देगी। तीस और दो सौ शक्तिक्रम की मात्रा से लाभ होगा।

टाँग पर सदा तंग करने वाली पुरानी खारिश के साथ खाँसते समय स्वयं पेशाब निकल जाने के लक्षण में एक हजार शक्तिक्रम की मात्रा से अवश्य लाभ होगा।

क्रटगस (Crataegus)—हृदय के लिए औषधि महान टॉनिक है। दिल की घबराहट, धक धक करना, हृदय पर बोझ पड़ना, चक्कर आना, रक्त चाप की गड़बड़ी में यह उत्तम औषधि है। जिनका हृदय दुर्बल होता है और जल्दी थक जाया करते हैं, जिनको रक्तचाप स्थायी रोगी घोषित कर दिया गया हो उनको इसका प्रयोग निरन्तर करते रहना चाहिये। इससे कुछ मास बाद उनका हृदय सबल होकर स्वाभाविक कार्य करने लगेगा।

जो घबराहट मे पेट मे वायु से आरम्भ होती हो, सनसनी, दिल की धडकन, नाडी की गडबडी के लक्षणो के साथ अन्त, रक्तचाप और हृदय के रोग के लक्षणो के लिए यह महान औषधि मानी जाती है।

यदि आरम्भ मे ही इसका प्रयोग कर लिया जाए तो हृदय रोग से बचा जा सकता है।

१०-१५ बूँद ताजे पानी अथवा दूध की चीनी मे डाल कर दिन मे दो तीन बार नित्य सेवन करना चाहिए।

इलप्स कोरलिनस (Elaps Corallinus)—ऐसी घबराहट कि उसमे रोगी अकेले रहने मे डरता है। रोगी का यह कल्पना करना कि वह किसी का बोलता हुआ सुन रहा है, स्वयं बोल सकता है परन्तु बोलचाल समझ नही सकता। वर्षा से भय लगता है। प्रकाश पसन्द नही करता।

ऐसे रोगियो के लिए ३० अथवा २०० शक्तिक्रम की मात्रा का प्रयोग लाभकारी होता है।

फरम मटेलिकम (Ferrum Metallicum)—जिसको थोडा सा भी शोर सहन न होता हो, तनिक से विरोध पर जो गरम हो जाता हो तनिक सी पीडा होने पर चेहरा लाल हो जाता हो, लाल भाग पीले पड गये हो, शरीर मे रक्त की कमी दिन मे भी अपने आप पेशाब निकल जाता हो, मासिक धर्म एक दिन होता है फिर आ जाता है, ठण्डे पानी से धोने और अधिक गर्मी से कष्ट बढ जाता हो, खाने के बाद शौचालय जाना पडता हो त्वचा पीली हो गई हो और दबाने पर गड्ढा पड जाता हो रक्ताल्पता जिसे एनीमिया कहते हैं, इन रोगो मे ३० शक्ति की मात्रा निरन्तर देते रहने से रोगी स्वस्थ हो जाता है।

फरम फास (Ferrum Phos)—रक्त की कमी, गर्मी के कारण घबराहट होना, सूर्य की तनिक सी भी गरमी का सहन न होना, चक्कर और सिर पीडा होना, ठण्डी पट्टी रखने पर आराम अनुभव करना, आँखें सूजी रहना, जलन और ऐसा अनुभव करना कि मानो आँखो के पर्दे के नीचे रेत रखी हो इस प्रकार रडक और चुभन होना, दूध और मांस से एकदम अरुचि, मासिक धर्म हर तीन मास होता हो, हृदय की धडकन तीव्र हो निद्रा न आती हो, रात्रि का पसीना आता हो।

इन लक्षणो मे ६, ३० और २०० शक्ति की मात्रा देने से लाभ होता है।

जल्सीमियम (Gelsemium)—यदि घबराहट और कम्पन हो तो सर्वप्रथम इस औषधि का ही प्रयोग करना चाहिए।

गर्मी के कारण बैरामीटर की भाँति कष्ट का बढ जाना, सर्दी मे और

गीले स्थान पर अन्य अनेक लक्षणों का उभर आना, जड़ता इसके मुख्य लक्षण हैं। व्यक्ति को प्यास न लगना, लगती भी हो तो बहुत ही कम, गरमी तनिक-सी भी सहन न होना, कम्पन में इस औषधि का प्रयोग करने से अवश्य लाभ होता है।

कई बार तो रोगी इस प्रकार कांपता है कि उसको पकड़ कर रखना पड़ता है। मलेरिया का रोगी चाहे जिसको कम्बल की आवश्यकता न होती हो, इस लक्षण पर २०० शक्ति की मात्रा से रोग को वश में किया जाता है।

हाथों का कम्पन, मंच पर आने पर धड़कन और कम्पन, घबराहट में यह महान् औषधि मानी गई है।

थका मांदा घबराने वाला, किसी समस्या से जूझने अथवा शत्रु से टक्कर लेने का साहस न होना, प्यास न लगना यदि ये तीनों कारण विद्यमान हों तो उसके लिए यही सर्वोत्तम औषधि है।

ग्रेफाइटिस (Graphites)—जो स्त्रियां मोटी हो रही हों और मासिक धर्म विलम्ब से आ रहा होता है, कब्ज हो और मासिक धर्म विलम्ब से आने का इतिहास हो, जल्दी ठण्ड लग जाती हो, तनिक-सी आवाज पर चौंक पड़ना, मन की दुर्बलता, निर्णय करने का सामर्थ्य नहीं, संगीत भी जिसको रुला देता हो, किसी काम में मन न लगना, इन लक्षणों में यह महान औषधि है।

बच्चा ज़िद्दी स्वभाव का हो, तंग करने वाला हो, डाँटने फटकारने पर हँस देता हो उसके लिए इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

चेहरे पर ऐसा लगना कि मानो आगे मकड़ी का जाला हो, साँस में पेशाब की सी दुर्गंध आना, मुख पर गीला एक्ज़ीमा, घबराने वाली मोटी लड़कियों के लिए यह उत्तम औषधि है। इसकी ३० अथवा २०० शक्ति की मात्रा लाभदायक होती है।

विशेष—एक अविवाहित लड़की जिसका मुख बहुत दाने आने के कारण एक्ज़ीमा की शक्ल बन गई थी और दाने रिसते भी थे, स्वभाव और बातचीत में घबराहट, उसे ग्रेफाइटिस की २०० शक्ति की तीन मात्रायें कुछ दिनों तक देने से वह ठीक हो गई। औषधि के प्रयोग से उसके शरीर को देखकर ऐसा लगता था कि वह मोटी होती जा रही है।

दिन रात होने वाले लिकोरिया के साथ जिन महिलाओं अथवा लड़कियों को घबराहट भी होती हो उनके लिए इस औषधि का प्रयोग लाभकारी सिद्ध होता है।

हाइड्रैस्टिस (Hydrastis)—घबराहट होने पर जो व्यक्ति मायूस हो

जाता हो, जो यह सोचता हो कि वह मर जाएगा और मरन
करता हो कब्ज के साथ माथे मे दर्द रहता हो, हर समय ना
रहता हो रोटी और सब्जी न खा सकता हो जिसका हाजम
इस प्रकार के रोगी के लिए दो सौ शक्ति की मात्रा लाभका

इग्नेशिया (Ignatia)—जो चचल प्रकृति का हो, अ
निश्चय म दृढता न हो, अनिश्चित रहता हो, झगडालू हो, [illegible]
ही खराब हो जाता हो, उसके लिए यह औषधि उत्तम है।

बहुत अधिक महसूस करने वाली घबराने वाली, क
की मूडी स्त्रियो के लिए यह विशेष रूप से लाभकारी सिद्ध

डाटे अथवा फटकार जाने के बाद जब बच्चे विस्त
जाए तो बीमार पड जाने वाले हो, नीद मे झकड जाते ह
मूड हो, सिसकियाँ भरना, दु ख के कारण आह भरना
दो सौ शक्ति की मात्रा प्रात काल देने से लाभ होता है।

घर मे किसी प्रियजन की मृत्यु के बाद मन दु खी
यह उत्तम औषधि है। इसके प्रयोग से मन स्वस्थ औ

मानसिक लक्षणो मे सदा २०० शक्ति की मात्रा
की मात्रा देने से लाभ होता है। २०० शक्ति से क
लाभकारी सिद्ध नही होगा।

कालिब्रोमेटम (Kali Bromatum)—अति
व्यक्ति, जो यह समझता हो कि सारे ससार का दुभ
आया है कुछ न-कुछ करते रहने वाला उदासी और
किए जाने का भय सताता हो रात्रि के समय डर अ
भोग विलास के कारण दुर्बलता का आ जाना स्मृति
चिन्ता और स्नायु दुर्बलता के कारण रात को नीद न
परेशानी, सम्पत्ति की हानि, मान हानि आदि पर न
प्रकार के लक्षणो म तीस या दो सौ शक्तिक्रम की मा
है।

काली फॉस (Kali Phos)—जिन व्यक्तियो को इग्ने
कराया गया है उसके बाद इसका महत्त्व है। इस इग्नेशिया
की भाँति 'क्रोनिक' भी माना जाता है। अर्थात् इग्ने
बाद केस म गति लाने के लिए या रोगी का सवथा [illegible]
कैली फास की आवश्यकता होती है।

दिमागी लक्षणो मे तो यह महान औषधि
घबराहट मे यदि इसका निरतर सेव

हो जाता है।

इसे दिमाग को तेज रखने वाली औषधि माना गया है।

६-एक्स से लेकर १००० शक्तिक्रम के प्रयोग से लाभ होता है।

परेशानी, मुकदमे म परेशानी पर १००० शक्तिक्रम से निस्सन्देह लाभ पाया जाता है।

केली फॉस शिराओं का महान् टानिक बताया गया है। बेचैनी, शिराओं की कमजोरी, घबराहट, थकावट, लोगो मे मिलने जुलने की इच्छा न रखना, शीघ्र क्रोध करना, रात्रि को डरना, तनिक सा परिश्रम बहुत बड़ा कार्य दिखाई देना विद्यार्थियो के सिर मे पीडा होना, थका-मादा व्यक्ति, इन लक्षणो मे इसका प्रयोग लाभकारी सिद्ध होता है।

कानो मे मक्खियो की भाँति भिनभिनाहट होना अथवा घण्टी की भाँति धीमी आवाज-सी सुनाई देना इन लक्षणो पर ३० या २०० शक्ति की मात्रा देने से लाभ होता है।

शर्मीले, घबराने वाले, भुलक्कड व्यक्तियो के लिए भी यह उत्तम औषधि मानी गई है। जो किसी से बातचीत करना पसन्द नही करते उन पर भी इसका प्रयोग लाभकारी सिद्ध होता है।

लेक केनिनम (Lac Caninum)—जो व्यक्ति बहुत अधिक भुलक्कड हो, जो घबराया हुआ हो, लिखने मे गलती करता हो, जो यह सोचता हो कि उसका रोग असाध्य है, क्रोध का दौरा पडता हो, प्रात के समय दुर्बलता अनुभव करता हो, कानो म आवाज आती हो, इन लक्षणो म, २०० शक्ति की मात्रा लाभकारी सिद्ध होती है।

लाइकोपोडियम (Lycopodium)—जो लोग घबराने वाले होते हैं उनके लिए यह सर्वोत्तम औषधि है। जो व्यक्ति तनिक-सी बात पर परेशान हो जाता हो उसके लिए भी यह उत्तम है।

शरीर के दायी ओर जिनको रोग हो उनके लिए यह उपयोगी है।

अकेले रहने म भयभीत होना, बहुत ही भावुक प्रकृति का होना आत्मविश्वास की कमी होना, लिखा हुआ पढ न सकना, प्रात उठने पर उदासी और दु ख अनुभव करना, बिना कारण सिर हिलाना, घबराहट मे चिंता और उदासी से माथे पर गहरी लकीरें हो तो इन मुख्य लक्षणो म इस औषधि का प्रयोग अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होता है।

३० और २०० शक्तिक्रम की मात्रा का सेवन उपयुक्त है।

मेडोरहीनम (Medorrhinum)—जो व्यक्ति बात करते समय बातचीत का तारतम्य खो बैठता हो, जिसकी स्मृति दुर्बल हो डर बेचैनी और घबराहट रहती हो, जिसको यह आभास हो कि समय धीरे धीरे बीत

रहा है किसी वस्तु पर मन न टिकना, ध्यान केंद्रित करना कठिन होता हो, अंधेरे मे भय लगना और यह अनुभव करना कि कोई पीछा कर रहा है इस प्रकार के लक्षणो मे यह औषधि उपयोगी है।

२०० या अधिक बडी १००० शक्तिक्रम की मात्रा उपयोगी है।

नेट्रम म्यूर (Natrum Mur)—दुःख, भय, अथवा क्रोध के दुष्प्रभाव से जिसको घबराहट होती हो उदास रहता हो, हतोत्साह हो, सान्त्वना देने पर और बिगड पडना, तनिक सी बात पर गम हो जाना, जल्दबाजी, आंसुओ के साथ हंसी, अकेला रहना चाहता हो, रोने को मन करता हो, अन्धापन लाने वाला सिर दर्द हो, स्कूल जाने वाली छात्राओ के रक्त की कमी के कारण सिर म पीडा रहती हो और घबराहट होती हो, उसमे यह औषधि उत्तम है।

मुख पर चिकनाहट रहती हो, त्वचा मे विशेषतया उस स्थान पर जहाँ बाल हो ऐसा लगता हो कि तेल लगा हुआ है, जो अधिक नमक खाते हों, घबराते हो, ऐसे रोगियो पर भी यह औषधि उत्तम है।

२०० या इससे अधिक उच्च शक्तिक्रम की मात्रा से फलदायक परिणाम निकलता है। पुराने लक्षण होने पर २०० शक्तिक्रम की मात्रा सप्ताह मे दो बार देना उपयुक्त है।

नेट्रम फॉस (Natrum Phos)—भय और घबराहट जिसके मुख्य लक्षण हो, जागने पर, रात्रि मे नीद खुलने पर वह कल्पना करते हुए देखता है कि कमरे मे रखे मेज-कुर्सी आदि निर्जीव नही अपितु सजीव प्राणी है उसको दूसरे कमरे मे किसी की पगध्वनि सुनाई देती है वास्तव मे वहाँ कोई नही है यह केवल उसका भ्रम है, प्रातःकाल सिर मे दर्द रहता हो जडता एक कान लाल और दूसरा पीला दिखाई देना, होंठ खुश्क रहना, जीभ पर पीली-सफेद परत दिखाई देना खट्टे डकार आना।

इन लक्षणो पर यह औषधि अत्यन्त उपयोगी है। ३० या ६ शक्ति क्रम अधिक प्रभावशाली पाये गए हैं।

जिन बच्चो के पित्त बढ जाता है डरते हैं घबराते हैं उनके लिए बायोकेमिक ३ एक्स ६ एक्स प्रभावशाली सिद्ध होती है।

नक्स मास्केटा (Nux Moschata)—जिसका स्वभाव कभी कभी कुछ बदलने वाला हो हँसना, रोना, चिल्लाना जडवादी, विचारों का स्पष्ट न होना यह सोचना कि उसके दो सिर हैं व्याकुलता और ऐसी घबराहट मानो स्वप्नावस्था में हो खुली हवा मे चलने से सिर में चक्कर आना गन्ध अधिक अनुभव करना (Oversensitive) ठण्डा भोजन, ठण्डे प्रदेश, नहाना धोना अच्छा न लगना, गरमी सुहाती हो, ऐसे रोगी के लिए तीस

अथवा २०० की शक्तिक्रम की औषधि लाभकारी होती है।

नक्स वोमिका (Nux Vomica)—जिसको शोर सहने न होता हो, अत्यधिक भावुक और क्रोधी स्वभाव हो, गंध और प्रकाश सहा न होता हो, जिसका यह अनुभव होता हो कि समय बहुत धीरे धीरे व्यतीत हो रहा है, जिसकी आदत दूसरों को टोकते रहने की हो चिड़चिड़ापन हो, शुष्क और गरम मौसम में जिसकी प्रसन्नता बढ़ती हो, पेट के निचले भाग में कम गैस बनता हो, मलत्याग के बाद जिसको घबराहट होती हो, जिसको बार-बार मलत्याग के लिए जाने की आवश्यकता अनुभव होती हो, कब्ज के साथ चिड़चिड़ाहट और घबराहट में यह औषधि बहुत उत्तम है।

इसकी ३० शक्ति का प्रयोग उपयोगी होता है।

ऑक्जालिक ऐसिड (Oxalic Acid)—इसका प्रभाव सीधे मनुष्य के मेरुदण्ड पर होता है। जिसको घूमने फिरने से गड़बड़ होती हो, सोचने पर ध्यान करने से जिसके लक्षण उभर आते हों, अर्थात् उसको कोई कष्ट हो और उसका स्मरण करने से वह अधिक उभर आता हो, इस प्रकार के विशेष लक्षणों में, किसी बात का निर्णय करने में असमर्थता, घबराहट में कुछ निश्चय न कर पाना, गले से नीचे तक जलन होती हो, बायें फेफड़े में पीड़ा हो तो उसके लिए यह उत्तम है।

३० अथवा २०० शक्तिक्रम की मात्रा लाभदायक होती है।

पेसिफ्लोरा इनकारनेटा (Passiflora Incarnata)—यह बहुत ही उत्तम टानिक माना गया है। किसी भी रोग के उपरान्त शिराओं को शान्त करने के लिए यह विशेष उपयोगी सिद्ध होता है। नींद का न आना, पीड़ा रहना, विशेषतया सिर पीड़ा वह भी सिर के ऊपरी भाग में, आँखों में ऐसी पीड़ा मानो उनको भीतर धकेल दिया गया हो। खट्टे डकार और गैस, बेचैनी, अनिद्रा, इस प्रकार के लक्षणों में इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

इसका बड़ी मात्रा में तीस से साठ बूंद तक थोड़े से पानी में मिलाकर कई बार सेवन करते रहने से स्फूर्ति आती है और शक्ति प्राप्त होती है। नींद अच्छी आती है, घबराहट और बेचैनी के लक्षण दूर हो जाते हैं।

फासफोरिक ऐसिड (Phosphoric Acid)—बोलने अथवा किसी प्रकार का भारी काम करने से जिसको थकावट आती हो, उदासीन रहता हो, एकान्तवासी हो जिसकी स्मृति दुर्बल हो गई हो, पहले मानसिक थकावट होती हो और बाद में शरीर भी थक जाता हो, दुःख और आघात

का सा प्रभाव होता हो, चिरस्थायी उदासीनता, घबराहट मे अपने विचारो को केंद्रित न कर पाने वाला, कहने के लिए किसी प्रकार के उपयुक्त शब्द न ढूढ पाने वाला, किसी बात को कठिनाई से समझ पाता हो, सिर भारी रहता हो, कानो मे शोर सुनाई देता हो, श्रवण-शक्ति मन्द हो गई हो, नाक मे उगली देने का स्वभाव बन गया हो, खट्टे पदार्थ लेने के बाद जी मिचलाता हो, अतिसार हो, बाल कम आयु मे सफेद हो जाना, घबराया, घबराया हुआ रहता हो, इस प्रकार के लक्षणो मे २०० या इससे अधिक शक्तिक्रम की मात्रा से लाभ होता है।

बच्चो के अतिसार मे अनेक बार २०० की मात्रा के सेवन कराने से सफलता प्राप्त होती रही है।

पेशाब की अधिकता के साथ यदि बेचैनी और घबराहट हो तो उसके लिए भी यह अचूक औषधि है।

पुरुषो की दुर्बलता मे भी इसका सेवन किया जाता है।

शक्तिवर्द्धन के लिए यह उत्तम औषधि मानी गई है।

पल्सेटिला (Pulsatilla)—यह विशेषतया महिलाओ के लिए मुख्य औषधि मानी गई है।

जो महिला तुरन्त रो पडती हो, भीरु हो, अनिश्चित मन हो शाम को अकेले मे जिसको डर लगता हो, बच्चो का खेलना कूदना, जल्दी से निरुत्साहित होना, लडको से जिनके मन मे भय समाता हो, अत्यधिक भावुक प्रकृति हो आज्ञाकारिणी स्वभाव, कोई विपरीत बात होने पर उसका निराकरण न कर पाने की अवस्था मे रो पडना कम बोलने वाली कि तु आँखो मे चुपचाप आँसू लाने वाली, सहानुभूति से सान्त्वना प्राप्त करने का स्वभाव हो, मासिक धर्म विलम्ब से होता हो, ठण्डी वस्तुएँ पसन्द करती हो, खुली हवा और गरम भोजन तक जिसको पसन्द न आता हो, इसके अतिरिक्त लक्षण स्थान और स्वभाव भी बदलते रहते हो, दो दस्त भी जिसको एक जैसे न होते हो कभी कुछ तो कभी कुछ पीडा भी कभी कहीं से कभी कहीं होती हो चर्बी अथवा चर्बी से बने पदार्थो के सेवन से हानि होती हो इस प्रकार के लक्षणो मे यह औषधि उत्तम है।

इसकी मात्रा ३० शक्तिक्रम की उपयुक्त है।

मासिक धर्म यदि रुक जाए तो १००० शक्तिक्रम की मात्रा देने से लाभ होता है। कभी-कभी तो एक मात्रा देने से ही रुका हुआ मासिक धर्म चालू हो जाता है।

सालिक्स नाइजरा (Salix Nigra)—जिस घबराहट का जरायु के साथ सम्बन्ध हो। यह औषधि स्त्री के समान ही पुरुषो पर भी उतना ही

काय करती है। घबराहट के साथ हिस्टीरिया हो तो उसमें उत्तम है। जरायु की तीव्रता को नियन्त्रित करती है।

हस्तमैथुन का अभ्यासी होने के उपरान्त जिसका वीर्य शीघ्र निकल जाता हो उसके लिए यह अत्युत्तम औषधि है।

कमर मे दर्द होता हो, जल्दी-जल्दी पग उठाने मे कठिनाई होती हो थोड़े से पानी मे तीस बूद औषधि मिलाकर नित्य सेवन करने से लाभ होता है।

स्त्री और पुरुष दोनो की ही जननेन्द्रियो पर यह औषधि समान रूप से प्रभाव करती है।

सेनेशियो ऑरिस (Senecio Aureus)—जो व्यक्ति किसी एक विषय पर ध्यान केन्द्रित न कर पाता हो, उदासीनता छाई रहती हो घबराहट हो, चिड़चिड़ाहट हो, बाई आँख मे पीड़ा होती हो, मासिक धर्म से पूर्व गले मे सूजन हो गई हो, इन लक्षणो मे पानी मे टिंक्चर की पाँच बूद सेवन करने से लाभ होता है।

महिलाओ के लिए यह सर्वोत्तम औषधि है।

सिपिया (Sepia)—जिसको अकेले रहने पर घबराहट और भय होता हो, अत्यधिक उदासी छाई रहती हो, दुःख और रोना आता हो, जिनसे बहुत अधिक प्रेम है उनके ही प्रति अति उदासीनता का भाव हो, परिवार के प्रति अनिच्छा, जो स्त्रियाँ बहुत जल्दी अपने मन को मसोस लेती हो, जिनका स्वभाव चिड़चिड़ा हो गालो के ऊपरी भाग पर पीलापन हो, मुखड़ा ही जिनकी पूर्ण कहानी बता देता हो, जिनकी प्रकृति बहुत ही भावुकतापूर्ण हो, जो अपने लक्षण बताते हुए भी रो पड़ती हो, जरायु के लक्षणो के साथ कब्ज रहती हो, ठण्डी हवा सहन न होती हो, मित्रो से मिलने में सकोच और घबराहट होती हो मासिक धर्म विलम्ब से और थोड़ा थोड़ा रुक रुककर आता हो, कमर मे दर्द रहता हो, दूध पीने के बाद जो महिला अस्वस्थता अनुभव करती हो, इन लक्षणो मे यह औषधि उत्तम है।

पलसटिला की ही भाति ही यह भी अधिकाश महिलाओ के लिए गहन प्रभावकारी औषधि है।

उपरिलिखित लक्षण समूह होने पर ३० या २०० शक्तिक्रम की मात्रा के सेवन कराने से लाभ होता है।

साइलीशिया (Silicea)—जिसको बहुत अधिक घबराहट होती हो चिन्तातुर रहता हो, क्रोध मे आ जाता हो, जल्दी ही जिसको दिमागी थकावट हो जाती हो, शरीर ठण्डा रहता हो, हाथ पैर ठण्डे रहते हो, पैरो

मे पसीना आता हो, सिर मे, गदन पर, पैरा पर, जूते पहने हुए बदबूदार पसीना आता हो, जो जिद्दी स्वभाव का हो, अपने विचारो का पक्का हो, थका-मांदा और हारा हुआ-सा रहता हो, गुदा मे मल रहता हो और उसके लिए जोर लगाना पडता हो जिस महिला को मासिक धम के दिनो म कब्ज रहती हो, बरफ की भाँति जिसके हाथ-पैर ठण्डे रहते हो, इन लक्षणो मे यह औषधि उत्तम है।

इस औषधि की ३० २००, १००० अथवा इससे भी अधिक शक्तिक्रम की मात्रा जैसी भी स्थिति हो लाभकारक सिद्ध होती है।

गम रक्त वाले व्यक्ति को इस दवा का सेवन कराना हानिकर होता है।

पूर्णिमा के दिन यदि रोगी की दशा और अधिक खराब होती हो तो अन्य लक्षण समूह के मिलान करने पर इसका प्रयोग अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होता है।

स्टाफीसगेरिया (Staphysagria)—जिसको बहुत घबराहट होती हो और बहुत गुस्सा आता हो किसी से झगडा हो जाने पर जिसका खाना हराम हो जाता हो, सिर मे पीडा रहती हो, झगडा भूल न सकता हो, बहुत अधिक क्रोध आता हो, भावुकता अधिक हो, लोग क्या कहेंगे की भावना मन म रहती हो पृथकता पसन्द करता हो, हर समय यौन सम्बन्धी बातो पर जिसका ध्यान जाता हो।

नव विवाहिता स्त्रियो को बार-बार पेशाब के लिए जाना पडता हो घबराहट होती हो।

इन सब लक्षणो मे यह अचूक औषधि है।

लक्षण और रोग देखकर ३० अथवा २०० शक्ति का प्रयोग किया जा सकता है।

स्ट्रेमोनियम (Stramonium)—निद्रा से जागने पर जैसे किसी वस्तु को सहसा देखकर डर सा गया हो ऐसी आकृति बनना एकान्त और अंधेरे म जिसकी स्थिति विचित्र हो जाती हो, जिसकी आँखें चौडी और फली हुई हो, चेहरा गम और लाल, हाथ-पैर ठण्डे, रक्त-प्रवाह मुखडे की ओर रहता हो हकलाना, तुतलाना, काफी प्रयत्न करने पर शब्द मुख से निकलना बहुत प्रयत्न करने पर बोल पाना, चमकदार वस्तु को देखते रहने पर जिसकी दशा बुरी हो जाती हो लगातार बोलते रहना, सन्ध्या उपासना लगातार बोलना, हँसना और प्रकाश चाहता हो, खुशी से जल्दी ही दुःख मे आ जाने वाला हो, चलते समय लडखडाना, जो अधिक बाचाल हो, इन लक्षण समूहो पर यह उत्तम औषधि है।

पहले ३० शक्ति की मात्रा से चिकित्सा आरम्भ करनी चाहिए, तीन-तीन घण्टे के अन्तर पर मात्रा दी जानी चाहिए। उसके बाद २०० शक्ति की मात्रा देने से लाभ होगा।

थूजा (Thuja)—जिस व्यक्ति के विचार पक्के हो, जैसे वह यह समझता हो कि जैसे कोई अपरिचित व्यक्ति उसके पास था आत्मा और शरीर पृथक्-पृथक थे, अथवा जो यह सोचता हो कि कोई जीवित वस्तु उसके पेट के निचले भाग मे है भावुकतापूर्ण घबराहट सगीत से जिसे रोना आता हो, कम्पन होता हो, जिसे शीघ्र और तत्काल पेशाब आने लगता हो, जिसके प्रोस्टेट ग्लैंड्स बढ रहे हो, चलते समय टाँगो को ऐसा अनुभव करना मानो लकडी अथवा शीशे की बनी हो।

इस प्रकार के लक्षणो मे २०० शक्ति की मात्रा लाभकारी होती है। बाद म बडी शक्ति का प्रयोग भी लाभकारी होता है।

ट्यूबरक्यूलिनम (Tuberculinum)—जिस व्यक्ति के परिवार मे यक्ष्मा का इतिहास मिलता हो, कुत्ते को देखकर जिसको घबराहट होती हो, पशुओं से भय लगता हो उदासी रहती हो क्रोध आता हो, जिसकी इच्छा अशिष्ट भाषा का प्रयोग करने की करती हो, शाप देने अथवा शपथ लेने का स्वभाव हो किसी भी साधारण कष्ट मे ठीक औषधि का प्रभाव न होता हो, कष्ट बार-बार आता हो टी० बी० से परिवार मे पूर्व मे किसी की मृत्यु का होना, इन लक्षणो मे यह लाभकारी औषधि है।

इस औषधि को बडी शक्ति मे सेवन कराना चाहिए। एक मात्रा का प्रभाव देखना चाहिए शीघ्र ही दूसरी मात्रा देना उचित नहीं है। इसका प्रभाव गहरा होता है।

वेलेरियाना (Valeriana)—जिसको अत्यधिक घबराहट रहती हो जिसकी प्रकृति बार बार बदलती रहती हो, स्वय का इतना हलका अनुभव करना कि मानो हवा मे तैर रहा हो हिस्टीरिया, सिर मे अधिक ठण्डक अनुभव करना मासिक धर्म का विलम्ब से और रुकावट के साथ आना, गर्म का जोर और घबराहट, इन लक्षणो मे यह औषधि लाभकारी है।

२०० शक्तिक्रम की मात्रा देनी उपयुक्त है।

वेट्रम एल्बम(Vetrum Album)—व्यक्ति का मतप्राय हो जाना, ठण्डा, नीला, माथे पर पसीने की बूद झलकना, नाडी का बहुत धीमा होना, किसी भी कष्ट के होने पर ठण्डा पसीना आना, पीला मुख रहना, उदासी, बुद्धुओ की भाँति बैठे रहना, निरुद्देश्य घर से बाहर घूमते रहना, दुर्भाग्य के भ्रम से ग्रस्त रहना, आक्रोश, वस्तुओ को काटने, फाडने, तोडने, फोडने की इच्छा होना, उलटी के साथ सिर पीडा होना, अतिसार, फिर

मे पसीना आता हो, सिर मे, गरदन पर, पैरो पर पसीना आता हो, जो जिद्दी स्वभाव का हो, थका माँदा और हारा हुआ-सा रहता हो, ...लिए जोर लगाना पडता हो जिस महिला ... कब्ज रहती हो, बरफ की भाँति ... हो ... मे यह औषधि उत्तम है।

इस औषधि की ३०, २००, १००० अथवा ... की मात्रा, जैसी भी स्थिति हो लाभकारक सिद्ध ...

गर्म रक्त वाले व्यक्ति को इस दवा का से... है।

पूर्णिमा के दिन यदि रोगी की दशा और अन्य लक्षण समूह के मिलान करने पर इसक... सिद्ध होता है।

स्टाफीसगेरिया (Staphysagria)—जिसे ... और बहुत गुस्सा आता हो, किसी से झगडा ... हराम हो जाता हो, सिर मे पीडा रहती हो, बहुत अधिक क्रोध आता हो, भावुकता और ... भावना मन मे रहती हो, पृथकता पसन्द करे ... बातो पर जिसका ध्यान जाता हो।

नव विवाहिता स्त्रियो का बार-बार ... घबराहट होती हो।

इन सब लक्षणो मे यह अचूक औषधि ... लक्षण और रोग देखकर ३० अथवा ... सकता है।

स्ट्रैमोनियम (Stramonium)—नि... को सहसा देखकर डर सा गया हो ऐसी ... *मे जिसकी स्थिति विचित्र हो जाती हो* हुई हो चेहरा गर्म और लाल हाथ पैर ... रहता हो हकलाना, तुतलाना ... निकलना, बहुत प्रयत्न करने पर बोल... रहने पर जिसकी दशा बुरी हो ... उपासना लगातार बोलना हँसना और ... *ही दुःख मे आ जाने वाला हो, चलते समय* हो, इन लक्षण समूहो पर यह उत्तम औषधि

बहुत मयपूर्ण लक्षण है। किसी सन्नामक केस म लक्षण लिखते समय यहीं से उसका प्रारम्भ होना चाहिए कि रोगी की विशेष इच्छा किस वस्तु क लिए होती है अर्थात् किस वस्तु क बिना वह रह नही सकता। इसे अग्रेजी म क्रेज (Craze) कहते हैं। उदाहरण के रूप म कोई कच्चा उबला हुआ अण्डा अथवा आमलेट पसन्द करता है, उसके बिना उसे भोजन अच्छा नही लगता। उसे अण्डा दे दो तो वह प्रसन्न है, फिर उसे कुछ और नही चाहिए चाहे कितनी सब्जियाँ बनी हो, अण्डे के बिना उसे खाने का आनन्द ही नही आता। इसी प्रकार कोई अन्य कच्चा मीठा पसन्द करता है, किसी अन्य की नमकीन के प्रति अधिक रुचि है। गर्म और ठण्डा पसन्द होना भी एक रुचि है यह भी वस्तुस्थिति है। किसी को अत्यधिक गर्म पेय चाहिए और किसी का अति शीतल, किसी का गर्मी पसन्द है किसी का सर्दी कोई चाय-कॉफी से घृणा करता है कोई उसके बिना रह नहीं सकता।

आदत एक भिन्न बात है। ऐसे ही किसी की आदत पड सकती है। जैसे शराब, सिगरेट, अफीम आदि की आदत है। इस अध्याय के उपसहार मे हमने इस प्रसग म विस्तार से विचार किया है कि आदतो से मनुष्य को किस प्रकार मुक्ति मिल सकती है और इसके लिए किस किस औषधि का सेवन करना चाहिए।

यहाँ पर हम केवल मनुष्य की रुचि और अरुचि के विषय म विचार कर रहे हैं। इसके फलस्वरूप रोग का समझने और उसके लिए औषधि चयन करने मे सहायता होती है। कोई रोगी पानी बहुत पीता है और इसके विपरीत किसी का मन कुछ पीने का करता ही नहीं। कोई ऐसा भी होता है कि उसको प्यास तो लगती है किन्तु पानी पीने से उसको अरुचि है। अपनी प्यास बुझाने के लिए वह शबत अथवा कोई अन्य शीतल पेय रुचिकर मानता है। एक अन्य व्यक्ति हो सकता है जिसको कि प्यास ही नही लगती। तीसरा व्यक्ति ऐसा हो सकता है जो बार-बार दो दो घूट पानी माँगता है, बेचैनी के कारण उसकी जीभ सूखती जाती है।

ऐसा भी कोई रोगी अथवा व्यक्ति हो सकता है जिसकी जीभ देखने म शुष्क है। मुख सूखा पडा है फिर भी उसको पानी की इच्छा नही है। कुछ नॉर्मल व्यक्ति भी देखने मे आते हैं जिनको निरन्तर दो तीन घण्टे बाद प्यास लगती है। वे चाहे गम पदार्थ खायें अथवा ठण्डे, मौसम सर्दी का हो चाहे गर्मी का। कई ऐसी महिलाएँ भी है जिनको गर्मियो मे भी प्यास नही लगती और न ही ठण्डा पीने की इच्छा करती है।

ये सब विभिन्न औषधियो के दर्पण हैं। इसी प्रकार खट्टे मीठे पदार्थों के प्रति भी रुचि अरुचि होती है।

यदि ठण्डा पसीना हो तो इस प्रकार के लक्षणों की घबराहट में यह औषधि सर्वोत्तम है।

३० शक्तिक्रम की मात्रा से ही सफलता मिलती है।

जैन्थॉक्साइलम (Xanthoxylum)—जो व्यक्ति घबराया हुआ, डरा हुआ उत्साहहीन हो, घबराने की जिसकी आदत ही हो गई हो, मुख पर खुश्की रहती हो।

छ या तीस शक्ति की मात्रा का प्रयोग लाभकारी होता है।

जिंकम मेटलिकम (Zincum Metallicum)—जिसका शोर सहन न होता हो, अति दुर्बल हो, घबराहट होती हो, बच्चे को जो बात कही जाय उसको दोहराने का स्वभाव हो, व्यक्ति का किसी काल्पनिक अपराध के कारण पकड़े जाने का भय सताता हो, कम्पन होता हो, चौंक पड़ता हो, पाँव में बेचैनी पाँव ठण्डे और हर समय हिलाने का स्वभाव हो नींद में चिल्ला उठना, नींद में घबराहट से पाँव हिलाना, मासिक धर्म के दिनों में हीन अवस्था, यह अवस्था सायंकाल ५ और ७ बजे के मध्य रहती हो, खाते समय अच्छा अनुभव करना पीठ में पीड़ा का होना, दिमागी उदासी, थकावट, इन सब लक्षणों में इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

२०० शक्ति की मात्रा देने से लाभ होता है।

इच्छा और अरुचि

इच्छा, अनिच्छा, रुचि और अरुचि किसी भी मनुष्य के मन का दर्पण होती हैं। जब मनुष्य रोगी हो तो उस अवस्था में उसकी रुचि अरुचि चिकित्सक के लिए औषधि का चयन करने हेतु बहुत महत्त्वपूर्ण है। कई बार ऐसा देखा गया है कि केवल रुचि अथवा अरुचि के मुख्य लक्षण पर ठीक औषधि का चुनाव करने में चिकित्सक सफल हो जाता है और इस प्रकार रोगी की दशा में तत्काल सुधार हो जाता है। देखने वाले समझते हैं कि चिकित्सक ने तो यह चमत्कार ही करके दिखाया है किन्तु जो कुछ सुशिक्षित हैं व आजकल की भाषा में उसे यथोचित निदान कहते हुए उसकी प्रशंसा करते हैं।

होमियोपैथी साइंस के दर्शन के अनुसार इच्छाएँ और अनिच्छाएँ

बहुत भयपूर्ण लक्षण है। किसी सक्रामक केस में लक्षण लिखते समय यहीं से उसका प्रारम्भ होना चाहिए कि रोगी की विशेष इच्छा किस वस्तु के लिए होती है अर्थात् किस वस्तु के बिना वह रह नहीं सकता। इसे अंग्रेजी में क्रेज (Craze) कहते हैं। उदाहरण के रूप में कोई बच्चा उबला हुआ अण्डा अथवा आमलेट पसन्द करता है, उसके बिना उसे भोजन अच्छा नहीं लगता। उसे अण्डा दे दो तो वह प्रसन्न है, फिर उसे कुछ और नहीं चाहिए चाहे कितनी सब्जियाँ बनी हों, अण्डे के बिना उसे खाने का आनन्द ही नहीं आता। इसी प्रकार कोई अन्य बच्चा मीठा पसन्द करता है, किसी अन्य का नमकीन के प्रति अधिक रुचि है। गर्म और ठण्डा पसन्द होना भी एक रुचि है यह भी वस्तुस्थिति है। किसी को अत्यधिक गर्म पेय चाहिए और किसी को अति शीतल, किसी का गर्मी पसन्द है किसी को सर्दी कोई चाय-काफी से घृणा करता है कोई उसके बिना रह नहीं सकता।

आदत एक भिन्न बात है। ऐसे ही किसी को आदत पड सकती है। जैसे शराब, सिगरेट, अफीम आदि की आदत है। इस अध्याय के उपसंहार में हमने इस प्रसंग में विस्तार से विचार किया है कि आदतों से मनुष्य को किस प्रकार मुक्ति मिल सकती है और इसके लिए किस-किस औषधि का सेवन करना चाहिए।

यहाँ पर हम केवल मनुष्य की रुचि और अरुचि के विषय में विचार कर रहे हैं। इसके फलस्वरूप रोग को समझने और उसके लिए औषधि चयन करने में सहायता होती है। कोई रोगी पानी बहुत पीता है और इसके विपरीत किसी का मन कुछ पीने को करता ही नहीं। कोई ऐसा भी होता है कि उसको प्यास तो लगती है किन्तु पानी पीने से उसको अरुचि है। अपनी प्यास बुझाने के लिए वह शर्बत अथवा कोई अन्य शीतल पेय रुचिकर मानता है। एक अन्य व्यक्ति हो सकता है जिसको कि प्यास ही नहीं लगती। तीसरा व्यक्ति ऐसा हो सकता है जो बार-बार दो दो घूट पानी माँगता है बेचैनी के कारण उसकी जीभ सूखती जाती है।

ऐसा भी कोई रोगी अथवा व्यक्ति हो सकता है जिसकी जीभ देखने में शुष्क है। मुख सूखा पड़ा है फिर भी उसको पानी की इच्छा नहीं है। कुछ नार्मल व्यक्ति भी देखने में आते हैं जिनको निरन्तर दो-तीन घण्टे बाद प्यास लगती है। वे चाहे गर्म पदार्थ खायें अथवा ठण्डे, मौसम सर्दी का हो चाहे गर्मी का। कई ऐसी महिलाएँ भी हैं जिनको गर्मियों में भी प्यास नहीं लगती और न ही ठण्डा पीने की इच्छा करती हैं।

ये सब विभिन्न औषधियों के दर्पण हैं। इसी प्रकार खट्टे-मीठे पदार्थों के प्रति भी रुचि अरुचि होती है।

यदि ठण्डा पसीना हो तो इस प्रकार के लक्षणों की घबराहट में यह औषधि सर्वोत्तम है।

३० शक्तिक्रम की मात्रा से ही सफलता मिलती है।

जसथॉक्साइलम (Xanthoxylum)—जो व्यक्ति घबराया हुआ, डरा हुआ उत्साहहीन हो, घबराने की जिसकी आदत ही हो गई हो, मुख पर सुर्खी रहती हो।

छः या तीस शक्ति की मात्रा का प्रयोग लाभकारी होता है।

जिंकम मेटलिकम (Zincum Metallicum)—जिसका शरीर सहन न होता हो, अति दुर्बल हो, घबराहट होती हो, बच्चे को जो बात कही जाय उसको दोहराने का स्वभाव हो, व्यक्ति का किसी काल्पनिक अपराध के कारण पकड़े जाने का भय सताता हो, कम्पन होता हो, चौंक पड़ता हो, पाँव में बेचैनी, पाँव ठण्डे और हर समय हिलाने का स्वभाव हो, नींद में चिल्ला उठना, नींद में घबराहट से पाँव हिलाना, मासिक धर्म के दिनों में हीन अवस्था, यह अवस्था सायंकाल ५ और ७ बजे के मध्य रहती हो, खाते समय इच्छा अनुभव करना, पीठ में पीड़ा का होना, दिमागी उदासी, थकावट, इन सब लक्षणों में इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

२०० शक्ति की मात्रा देने से लाभ होता है।

इच्छा और अरुचि

इच्छा, अनिच्छा, रुचि और अरुचि किसी भी मनुष्य के मन का दर्पण होती हैं। जब मनुष्य रोगी हो तो उस अवस्था में उसकी रुचि-अरुचि चिकित्सक के लिए औषधि का चयन करने हेतु बहुत महत्वपूर्ण है। कई बार ऐसा देखा गया है कि केवल रुचि अथवा अरुचि के मुख्य लक्षण पर ठीक औषधि का चुनाव करने में चिकित्सक सफल हो जाता है और इस प्रकार रोगी की दशा में तत्काल सुधार हो जाता है। देखने वाले समझते हैं कि चिकित्सक ने तो यह चमत्कार ही करके दिखाया है किन्तु जो कुछ सुशिक्षित हैं व आजकल की भाषा में उसे 'यथोचित निदान' कहते हुए उसकी प्रशंसा करते हैं।

होमियोपैथी साइंस के दर्शन के अनुसार इच्छाएँ और अनिच्छाएँ

बहुत अर्थपूर्ण लक्षण हैं। किसी संक्रामक केस में लक्षण लिखते समय यहीं से उसका आरम्भ होना चाहिए कि रोगी की विशेष इच्छा किस वस्तु के लिए होती है अर्थात् किस वस्तु के बिना वह रह नहीं सकता। इसे अंग्रेजी में क्रेज (Craze) कहते हैं। उदाहरण के रूप में कोई बच्चा उबला हुआ अण्डा अथवा आमलेट पसन्द करता है, उसके बिना उसे भोजन अच्छा नहीं लगता। उसे अण्डा दे दो तो वह प्रसन्न है, फिर उसे कुछ और नहीं चाहिए चाहे कितनी सब्जियाँ बनी हों, अण्डे के बिना उसे खाने का आनन्द ही नहीं आता। इसी प्रकार कोई अन्य बच्चा मीठा पसन्द करता है, किसी अन्य को नमकीन के प्रति अधिक रुचि है। गर्म और ठण्डा पसन्द होना भी एक रुचि है यह भी वस्तुस्थिति है। किसी को अत्यधिक गर्म पेय चाहिए और किसी को अति शीतल, किसी को गर्मी पसन्द है किसी को सर्दी कोई चाय कॉफी से घृणा करता है कोई उसके बिना रह नहीं सकता।

आदत एक भिन्न बात है। ऐसे ही किसी को आदत पड़ सकती है। जैसे शराब, सिगरेट, अफीम आदि की आदत है। इस अध्याय के उपसंहार में हमने इस प्रसंग में विस्तार से विचार किया है कि आदतों से मनुष्य को किस प्रकार मुक्ति मिल सकती है और इसके लिए किस-किस औषधि का सेवन करना चाहिए।

यहाँ पर हम केवल मनुष्य की रुचि और अरुचि के विषय में विचार कर रहे हैं। इसके फलस्वरूप रोग को समझने और उसके लिए औषधि चयन करने में सहायता होती है। कोई रोगी पानी बहुत पीता है और इसके विपरीत किसी का मन कुछ पीने को करता ही नहीं। कोई ऐसा भी होता है कि उसको प्यास तो लगती है किन्तु पानी पीने से उसको अरुचि है। अपनी प्यास बुझाने के लिए वह शर्बत अथवा कोई अन्य शीतल पेय रुचिकर मानता है। एक अन्य व्यक्ति हो सकता है जिसको कि प्यास ही नहीं लगती। तीसरा व्यक्ति ऐसा हो सकता है जो बार-बार दो दो घूंट पानी माँगता है, बेचैनी के कारण उसकी जीभ सूखती जाती है।

ऐसा भी कोई रोगी अथवा व्यक्ति हो सकता है जिसकी जीभ देखने में शुष्क है। मुख सूखा पड़ा है फिर भी उसको पानी की इच्छा नहीं है। कुछ नार्मल व्यक्ति भी देखने में आते हैं जिनको निरन्तर दो तीन घण्टे बाद प्यास लगती है। वे चाहे गर्म पदार्थ खायें अथवा ठण्डे, मौसम सर्दी का हो चाहे गर्मी का। कई ऐसी महिलाएँ भी हैं जिनको गर्मियों में भी प्यास नहीं लगती और न ही ठण्डा पीने की इच्छा करती है।

ये सब विभिन्न औषधियों के दर्पण हैं। इसी प्रकार खट्टे मीठे पदार्थों के प्रति भी रुचि अरुचि होती है।

मनुष्य के स्वभाव मे भी कुछ इसी प्रकार का अन्तर होता है। कोई बच्चा थपथपाना और हँसी मजाक करना पसन्द करता है किन्तु दूसरा बच्चा ऐसा किये जाने पर चिढ जाता है। किसी की चुपचाप बैठकर पढने म रुचि है किन्तु दूसरे को खेल-कूद पसन्द है, उसके लिए टिककर बैठना कठिन है।

ये वे सब बातें हैं जिनको पूछकर, जानकर और समझकर चिकित्सक रोग अथवा रोगी का लक्षण जानता है और फिर उसके आधार पर औषधि का चयन किया जाता है। जब इच्छाएँ (Longings and Desires) उग्र रूप धारण कर लेती हैं और वे जीवन का अग बन जाती हैं तो फिर ऐसा समय भी आ जाता है कि जब रोगी स्वय उससे तग आ जाता है और वह उसकी चिकित्सा कराना चाहता है। अधिकता तो किसी भी वस्तु की अच्छी नही होती, वह बुरी है। इसलिए जिसके लिए तीव्र इच्छा अथवा अनिच्छा निरन्तर बनी रहे उसे लक्षण मानकर औषधि का सहारा लेकर लाभ उठाया जा सकता है। उसके प्रयोग से मनुष्य की इच्छा सामान्य हो जायेगी।

हम इस प्रकरण मे पहले इच्छाएँ और रुचियो का ही वर्णन कर रहे हैं। किस वस्तु की अधिक इच्छा पर व्यक्ति को किस औषधि का सेवन करना उपयोगी है।

इच्छाएँ व रुचियाँ

इस प्रसग म सर्वप्रथम हम खाने की वस्तुओं के प्रति अत्यधिक रुचि और उसके लिए औषधि का उल्लेख कर रहे है।

रोटी—इसे तो सामान्यतया सभी खाते हैं। किन्तु यहाँ इसका उल्लेख किसी प्रयोजन विशेष से किया जा रहा है। कोई व्यक्ति किसी भी समय रोटी खाने के लिए मिलने पर सन्तुष्ट रहता है, उसे अन्य किसी भी ऊट-पटाग खाद्य-पदार्थ मे किसी प्रकार की रुचि नही है। इस स्वभाव के कारण अर्थात इसमे किसी प्रकार का नियम न होने के कारण उसमे अनेक लक्षण उत्पन्न हो सकते हैं।

इस इच्छा पर कुछ सफल एव प्रभावकारी औषधियाँ होमियोपैथी म हैं। उनके नाम हैं—

एलो (Aloe), बैलाडोना (Belladonna), बोविस्टा (Bovista), इग्नेशिया (Ignatia), मैगनेशिया फॉस (Magnuesia Phos), कालासिंथ (Colocynth), साइलीशिया (Silicea), नेट्रम म्यूर (Natrum Mur) ओपियम (Opium), हाइड्रास्टिस (Hydrastis), प्लम्बम (Plumbum)।

इन ओषधियो मे से कोई एक ओषधि सदा रोटी खाने की इच्छा वाले व्यक्ति के लिए चयन की जा सकती है किन्तु इसमे उन लक्षणो पर विशेष ध्यान देना होगा जिनका उल्लेख पिछले अध्याय मे किया गया है।

गेहूँ की रोटी की इच्छा के लिए विशेष ओषधि का उल्लेख है। उसे औरम मेटलिकम कहते हैं।

मक्खन वाली रोटी—जिस प्रकार डबल रोटी पर मक्खन लगाकर खाने से किसी को तृप्ति होती है। जिसका सदा ही मक्खन-टोस्ट खाने को मन करता हो। यदि किसी व्यक्ति का किसी वस्तु के लिए सदा जी ललचाता रहे तो यह उचित नही है। इस स्वभाव का सामान्य करना अत्यन्त आवश्यक है। अन्यथा यदि यह स्वभाव बढता ही गया तो मनुष्य रोगग्रस्त हो सकता है।

इस लक्षण पर भी विशेष ओषधियो का उल्लेख है। वे हैं—

मर्क साल(Merc Sol) फैरम मर्टलिकम

यह दोनो ओषधियाँ उन व्यक्तियो के लिए उपयोगी हैं जिनमे रक्त की कमी तथा एनिमिया हो।

मक्खन रोटी की बहुत अधिक अर्थात अस्वाभाविक भूख हो तो उसके लिए निम्न ओषधि का प्रयोग लाभकारी होता है—

एगेरिकस मसकेरिस।

मक्खन—मक्खन की तीव्र इच्छा रहने पर मर्क विवस का प्रयोग लाभकारी होता है।

बिस्कुट—सदा बिस्कुट खाने की जिसकी रुचि रहती है उसके लिए प्लम्बम लाभकारी होता है।

अण्डा—अण्डा खाने की इच्छा म यदि इच्छा तला हुआ खाने की हो तो नेट्रम फॉस (Natrum Phos) और यदि नम उबला हुआ खाने की इच्छा रहती हो तो कल्केरिया कार्ब, ओलियम हाइड्रेस्टस का प्रयोग उपयोगी है।

मछली—सदा मछली खाने की इच्छा बनी रहने पर नेट्रम म्यूर सफल ओषधि है।

केक पेस्ट्री—इसकी इच्छा निवारण के लिए प्लम्बम का सेवन लाभकारी होता है।

नीचे हम इच्छाओं और उनके सम्मुख उनकी निवारण चिकित्सा का विस्तार से वर्णन कर रहे हैं—

पनीर	एसटेरियस रूबेंस, इग्नेशिया।
चॉक्लेट	हाइड्राफोबिनम, लेपिडियम, रोनरियस।
बादाम, अखरोट	क्यो बेंबा।
बीयर	नक्स वोमिका, कास्टीकम, रसटाकस, कार्ब्स, नेट्रम कार्ब, स्पाइजिलिया, सल्फर, सेबाडिल्ला।
ब्राण्डी, शराब	सैलिनियम फेरम फॉस, नक्स वोमिका, ओपियम, आर्सेनिकम एल्बम, कलकेरिया कार्ब।
ठण्डे पेय	साइना ओविस्टा, नेट्रम सल्फ, फासफेरिक एसिड, नेट्रम म्यूर, सैबाडिल्ला, थूजा, रस टाक्स, सल्फर, वेट्रम एल्बम।
दूध	एनाकार्डियम, फासफोरिक ऐसिड आर्सेनिकम एल्बम, ओरम मेटेलिकम, नक्स वामिका, चैलिडानियम रस टाक्स, साइलीशिया।
दूध ठण्डा	रस टाक्स फासफेरिक एसिड, सबाडिल्ला।
दूध खट्टा	एण्टम टाट।
प्याज	क्योबेवा।
सन्तरा	क्योबेवा।
सेब	एलो, एण्टिम टाट।
चैरीज	चाइना।
फाड्	सल्फोरिक एसिड।
नीबू	आर्सेनिकम एल्बम।
हरे फल	कलकेरिया कार्ब लैपटेण्डरा।
बर्फ	मक कौर।
आइसक्रीम	यापिटोरियम पफ।
मांस सूखा हुआ	
सूअर	मैजेरियम।
मांस नमकीन	कारेलियम रूबरम।
मांस भुना हुआ	कास्टीकम।
मांस	नेट्रम म्यूर, सल्फर फेरम मेट।
तला भोजन	प्लम्बम।

शहद	सैंबाडिल्ला।
लेमोनेड	सबाइना, बैलाडोना, सैंबाडिल्ला।
कच्चे चावल	एलोमीना।
सलाद	लेपटगडरा, एल्म कारलेनिनस।
कच्चा भोजन	सइलीशिया, टुटुला।
आलू कच्चे	कलनेरिया काब।
आलू	आलीयम।
हलवा	सैंबाडिल्ला।
चटनी	नक्स वोमिका।
मीठी चाय	हीपर सल्फर।
तम्बाकू सिगरेट	कार्बो एनिमलिस, लैडम पाल, लाइकोपोडियम, हैमामलिस।
गम पेय	मक कौर।
गम भोजन	क्योप्रम, मेटैलिकम, फैरम मेटनिकम।
गम सूप	फैरम मेटैलिकम।
मिष्ठान	सल्फर, नक्स वोमिका, इपिकाक, लाइकोपोडियम।
मीठा चीनी वाला पानी	अफो, सल्फर।
कच्चा आटा	सैंबाडिल्ला।
स्टाच	एलोमीना, नाइट्रिक एसिड।
लाल मिर्च	मक कौर।

अरुचियाँ

रोटी खाने से अरुचि	नैट्रम म्यूर, आलियम, फासफेरिक एसिड, नक्स वामिका।
गेहूँ की रोटी से अरुचि	चैना पोडियम।
शोरबे से अरुचि	आर्निका, ग्रेफाइटिस, रस टाक्स, बैलाडाना।
मक्खन	आर्सेनिकम एल्बम, नैट्रम फॉस।
पनीर	चलिडानियम मेजस।
चॉकलेट	औसमीयम ट्रनटुला।
काफी	बैलाडोना, नक्स वामिका, नेट्रम म्यूर, लाइको।
काफी बिना चीनी	रह्यूम।
ठण्डा भोजन	चलिडानियम, साइक्लामैन।

मिष्ठान	फासफोरस, ब्रेटा कार्ब, कास्टीकम, मर्कसाल, ग्रफाइटस, सल्फर, आर्सेनिकम।
चाय	कार्बालिक एसिड, ठिया।
पका हुआ खाना	इग्नेशिया, लैकेसिस, लाइको, साइलीशिया चैलिडोनियम।
अल्पाहार म अरुचि	लाइकोपोडियम, कोनियम, मेगनेशिया सल्फ।
रात्रि भाजन से अरुचि	कार्बो एनिमलिस, कोक्कस, कैक्ट्री, नेट्रम एलवम।
ब्राण्डी, शराब	इग्नेशिया, मर्क साल, रस टाक्स।
अण्डा	फेरम मेटैलिकम।
चर्बीयुक्त तथा भारी भाजन	अगस्तुरा कलकेरिया कार्ब, कौलचीकम, सिपिया, रस टाक्स, हीफर सल्फर, नट्रम म्यूर।
मछली	कौल्चीकम, नैट्रम म्यूर, जिंक मैटेलिकम।
भोजन	कौल्चीकम ब्रायोनिया, अर्जेनटम नाइट्रीकम सिमिसिल्यूजा, नक्स वामिका सिपिया साइलिशिया, लाइको, नेट्रम फॉस।
गम खाना	बैलाडोना, लेकेसिस, प्रटोलियम, इग्नेशिया, जिंक मेटैलिकम।
फल	ब्रेटा कार्ब, इग्नेशिया।
केला	एलैप्स कोरालिनस।
खुमानी, झाड़ू	ब्रेटा कार्ब।
लहसुन	सैबाडिल्ला।
समुद्री मछली	फासफोरस।
मास	म्यूरेटिक एसिड, साइलिशिया, एबिस कैना डेनसिस, कास्टीकम सल्फर, लाइको, जिंकम मेटलिकम।
सूअर का मास	सोरिनम, कोल्चीकम, ड्रोजेरा।
आलू	थूजा।
हलुआ	कारसेनिकम एल्बम, फासफोरस।
चावल का भाजन	कलकेरिया कार्ब, कोलचीनम, ब्रायोनिया हीपर सल्फर सिपिया, मेगनम।
खट्टे पदाथ	एबिस कैनाडेनसिस, फेरम मेटैलिकम, बेला-

	डोना, इगनेशिया, नक्स वोमिका, फासफारिक एसिड।
नमकीन पदार्थ	एसिटिक एसिड, कार्बो वेज, ग्रेफाइटिस, नैट्रम म्यूर सलेनियम, साइलीशिया।
सिगरेट	क्लेमिटिस, नेट्रम सल्फ, काफिया, प्लेण्ड, ओपियम।
सब्जियाँ	बेलाडोना, हैलीबोरस नाइजर, हाईड्रेसटस, मगनेशिया कार्ब, म्यूर, रूटा।
पानी	बेलाडोना, केलिडियम, नक्स वोमिका, लायकोपोडियम, स्टेमोनियम।
ठण्डा पानी	कास्टीकम, टेबेकम, क्लेडियम, नेट्रम म्यूर, बर्यालिया।

कुछ विचित्र रुचि-अरुचियाँ

हर समय समागम की इच्छा होना या ऐसी बातों पर ध्यान	स्टाफेसगेरिया। इससे हृदय की शुद्धि हो जाती है।
बच्चों को पीटने की इच्छा	कैलिडोनियम।
स्त्री के प्रति अरुचि	पल्सटिला।
बच्चों के प्रति अरुचि	प्लाटिना २०० या अधिक।
बच्चों को पाने में रुचि/इच्छा	आक्सालिक एसिड २०० शक्ति।
अपने बच्चों को पसन्द न करना	ग्लोनाइन, लाइको।
अपने बच्चों को पसन्द न करना विशेषतया छोटी लड़कियों को	रफनिस।
अपने बच्चों से पलायन	लाइकोपोडियम।

इस, इच्छाएँ और रुचियाँ प्रकरण में वर्णित सभी ओषधियों की मात्रा सामान्यतया २०० शक्तिक्रम की उपयुक्त है। आवश्यकता पड़ने पर उससे ऊँची शक्ति अर्थात् १०००, १०,००० की मात्रा का भी सेवन किया अथवा कराया जा सकता है।

विवाहित जीवन का आनन्द और सयम

विवाहित जीवन का वास्तविक आनन्द तो स्व नियन्त्रण म निहित होता है। इसे सामान्य भाषा म सयम कहा जाता है। पुराने जमाने स ही लोग कहते आये है 'सहज पके सो मीठा होय'। किन्तु सहज पकने देने के लिए जिस सयम की आवश्यकता होती है धैर्य की आवश्यकता होती है वह आज के आपाधापी के जीवन मे दुलभ ह।

मनुष्य मे चाहे वह नर हो अथवा नारी, यौवन आया नही कि आशा और आकाक्षाएँ उमडने लगती हैं। युवक युवतियाँ अपने शरीर मे द्रुत गति से होने वाले विकास और स्फूर्ति का अनुभव करते हुए विभिन्न प्रकार की कल्पनाओ मे ग्रस्त होने लगते है। वे मन ही-मन अपने भावी जीवन की योजनाएँ बनाने लगते ह।

मनुष्य का भोजन सन्तुलित हो स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण हो, युवक युवतियाँ यम नियमो का पालन करने वाले हो तो वे अपने जीवन की गाडी का ठीक दिशा म ले चलने की योजना बना सकते है। समय पर जीवन का उपयुक्त रस प्राप्त करने के लिए उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करनी आवश्यक है और इस प्रतीक्षा के लिए सयम की आवश्यकता पडती है। उसको सफल बनाने क लिए सहज पके सो मीठा होय की कहावत का चरिताथ किया जाय तो उत्तम ह अर्थात धैय और सयम स काम किया जाय।

इसके विपरीत यदि कुशिक्षा, अश्लील मनोरजनयुक्त वातावरण तथा ऐसे विचारो वाले मित्रो की सगति मिल जाय तो फिर उस युवक अथवा युवती को परमात्मा ही बचा सकता है। बस, एक बार फिसले कि फिर ढलान की ओर फिसलते ही चले जायेंगे।

ऐसे व्यक्तियो का विवाह हो जाने पर भी उनका यह आभास नही हो पाता कि वास्तविक आनन्द है क्या ? यदि पुरुष धनी है तो फिर कदाचित इसका आभास कम होता है क्योंकि धन-वहुत कुछ कमियो को छिपाने मे अस्थायी रूप से सहायता कर देता है। किन्तु उस समय वडी कठिनाई आती है जब ऐसे लोगो के सन्तान नही होती है होती भी है तो अपाहिज अथवा

रोगी होती है या फिर गर्भपात ही हो जाता है।

विवाहित जीवन का वास्तविक आनन्द कहाँ है? इस पर विचार करना और फिर उसका स्रोत खोज निकालना उनके वश की बात नहीं है। समय जब निकल जाता है उसके बाद यदि होश आया तो क्या आया, उस समय कुछ करने से कुछ नहीं बन सकता।

इस पृष्ठभूमि में इस अध्याय में हम कुछ ऐसी बातों का उल्लेख करना उपयुक्त समझते हैं जिन पर शिक्षा काल में अथवा विवाह से पूर्व ध्यान देना उचित होता है।

मनुष्य की किशोरावस्था सबसे अधिक सोच विचार करने की अवस्था होती है। लड़कियाँ तो तेरह वर्ष की आयु में सामान्यतया रजस्वला होना आरम्भ हो जाती हैं। ऊष्ण प्रदेशों में १२ वर्ष की आयु या इससे कम आयु में ही मासिक धर्म आरम्भ हो जाता है। सामान्यतया तेरह वर्ष की आयु तक तो सब स्थानों पर आरम्भ हो ही जाता है, अत्यन्त शीतयुक्त स्थानों की बात दूसरी है।

पन्द्रह वर्ष की आयु तक पहुँचते-पहुँचते किशोरों की मूछें फूटने लगती हैं। लड़के और लड़कियाँ, दोनों के ही बगलों में बाल उगने लगते हैं, इस प्रकार यह समझा जाता है कि वह आयु यौवन में पदार्पण की है।

इस अवस्था में उनको अपने वास्तविक अस्तित्व का ज्ञान होने लगता है। उस समय मन में टीस-सी उठती है, यौन क्रिया सम्बन्धी इच्छाएँ भी उस अवस्था में प्रस्फुटित होने लगती हैं। जिन परिवारों में मांसाहार आदि प्रचलित है उनमें ये इच्छाएँ जल्दी ही व्याकुल करने वाली सिद्ध होती हैं किन्तु जिनके घर का वातावरण, खान पान, रहन सहन सामान्य है और बाहर भी जिनको स्वच्छ वातावरण मिलता है, उनके लिए अधिक कठिनाई नहीं होती। उनकी किशोरावस्था सामान्य-सी चलती जाती है और उनका विद्यार्थी जीवन भी सुगमतापूर्वक निकल कर वे पूर्ण यौवन को प्राप्त हो जाते हैं। विवाह से पूर्व उनकी कुछ हानि नहीं होती।

यह मान्यता प्रचलित है कि स्वास्थ्य के लिए वीर्य रक्षा महत्त्वपूर्ण है। इस अवस्था में युवक-युवती का परस्पर समागम दोनों के लिए हानिकर होता है। जो युवक युवती मानसिक रूप से अस्वस्थ होते हैं वे हस्तमैथुन, स्वप्नदोष, मासिक धर्म में खराबी, ल्युकोरिया आदि आदि यौन रोगों से ग्रस्त हो जाया करते हैं। यह बात इस युग में सामान्यतया देखने में आती भी है। एक बार युवक अथवा युवती इस फेर में पड़ा कि फिर उसका स्वास्थ्य सम्हलना तो कठिन हो ही जाता है, उसका मन भी शीघ्र स्वस्थ नहीं हो सकता। अर्थात वह कुमार्गगामी बन जाता है।

वैवाहिक जीवन में पदार्पण करने तक युवक अथवा युवती को चाहिए कि वे उस आयु में सब प्रकार से आत्म नियन्त्रण और संयम से काम लें। ऐसा करने से उनको जीवन का पूर्ण आनन्द प्राप्त होगा और उनकी आयु सुख तथा शान्ति से बीतेगी।

आहार

सामान्यतया तो सभी मनुष्यों का आहार सादा और हल्का होना आवश्यक है, तदपि किशोरावस्था के बालक बालिकाओं के लिए इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। आहार में सामान्यतया गेहूँ की रोटी, चावल, हरी सब्जियाँ, दूध और फल मुख्य हैं। सब्जियों का सूप फल और दूध यह प्रत्येक की अपनी सामर्थ्य और सुविधानुसार समय पर सेवन करने से स्वास्थ्यलाभ होता है।

समय कुसमय खाना ज्यादा, मीठा, खट्टा, बासी और चटपटा तथा गरिष्ठ भोजन अविवाहित अर्थात् किशोर किशोरियों के लिए हानिकारक है। प्रातःकाल भ्रमण करना लाभदायक है। तदनन्तर स्नान आदि से निवृत्त होकर दूध पीना चाहिए। किन्तु जो इस प्रकार नाश्ता और भोजन की अलग अलग व्यवस्था नहीं कर सकते उनके लिए यह आवश्यक है कि वे भी सस्ते पदार्थ खरीद कर अपना स्वास्थ्य सुपुष्ट रख सकते हैं। उनको यह ध्यान में रखना होगा कि कौन सा पदार्थ शक्तिवर्द्धक है कौन सा सुपाच्य है।

जिनको दूध प्राप्त नहीं है उनको चाहिए कि वे हरी सब्जियाँ और अंकुरित अनाज तथा गेहूँ भिगोकर अंकुर उगने पर उसका दलिया बनाकर खायें। इन्हें खाने से पूर्ण आहार की प्राप्ति हो जाती है। काले चना का सूप बहुत लाभप्रद होता है।

बार बार खाना अच्छा नहीं होता अतः इस विषय में संयम बरतना चाहिए। पेट भर कर खाना भी हानिकर है थोड़ा कम खाना ठीक होता है। इससे पाचन क्रिया भी ठीक रहती है।

विचार

'सदा जीवन, उच्च विचार' यह कहावत भारत में वर्षों पुरानी है। निम्न अथवा विकृत विचार मनुष्य जीवन को नर्क में धकेल देते हैं। मनुष्य के मन में जितने भी व्यर्थ के विचार उत्पन्न होंगे वे सब उसको दुखी करने में सहायक होंगे। विकृत विचारों को प्रोत्साहन मिलता है निम्नकोटि का साहित्य पठन से, भद्दे चित्र दर्शन से, चलचित्र जगत् के वातावरण की ही चर्चा करने तथा उन जैसा बनने की लालसा करने से, इनसे मनुष्य का मन विकृत हो जाता है विशेषतया किशोर किशोरियों का।

अविवाहित किशोर किशोरी इस दिशा में जितना ही कम सोचेंगे उतना ही उनको लाभ होगा, उनके वीर्य की रक्षा होगी, उनका स्वास्थ्य ठीक रहेगा और उनमें पूर्ण यौवन के सुन्दर लक्षण झलकने लगेंगे। वे रोगों से बचे रहेंगे।

इस आयु में अच्छा साहित्य पढ़ना लाभकारक होता है। उपयोगी पुस्तकें पढ़ने से ज्ञान में वृद्धि होने के साथ साथ कामकाज की बातों का भी ज्ञान होता है। इससे मन प्रफुल्लित रहता है। किन्तु इसके विपरीत अश्लील साहित्य मन को सदा बुरी ओर ही धकेलेगा।

क्रोध और भय का वातावरण अथवा इस प्रकार के विचारों का उत्पन्न होना शरीर और मन के लिए नितान्त हानिकारक होता है। क्रोध और भय के लक्षणों में क्या औषधि उचित है, इसका विस्तार से वर्णन हम इससे पूर्व के अध्यायों में कर आये हैं। अतः यदि किसी प्रकार वैसी स्थिति आ भी जाय तो उन औषधियों का उपयोग कर लाभ उठाना चाहिए।

आहार, विहार और विचार ही मानव जीवन के आधार माने गये हैं। इसके बाद बारी आती है तपस्या की। आज के जीवन में पूर्वकालीन तपस्या की भाँति जंगलों में जाकर धूनी रमाना सम्भव नहीं है। कलियुग की तपस्या का नाम है परिश्रम। जीवन उद्देश्यप्राप्ति हेतु किया जाने वाला श्रम तपस्या कहलाता है। अतः परिश्रम का भी उतना ही महत्त्व है जितना कि आहार और विचार का।

दुर्भाग्य से यदि युवक-युवतियाँ अपने जीवन में प्रविष्ट होने से पूर्व ही

यौन रोगो से ग्रस्त हो गये है तो फिर भी निराश होने की आवश्यक्ता नही। उसका निराकरण किया जा सकता है, चिकित्सा की जा सकती है। आवश्यकता केवल सदविचारो की होती है। वैसे भी जब व्यक्ति रोग ग्रस्त हो जाता है फिर उसकी बुद्धि ठिकाने आने लगती है।

ऐसे भूले भटके जनो के लिए होमियापैथी त्राणदायक सिद्ध होती है। यदि वे मन से स्वास्थ्य के नियमो का पालन करें और आवश्यकतानुसार निम्नलिखित औषधियो का प्रयोग करेंगे तो उनके रोग दूर होकर सब दुख-दर्द मिट जायेंगे। अन्यथा उनका जीवन दूभर हो जायेगा और विवाहित जीवन तो नरक के समान बन जायेगा।

यहा पर हम शृखलाबद्ध सम्भावित लक्षणो पर रोगो के अनुसार मुख्य औषधिया का उल्लेख कर रहे है।

प्रथम हम युवको के रोगो और चिकित्सा का उल्लेख कर रहे है, तदनन्तर युवतियो के रोगो आदि का करेंगे।

स्वप्नदोष

इसके उत्पन्न होने का समय यौवन मे पदार्पण करने का समय है। सोलह वर्ष की आयु प्राप्त होते होते युवको मे इस रोग की उत्पत्ति हो जाती है।

स्वप्नदोष का अभिप्राय है, स्वप्न अर्थात नीद मे वीर्यदोष अथवा वीर्यपतन। कही कही अग्रेजी मे इसको Wet Dream अर्थात गीला स्वप्न कहा जाता है। मनुष्य जब स्वप्न मे किसी प्रकार की यौनक्रिया अथवा स्त्री समागम करता है तो उसके परिणामस्वरूप उसका वीर्यपात हो जाता है। सामान्यतया यह किसी भी युवक को हो सकता है। इसमे भले-बुरे की बात उतनी नही जितने कि अन्य कारण होते है।

भले बुरे की बात भी स्पष्ट कर दी जाय तो उपयुक्त होगा। जो युवक भले हैं अर्थात् कुसगति से दूर हैं उनके स्वप्नदोष का कारण होता है पेट की खराबी, कब्ज, अधिक घुडसवारी, वृक्ष पर चढना, पेट मे कीडा का होना सिर मे कभी किसी प्रकार की चोट लगने के बाद अथवा मेरुदण्ड में किसी प्रकार की दुर्बलता।

ये कारण बुरे लडकों के लिए भी होते हैं। इनका सम्बन्ध विचारो से नही अपितु शरीर से ही है।

बुरे युवको से हमारा अभिप्राय बुरे विचार वालो से है। विचार ही मुख्य होते है। बुरे युवक मे यदि ऊपर लिखी किसी प्रकार की कोई त्रुटि है और फिर वह बुरे विचारा वाला भी है तो निश्चय ही वह स्वप्नदाप के राग स ग्रस्त हागा।

बुरे विचारा मे कुसगति तो मुख्य है ही। उसके बाद अश्लील साहित्य की बात भी हम ऊपर लिख आये है। इसके अतिरिक्त सदा लडकियो के विषय म ही सोचना, उनको देखना उनसे सम्पर्क करना अथवा करने के लिए मन ललचाना, भीड मे अवसर मिलन पर उनसे सटकर रहना आलिगन और चुम्बन आदि के दृश्या का देखना अथवा उनके विषय मे विचार करना, हस्तमैथुन का अभ्यासी होना आदि बुरी आदतो मे गिने जाते हैं।

हस्तमैथुन वह विकृत क्रिया है जिससे मनुष्य की शक्ति का सर्वाधिक ह्रास हाता है। अत इसस सदा बचकर रहना चाहिए।

स्वप्नदाप जैसा रोग जब साभान्य से अधिक होने लगे ता इससे शरीर क्षीण और दुबल होने लगता है। यदि इसी प्रकार यह राग बढता गया और इसके रोकने की चिकित्सा न की गई ता पुराना होने पर यह अन्य अनेक रोगो का जन्मदाता बन जाता है। इससे युवक बहुत ही दुबल हा जाता है और उसके मन म यह हीन भावना जन्म लेने लगती है कि वह स्त्री सम्भोग के योग्य नही रहा। इसस उस निराशा हाती है।

अत इस प्रकार के रोग स बचने का बहुत ही सरल उपाय है। उसके लिए विचार शुद्धता और आहार शुद्धता आवश्यक है। इसके अतिरिक्त रात का सोते समय बहुत अधिक पानी अथवा गर्म दूध का सवन करना हानिकर होता है ऐसा नही करना चाहिए। भोजन करने के बाद तुरन्त लेट नही जाना चाहिए। अर्थात सोने से कम से कम एक और सम्भव हो तो दो घण्टे पूर्व भाजन कर लेना चाहिए। लेटते समय मन मे अच्छे विचार होने चाहिए।

इतना यदि परहेज किया गया तो सामान्यतया स्वप्नदोष हाने की सम्भावना नही है। तदपि यौवन के उन्माद के कारण यदि किसी युवक को मास मे एक बार स्वप्नदाप हो भी जाता है ता अधिक चिन्ता की बात नही है। किन्तु यदि इसकी सीमा २० दिन म एक बार से बढ जाती है ता फिर इसे चिन्ता का विषय समझना चाहिए। तब इस ओर ध्यान देना परमावश्यक है।

ऐसी अवस्था मे सम्भावना ता यही है कि ऐसे युवक को स्वप्नदाप उसकी पेट की खराबी, अपच, अजीर्ण के कारण होता है। इसके लिए सव-

प्रथम अपनी पाचनशक्ति पर ध्यान देना चाहिए। पाचन क्रिया ठीक करने के लिए औषधि के प्रयोग के साथ भोजन मे परिवतन आवश्यक है। हल्का और पाचन भाजन लेना चाहिए। निरामिष भोजन अच्छा है। प्रात काल का भ्रमण और हल्का व्यायाम इसम लाभदायक सिद्ध होते है।

सर्वाधिक प्रयत्न इस बात पर होना चाहिए कि रोग हो जाने पर भी यद्यपि इसकी चिंता करते हुए उसका उपचार तो करें किंतु कभी मन मे इस रोग का ध्यान भी न करें। अर्थात चिंता केवल उपचार आरम्भ करने तक होनी चाहिए, उपचार आरम्भ करने के बाद उसको भूल जाइये उसका चिंतन छोड दीजिए। कम से कम सोते समय तो इस प्रकार का विचार मन मे आना ही नही चाहिए। मैं अपने रोगियो को प्राय कहता हूँ—

'आप स्वप्नदोष को भूल जाइय स्वप्नदोष आपको भूल जायेगा।"

एक बात और ध्यान म रखने की है। वह यह कि वास्तव म यह रोग नही अपितु आपके यौवन मे प्रविष्ट होन का लक्षण है। लडकियो की भांति यदि यह मास म एक बार हो जाए तो स्वास्थ्य को ठीक रखता है, उस अवस्था मे इसकी एक मात्र चिकित्सा विवाह है। यह सकेत है कि अब आपको विवाह कर लेना चाहिए।

नीचे हम इसके मुख्य मुख्य लक्षणो पर औषधियो का सुझाव दे रहे है।

एसिड फास (Acid Phos) ३० २००—इस औषधि का प्रयोग उन रोगियो को करना चाहिए जिनको किसी रोग के उपरात स्वप्न दोष का रोग आरम्भ हो जाता है। जैसे टाइफाइड ज्वर के बाद जल्दी थकावट हाने लगती है, बार बार पेशाब आने लगता है, दिमागी और शारीरिक दुबलता के कारण स्वप्नदोष आरम्भ हो जाता है।

जो विवाहित पुरुष अत्यधिक स्त्री सम्भोग कर चुकने से दुबल हो गये ह उनके लिए भी यह उत्तम औषधि है। इससे उनकी दुबलता नष्ट हो जायगी।

एग्नस कस्टस (Agnus Castus) ३०, २००—स्वप्नदोष का जो रोगी अनिश्चित मन होता है उसका मन इधर उधर घूमता जिसम जडता आ गई है उदासी रहती है रोग के कारण डरपोक हो गया है योनक्रिया की शक्ति क्षीण हो गई है किन्तु मन योनक्रिया के लिए लाला यित रहता है अधिक समागम के कारण जिन युवक-युवतियों ने अपनी शक्ति का क्षय कर लिया है, उनके लिए भी यह उत्तम औषधि है।

बेलिस पेरेनिस क्यू (Bellis Perentus Q)—इसका प्रयोग दिन मे तीन बार १०-१५ बूंद पानी म डालकर करना लाभदायक होगा। यह उन रोगियो की विशेष दवा है जो हस्तमैथुन के अभ्यासी होने से उप

रान्त स्वप्नदोष में रोगी बन गये हैं।

जिसने अधिक घुड़सवारी की है उसके कारण यदि स्वप्नदोष का रोग आरम्भ हुआ है तो उसके लिए यह परम उपयोगी ओषधि है। उस अवस्था में उसे निरन्तर इसका सेवन करना चाहिए।

बेरटा कार्ब (Baryta Carb) ६ ३०, २००—उदासी, दिल की धड़कन, दुर्बलता जिन स्वप्नदोष के रोगियों में पाई जाय उनके लिए यह उत्तम ओषधि है।

जिन युवकों की पाचन-शक्ति बिगड़ जाय और अन्य किसी ओषधि से उसके ठीक हो जाने के उपरान्त भी स्वप्नदोष होना न रुका हो तो उसके लिए २०० शक्तिक्रम की एक मात्रा नित्यप्रति देनी लाभप्रद होती है और लाभ आरम्भ होने के बाद यह मात्रा एक दिन बाद देनी उचित है।

फासफोरस (Phosphorus) ३०,२००—जिन स्वप्नदोष के रोगियों को स्त्री सम्भोग के समय शीघ्र पतन हो जाता है जिनमें यौन शक्ति की कमी है बेचैनी रहती है हृदय की धड़कन रहती हो, अधिक हस्तमैथुन के कारण वीर्य हानि हो चुकी हो पुरुषेन्द्रिय में ढीलापन आ गया हो, ऐसे लक्षणों पर इस ओषधि का प्रयोग लाभकारी होता है।

नक्स वोमिका (Nux Vomica) ३० २००—जिस स्वप्नदोष के रोगी को स्त्री-समागम की तीव्र इच्छा होती हो जागने पर इन्द्रिय में बहुत अधिक जोश-सा लगता हो, किसी मसालेदार पदार्थ के सेवन के कारण यदि स्वप्नदोष हुआ हो, भूख न लगती हो कब्ज रहती हो, इस प्रकार के लक्षणों में इसका सेवन लाभकारी होता है।

कैन्थरिस (Cantheris) ६, ३०—जिसको सुजाक अर्थात गिनोरिया होने के बाद पेशाब रुक-रुककर बूंद-बूंद आता हो और उस व्यक्ति को स्वप्नदोष का रोग हो तो उसके लिए यह सर्वश्रेष्ठ ओषधि है।

स्वप्नदोष के रोगियों के पेशाब में जलन हो तो उसके लिए भी यह उत्तम ओषधि है।

स्वप्नदोष के रोगी में यौन सम्बन्धी भूख अधिक होने पर भी इसका प्रयोग अत्यन्त गुणकारी होता है।

चाइना (China) ३०, २००—जिस स्वप्नदोष के रोगी को बार-बार यौनेच्छा हेतु उन्माद पेट के निचले भाग में पीड़ा कानों में गुंजन, चेहरा दहकता हुआ जल्दी जल्दी उबासियां लेना, ऊँघना तथा दुर्बलता हो इन लक्षणों में इसका प्रयोग बड़ा लाभकारी सिद्ध होता है।

जिस रोगी के पूरे पेट में अफारा हो तो उसके लिए भी ३० शक्तिक्रम की मात्रा अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होती है।

नूफर ल्युटियम क्यू (Nuphar LuteumQ)—स्वप्नदोष के बाद जिसको अधिक दुबलता आ जाती हो, तो उसके लिए यह बहुत ही उपयोगी औषधि है।

इसकी पाच बूदें दूध चीनी मे मिलाकर दिन मे तीन चार ऐसी मात्राएँ देने से शीघ्र लाभ होता है।

स्टाफेसगेरिया (Staphysagiria) २००—जो स्वप्नदोष का रोगी बहुत अधिक क्रोधी स्वभाव का हो सदा यौन सम्बन्धी बातो पर ध्यान रखता हो, एकान्तप्रिय हो, उसके लिए यह औषधि उत्तम है।

यह औषधि मन की शुद्धि के लिए परम उपयोगी मानी गई है।

थूजा-क्यू (Thuja) ३०, २००—स्वप्नदोष के कारण बहुत अधिक वीर्यपात म यह उत्तम औषधि है।

हस्तमैथुन

यदि किसी किशोर की सगति अच्छी नही है तो सामान्यतया उसको लगभग १३ १४ वर्ष की आयु मे हस्तमैथुन की आदत पड सकती है। जिनको इसके दुष्परिणामो का ज्ञान नही होता, और सामान्यतया उस आयु मे इतना ज्ञान होता भी नही है वे इस आदत के कारण अपने जीवन का सर्वनाश करने के मार्ग पर चल पडते है। इस प्रकार हाथ से वीर्य को स्खलित करने का अभ्यास युवक को स्थायी रूप से रोगी बना देता है।

इसके दुष्परिणामो मे न केवल जनन शक्ति का ही ह्रास सम्मिलित है अपितु इससे मनुष्य का मस्तिष्क भी दुर्बल हो जाता है। हस्तमैथुन का अभ्यासी ससार म कुछ भी करने योग्य नही रह जाता। यदि समय पर उसे युवक को इस कुमार्ग से रोकने वाला न मिला तो युवक का सर्वनाश सम्भव है। अत उचित यही है कि जिस किसी को भी इस आदत म पडा हुआ देखें अथवा समझें उसको सत्परामर्श देकर इस मार्ग से विमुख करने का यत्न करें। समय पर इस ओर ध्यान न देने से आजीवन पश्चात्ताप करना पडता है।

इससे बचने के लिए मनुष्य को चाहिए कि वह कुसगति से बचे, यौन सम्बन्धी साहित्य से दूर रहे, अपने खान-पान मे सयम रखे, अर्थात वह

सब कुछ तो करे ही जो हम इससे पूर्व स्वप्नदोष प्रकरण में लिख आये हैं उसके अतिरिक्त युवक को चाहिए कि यथासम्भव एकान्त वास से बचता रहे। अन्यथा कभी भी इस ओर मन पलट सकता है।

यहाँ इससे बचने के लिए कुछ अत्यन्त उपयोगी और लाभकारी औषधियों का उल्लेख कर रहे हैं, अपनी आवश्यकतानुसार इनका भी लाभ उठाया जा सकता है।

कैन्थरिस (Cantheris) ६, ३०—हस्तमैथुन की आदत को छुड़ाने में यह बहुत ही प्रभावी रूप में सहायक होता है।

ओरजेनम मेजोराना (Orajanum Majorana) ६—जिनको रात्रि में सोने से पूर्व हस्तमैथुन करने की आदत है उनके लिए यह बहुत उपयोगी है। इसका सेवन भोजन से पूर्व करना उपयोगी होती है।

उस्तेलेगो (Ustelago) ३० २००—जिस युवक की हस्तमैथुन की आदत उसके वश से बाहर हो जाय, जिसका स्वभाव चिड़चिड़ा हो, हस्तमैथुन के लिए जिसको एकान्त की तलाश रहती हो, स्नायु दुर्बल हो गई हो और रोगी यह अनुभव करता हो कि उबलता पानी उसकी पीठ पर उड़ेला जा रहा है, इस अवस्था में इस औषधि के प्रयोग से रोगी को अवश्य लाभ होता है।

सल्फर (Sulphur) २००—कभी-कभी बीच में ऐसे रोगी को इस औषधि के सेवन से लाभ होता है।

बफो (Bufo) ३०, २००—जो युवक एकान्तप्रिय हो, जो सदा एकान्त की तलाश करता रहता हो जिससे कि वह हस्तमैथुन की अपनी कामना की पूर्ति कर सके जो बिल्कुल भी संयम न कर सकता हो इस प्रकार जिसकी मस्तिष्क की स्थिति हो जाए उसके लिए यह औषधि अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होती है।

रोगी यह जानता है कि जो कुछ वह कर रहा है गलत कर रहा है फिर भी स्वयं पर नियन्त्रण नहीं रख सकता, स्मृति भंग हो जाना, बुद्धि का मन्द हो जाना जड़ बुद्धि हो जाना, शिराओं में दुर्बलता आ जाना बच्चों की सी बातें करना चीखना चिल्लाना और अन्त में बेहोश हो जाना ये लक्षण भी इस औषधि की परिधि में आते हैं। इसके सेवन से ऐसे व्यक्ति को अवश्य ही लाभ होता है।

स्ट्रमोनियम (Stramonium) ३०, २०० —जिसका हर समय जननेन्द्रिय पर हाथ रखने का अभ्यास हो जिसको बहुत अधिक बोलने की आदत हो, जिसको बोलने से थकान होती ही न हो मानो पागल सा हो

जाता हो, लम्बी अवधि तक निरंतर इस औषधि के सेवन से उसका लाभ होता है।

शीघ्र पतन

हस्तमैथुन के स्वभाव के साथ साथ जब स्वप्नदोष होने लगता है उस अवस्था म पुरुष की स्नायुओं मे दुबलता, चिंता, बार बार क्रोध आना, हृदय मे धडकन होना आदि अनेक ऐसे रोग आ घेरते हैं। मनुष्य मे उत्साह की कमी हो जाती है और वह कोई भी बडा काय सफलतापूर्वक नही कर सकता वह आत्मविश्वास खो देता है।

यदि स्वप्नदोष और हस्त मथुन का रोगी अपने आहार-विहार म भी उदासीनता का आचरण करता है, मिर्च, मसाले, खट्टे, तले हुए मीठे चटपटे पदार्थों का निरंतर और अधिक सेवन करना नही छोडता है तो इससे न केवल उसका पेट खराब होगा पाचन शक्ति बिगडेगी अपितु इनके कारण उसके शरीर म अन्य रोग भी घर करने लग जायेंगे।

इस प्रकार के कामुक व्यक्तियो को एक अन्य रोग भी घेर लेता है, वह है धातु का क्षय होना। पेशाब के साथ अथवा उसस पूर्व या उसके बाद वीय का निकलना। इसे सामान्य भाषा मे धातु रोग कहते हैं। इस रोग के कारण युवक का शरीर भीतर-ही भीतर जजर होने लगता है। उसका दुष्परिणाम कभी-कभी यहाँ तक हो जाता है कि वह स्त्री सग के सवथा अयोग्य हो जाता है। शरीर के साथ-साथ मानसिक दुबलता भी बढती जाती है।

यही धातु क्षय बाद में क्षय अर्थात यक्ष्मा रोग का कारण भी बन जाता है। इस रोग के साथ खाँसी और ज्वर यदि हो जाय तो फिर निश्चित ही उसे यक्ष्मा आ घेरता है।

यहाँ पर हम इस धातु क्षय के विषय मे कुछ प्रचलित और प्रभावी औषधियो का विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं। यदि इन औषधियो का सेवन किया जाय तो उससे धातु क्षय और शीघ्र पतन जसे रोग स मनुष्य को मुक्ति मिल सकती है।

मात्र औषधि का सेवन इतना उपयोगी सिद्ध नही होगा। उसके साथ-

साथ रोगी को अपने आहार विहार और रहन-सहन में भी तदनुकूल परिवर्तन करना होगा। अश्लील वातावरण से दूर रहना, कामोत्तेजक पदार्थों का सेवन न करना और न ही ऐसे वातावरण में रहना, उठना-बैठना आदि। इसके साथ ही साधारण-सा व्यायाम नित्य करना उपयोगी है। दूध, दही, मक्खन, फल का अधिक मात्रा में आहार करें। जो भी पदार्थ खाया जाए वह सुपाच्य हो इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है।

यदि इन नियमों का पालन किया जाय और फिर इसके साथ उचित औषधि का सेवन किया जाय तो रोगी पुनः अपना यौवन और जीवन प्राप्त कर सकता है।

उपयोगी औषधियाँ—

पल्सेटिला (Pulsatilla) ३०, २००—धातु क्षय की यह मुख्य औषधि है। जो लोग प्राय गरम पदार्थों का सेवन करते रहते हैं, गर्मियों के दिनों में भी अधिक मात्रा में मांसाहार आदि करते रहते हैं, बरफ का अधिक प्रयोग करने की जिनकी इच्छा रहती हो, प्यास न होने पर भी ठण्डे पेय के लिए जी ललचाना, जल्दी-जल्दी क्रोध आ जाना, तदपि परिस्थिति से जूझने का साहस नहीं होता, ऐसे रोगियों को ३० शक्तिक्रम की एक मात्रा चार-पाँच दिन तक नित्यप्रति देने से रोगी को अवश्य लाभ होगा।

सबल सेरलाटा (Sabal Serrlata)—इस औषधि का सदा टिंक्चर के रूप में किया जाता है। चार-पाँच बूंद पानी अथवा दूध की चीनी में मिलाकर चार पाँच बार दिन में लेनी चाहिए।

जिसको बार-बार पेशाब की इच्छा होती हो, मैथुन शक्ति का ह्रास हो गया हो, उसको इसका सेवन अत्यन्त लाभकारी होता है।

बड़े हुए प्रास्टेट ग्लण्ड्स (Enlargement of Prosttante Gland) की भी यह बहुत ही उत्तम औषधि है। यदि निरन्तर सेवन किया जाय तो ऑपरेशन से बचा जा सकता है।

सलिनियम (Selenium) ३०, २००—यद्यपि शक्ति नहीं रही तदपि जिसकी स्त्री संगति की अधिक इच्छा रहती हो, जिसका शीघ्र वीर्यपात होता हो, सम्भोग के लिए यत्न करते-करते जिसकी जननेन्द्रिय ढीली पड़ जाती हो, मैथुन शक्ति का ह्रास, वीर्य का नींद में बह जाना, पीठ में दर्द, विशेषतया प्रातः उठते ही, रात्रि के समय हाथों में फाड़ने वाला दर्द होता हो इन लक्षणों पर यह उत्तम औषधि है।

चाइना (China) ३०, २००—वीर्य ह्रास के कारण आई दुर्बलता के लिए यह महान् औषधि है। इस औषधि का निरन्तर प्रयोग लाभकारी होता है।

रोगी को यह ध्यान रखना चाहिए कि उसके पेट में कब्ज न हो, जिनका हाजमा ढीला होता है अर्थात् जिनको प्रायः दस्त आ जाते हैं, उनके लिए यह औषधि वीर्यनाश के बाद की दुर्बलता में विशेष लाभदायक होती है।

सेलिक्स नाइग्रा (Salix Nigra) ३०, २००—जिस व्यक्ति की जननेंद्रिय की उत्तेजना अधिक परेशान करती हो उसके लिए यह परम औषधि है। अधिक उत्तेजना को सामान्य करने में यह बहुत सहायक होती है।

हस्तमैथुन के बाद के लक्षणों पर यह अचूक औषधि है।

साइलिशिया (Silicea) ३० २००—ठण्डा रोगी, जिसमें किसी संघर्ष का सामना करने का साहस न रह गया हो, टाँगों में दर्द रहता हो, हाथ पैर ठण्डे रहते हों, पाँव पर दुर्गन्धयुक्त पसीना आता हो, जननेंद्रियों में जलन होती हो दोनों ओर खारिश होती हो, धातु निकलती हो इन लक्षणों में यह औषधि उत्तम है।

यद्यपि इस औषधि की प्रतिक्रिया कुछ विलम्ब से होती है किन्तु इसका प्रभाव बहुत गहरा होता है।

नक्स वोमिका (Nux Vomica) ३०—कब्ज के कारण जिसको यह रोग हो गया हो उसके लिए इस औषधि के निरन्तर प्रयोग से लाभ होता है।

जिसे बार बार पाखाना जाने की आवश्यकता पड़ती हो, पेट एक बार में पूरी तरह साफ न होता हो तो उसमें भी यह औषधि लाभ करती है।

दुर्बलता में इस औषधि के साथ बायोकेमिक ६ एक्स फेरम फॉस का सेवन कराने से रोगी नीरोग हो जाता है और उसमें स्फूर्ति का संचार भी होता है।

स्त्री-रोग प्रकरण

ल्यूकोरिया

आधुनिक युग में ल्यूकोरिया का प्रकोप चारों ओर व्याप्त पाया जाता है। प्राचीन काल में क्या होता था, इसकी गहराई में न जाकर हम केवल वर्तमान पर ही बात करना उपयुक्त समझते हैं। आजकल लड़कियां

के विवाह के पूर्व ही उनके मासिक धर्म आरम्भ होने के साथ ही इस प्रकार के रोग भी आरम्भ हो जाते हैं। ये आयुपर्यन्त उनको परेशान भी करते हैं। यदि समय पर समुचित चिकित्सा हो जाय तो परेशानी कम की जा सकती है और उससे होने वाली दुर्बलता भी कम की जा सकती है।

हमने ऐसी रोगिणियाँ भी देखी हैं और चिकित्सा की है जिनको यह रोग तेरह चौदह वर्ष की आयु में आरम्भ हुआ था और चालीस वर्ष की आयु तक लगा रहा। इसके दुष्परिणामस्वरूप उनको गठिया वात रोग, आर्थराइटिस जैसे अन्य रोगों ने भी आ घेरा।

जिस प्रकार पुरुषों में वीर्यपात का रोग होता है वैसे ही महिलाओं में यह ल्यूकोरिया होता है।

यहाँ पर हम लक्षणानुसार औषधियों का उल्लेख कर रहे हैं, अपने लक्षणों के अनुसार औषधि का चयन कर रोग से मुक्ति पाई जा सकती है।

कलकेरिया फॉस (Calcarea Phos) ३०, २०० १०००, १० ०००—जिन स्त्रियों में रक्त की कमी है और वे दुबली पतली हैं उनके लिए उत्तम औषधि है। यह बहुत ही नाजुक प्रकृति वाली स्त्रियों की औषधि है।

इस औषधि का रोगी शीघ्र दुखी होने वाला, भुलक्कड़ स्वभाव का होता है। उसका मन सदा कहीं न कहीं घूमने अथवा किसी न किसी स्थान पर जाने को करता रहता है।

इसकी ३० अथवा २०० शक्ति की मात्रा लाभकारी होती है, आवश्यकता पड़ने पर अधिक शक्ति की मात्रा भी दी जा सकती है।

अनेक ऐसी महिलाओं को भी इसकी अधिक शक्ति की मात्रा के प्रयोग से लाभ हुआ है जिनके मासिक धर्म के चार पाँच दिन बाद स्राव आरम्भ हो जाता था।

हाइड्रेसटिस (Hydrastis) ३०, २००—ऋतुस्राव के उपरान्त जिसको बहुत बुरी तरह ल्यूकोरिया होता है उसके लिए सर्वोत्तम औषधि है।

कब्ज के साथ जिसको ल्यूकोरिया है उसके लिए यह औषधि सर्वोत्तम पाई गई है।

हेलोनियम (Helonias)३०, २००—थकी मांदी, कमर दर्द वाली रोगिणी जिसमें रक्त की कमी हो गई हो, व्यस्त रहने पर जो ठीक महसूस करती है, ऋतुस्राव जल्दी जल्दी हो जाता है घूमने फिरने में कष्ट बढ़ता हो, ऐसी रोगिणी को इसके सेवन से लाभ होता है।

साइलिशिया (Silicea) ३०, २००—जिसको दूध की भाँति सफेद स्राव आता है पेशाब के समय स्राव होता हो, वक्षस्थल में पीडा होती हो, अति उदास किसी संघर्ष से जूझने का सामर्थ्य न होना, पूर्णिमा के अवसर पर इस प्रकार के लक्षणों से अधिक पीडित अनुभव करना, इस प्रकार के लक्षणों में यह उत्तम ओषधि है।

पलसेटिला (Pulsatilla) ३०, २००, १०००—जो रोगिणी गर्मी और गर्म पदार्थों के सेवन से कष्ट अनुभव करती है, जिसके सब लक्षण गर्मी से बढते हैं, प्यास न होने पर भी ठण्डे पेय के लिए इच्छा करती है मासिक स्राव सदा देर से आता है, कुछ बार आता भी नहीं, क्रीम सा ल्यूकोरिया, जलन, पीठ में दर्द आदि लक्षणों में यह ओषधि लाभकारी सिद्ध होती है।

क्रियाजोट (Kreasote) ३० २००—ल्यूकोरिया खारिश उत्पन्न करने वाला हो स्राव के समय खुजली होती हो, जो वस्त्र में छेद तक कर दे, जिसका मूत्र दुर्गन्धयुक्त हो, जोडों में दर्द होता हो, इस प्रकार के लक्षणों में यह उत्तम ओषधि है।

लाइकोपोडियम (Lycopodium) २००—जिसको ऋतुस्राव देर से होता हो, फिर काफी दिनों तक रहता हो ल्यूकोरिया जलनदार होता हो योनि के भीतर जलन होती हो टट्टी पेशाब के समय योनि से रक्त-स्राव होता हो इन लक्षणों में यह उत्तम ओषधि है।

नेट्रम म्यूर (Natrum Muir) ३०, २००—ऋतुस्राव अनियमित रहता हो, यद्यपि उसकी मात्रा काफी होती हो, ल्यूकोरिया जलनदार पानी की भाँति का हो, प्रात काल के समय अधिक होता हो जरायु बाहर निकल आता हो, ऋतुकाल में रोगिणी गर्म अनुभव करती हो, इन लक्षणों में इस ओषधि का प्रयोग लाभकारी होता है।

सनिक्यूला (Sanicula) ३०, २००—पुराने पनीर की सी दुर्गन्ध वाला ल्यूकोरिया आता हो, योनि बडी अनुभव होती हो, नीचे की ओर ऐसा दबाव कि जिससे यह अनुभव हो कि सब कुछ बाहर निकल रहा है, जरायु में पीडा होती हो, ऐसे लक्षणों में यह लाभकारी होती है।

सीपिया (Sepia) ३०, २००—स्त्री के जरायु सम्बन्धी रोगों की यह उत्तम ओषधि है।

पीले रंग के ल्यूकोरिया में इससे लाभ होता है।

जिसको अधिक खारिश होती हो, जो टाँगों को क्रास करके बैठना पसन्द करती हो कमर में थकावट और दर्द अनुभव होता हो, ऋतुस्राव अनियमित और रुक रुककर होता हो, ऐसे लक्षणों में यह उत्तम ओषधि है।

ग्रेफाइटिस (Graphites) ३०, २००—कमर मे अधिक दुवलता के साथ पीला पतला ल्यूकोरिया, सभाग के लिए सवथा अरुचि, पेट मे कब्ज, सगीत का अच्छा न लगना सगीत सुनकर रोगिणी को रोना आना, ऋतु-स्राव के दिनो म रात्रि के समय गर्मी मे अधिक कष्ट होता है। इन लक्षणो इस ओषधि का प्रयोग लाभकारी होता है।

कलकेरिया सिलिकाटा (Calcarea Silicata) ३०, २००—जरायु का भारी अनुभव होना ऋतुस्राव मे बहुत पीडा होना, नियमपूवक न होना, रोगिणी का अधिक गर्मी अथवा ठण्ड को सहन न कर पाना, बहुत दुबल हो जाना, आत्मविश्वास की कमी भयभीत रहना, इन लक्षणो म यह उत्तम ओषधि है।

कलकेरिया काब (Calcarea Carb) ३०, २००—जरायु का आसानी से अपने स्थान से हट जाना दूध के रग का स्राव निकलना, मासिक धम आने के बाद और मासिक धम आने से पहले योनि भाग पर खुजली होना, मासिक धम की अवधि म काटने वाली पीडा होना, इन लक्षणो पर इसका प्रयोग लाभकारी है।

कलकेरिया आर्सेनिकम (Calcarea Arsenicum) ३०, २००—जिनको खूनी ल्यूकोरिया हो, उसके लिए यह उत्तम ओषधि है।

जिसे हर घण्टे बाद पेशाब की हाजत होती हो, जरायु मे जलन वाली पीडा होती है ल्यूकोरिया के साथ जोर का कमर दद होता है, इन लक्षणो मे यह उत्तम ओषधि है।

बच्चेदानी के कैंसर के लिए भी यह उत्तम ओषधि है।

एम्ब्रा ग्रीशिया (Ambra Grisea) ३०, २००—गाढा नीले सफेद रग का ल्यूकोरिया, विशेषतया जो रात्रि के समय स्राव होता है वह इस प्रकार का हो, शरीर पतला दुबला जिन्हें सर्दी जल्दी पकड लेती है, स्नायुमण्डल जिनका दुबल होता है, शीघ्र गुस्से मे आ जाने वाली, घबराने वाली रोगिणी के लिए यह उत्तम ओषधि है।

एनाकार्डियम (Anacardium) २०० १०००—मासिक स्राव बहुत रुक-रुककर आता हो श्वेत प्रदर खुजली वाला, और कष्टदायक, रोगिणी जल्दी थकने और घबरा जाने वाली, आत्मविश्वास की कमी, कुछ शीघ्र निणय न कर सकने वाली दुविधा मे पडी रहने वाली, ऐसे लक्षणो वाली रोगिणी के लिए इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

आर्सेनिकम एल्बम (Arsenicum Album)—जिसको बहुत जलन वाला दुगन्धयुक्त पतला स्राव होता हो, दद ऐसा होता है मानो गम तपी हुई तारो को छू जाने से होता है तनिक सा काम करने पर ही थक जाना

गम कमरे मे रहना ज्यादा अच्छा लगता है, इन लक्षणो म इस ओषधि का प्रयाग लाभकारी सिद्ध होता है।

औरम मेटलिकम (Aurum Metallicum) ३०, २००—जिसको जीवन मे कोई रुचि न रह गई हो, जो मरने की इच्छा करती हो जिसका आत्महत्या का ध्यान आता हो, इस प्रकार की मानसिक अवस्था की रोगिणी के लिए यह अत्यन्त लाभकारी औषधि है।

यह औषधि स्वर्ण से बनाई जाती है।

बोरेक्स (Borax) ३०, २००—जब ल्यूकोरिया अण्डे की सफेदी की भाँति आता हो, योनि के द्वार पर खारिश होती हो, मुख पर जिसको मकडी के जाले का आभास होता हो, रोगिणी मुख पर हाथ फेर कर उसको हटाने का यत्न करती है किसी पुल के ऊपर से गुजरते समय नीचे की ओर देखने म भय लगता है, किसी बडी इमारत से नीचे झाँकना असम्भव लगता है, कम्पन और भय होता है, इन लक्षणो मे यह सर्वोत्तम औषधि है।

केलि बाइक्रोमिकम (Kali Bichromicum)—गर्मी की ऋतु म तग करने वाला ल्यूकोरिया, पीला तथा तार या रस्सी की भाँति निकलने वाला स्राव योनि पर खुजली, इन लक्षणो मे इसका प्रयोग लाभकारी सिद्ध होता है।

सन्तति निरोध

सन्तति निरोध वर्तमान युग का बहु चर्चित विषय बन गया है। इसकी चर्चा न केवल भारत मे अपितु सभी विकासशील देशो मे होती है। विकसित देश भी इसके लिए प्रयत्नशील रहते हैं, किन्तु वे इसे समस्या नही मानते क्योंकि उनके यहा अधिक जनसख्या के लिए पर्याप्त साधन सुलभ हैं।

यदि विवाहित स्त्री और पुरुष विवाहित स्त्री पुरुष ही क्यो कोई भी स्वस्थ स्त्री-पुरुष यदि समागम करेंगे तो समय पर उसके परिणामस्वरूप गर्भस्थिति होगी ही, यदि उन दोनों मे से किसी एक ने भी गर्भनिरोधक किसी उपाय का उपयोग न किया हो तो।

आज के अधिकाश सुशिक्षित कहे जाने वाले दम्पति यह नही चाहते कि विवाह के कुछ मास बाद ही स्त्री गर्भ धारण करले। ऐसा वह किसी स्वास्थ्य अथवा सदाचार के नाते न चाहते हो सो बात नही है। इस अनिच्छा मे उनका उद्देश्य होता है अधिकाधिक सम्भोग सुख का उपभोग करना। स्त्री के गर्भस्थिति होने पर सम्भोग सुख का आनन्द नही रहता और फिर यह धारणा भी फैली हुई है कि स्त्री के बच्चा उत्पन्न होने के उपरान्त सम्भोग मे उतना आनन्द भी नही रहता।

अपनी इस सम्भोग सुखेच्छा की तृप्ति के लिए वे विभिन्न प्रकार के गर्भ निरोधक उपायो का प्रयोग आरम्भ कर देते हैं। इनमे अनेक तो ऐसे भी होते हैं जो कि हानिकर होते है। जिन महिलाओ ने इस प्रकार के गर्भ निरोधक उपाय अपनाये हैं उनमे से अधिकाश को रुग्ण होते देखा गया है। न केवल इतना कोई कोई तो भविष्य मे गर्भ न धारण कर सकने की स्थिति मे पहुँच जाती है।

यदि किसी दम्पति मे सन्तान की इच्छा नही है तो उसके लिए कृत्रिम उपायो की अपेक्षा स्वाभाविक उपायो का प्रयोग क्या न करें? यदि वे ऐसा ही चाहते हैं तो स्वय को नियन्त्रित कर सयम से काम लें। उन्हें चाहिए कि वे सम्भोग से विरत रहे इस प्रकार जब तक चाहे उनके सन्तान उत्पन्न नही होगी और किसी प्रकार की शारीरिक हानि भी नही होगी।

किन्तु सयम तो इस अन्यतम आधुनिक युग मे रूढिवादियो का नारा है। सर्वसाधारण के लिए तो सयम कर पाना सम्भव नही है। और फिर हम तो पहले ही लिख आये हैं कि वे सन्तान-अनिच्छा किसी अन्य कारण से नही अपितु सम्भोग सुख के लिए चाहते है और सयम का अभिप्राय है सम्भोग सुख से छुट्टी, यह किस प्रकार सम्भव है?

आज के युग मे, इस विलासिता के वातावरण मे नव विवाहित पति-पत्नी किसी प्रकार भी सयम का जीवन नही बिता सकते। यही कारण है कि वे भाँति-भाँति के गर्भनिरोधक उपायो का प्रयोग करने लगते हैं।

वास्तव मे होना तो यही चाहिए कि ईश्वर अथवा प्रकृति के नियमो का उल्लघन न किया जाय। अर्थात् सम्भोग का जो स्वाभाविक परिणाम गर्भस्थिति है उसका अवरोध न किया जाय। विपरीत इसके उस परिणाम को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लिया जाय।

प्रकृति के भी कुछ नियम होते हैं और यदि आयुर्विज्ञान के आधार पर उनका पालन किया जाता है तो उससे बहुत लाभ हो सकता है। उन नियमो का पालन करने से जहा एक ओर अधिकाधिक सयम का अभ्यास होता जायगा वहाँ दूसरी ओर सन्तान उत्पन्न होने की अवधि मे भी अन्तर

बढता जायगा। इससे विवाहित गृहस्थ जीवन सुखमय बन जायेगा।

मासिक धम के चार पाँच दिनो मे स्त्री को चाहिए कि वह अपना विशेष ध्यान रखे। उस काल म उसको सयम से रहना चाहिए और आहार भी सात्विक ही लेना चाहिए। यदि मासिक स्राव पीडायुक्त हो तो उसके लिए हमने यथास्थान ओषधियो का वणन किया है उनका प्रयाग कर लेना चाहिए। ऋतुस्राव नियमित रूप से और बिना कष्ट के होना नितान्त आवश्यक है। ऋतुस्राव की अवधि म पाच दिन तक पुरुष के साथ समागम न केवल वर्जित है अपितु यह हानिकारक भी है।

जो दम्पति शीघ्र सन्तान की लालसा नही करते उनको चाहिए कि वे इन पाच दिनो के अतिरिक्त ७ ८ दिन और सयम से रहे। उन दिनो मे भी समागम से दूर रहे। मासिक धम आरम्भ होने से लगभग १३ दिन के बाद यदि सम्भोग किया जाय तो उससे गभस्थिति की बहुत कम सम्भावना रहती है। स्त्री की प्रकृति के अनुसार इन दिनो मे थोडा-बहुत अन्तर भी हो सकता है। सामान्यतया यही नियम लागू होता है।

इसके साथ ही अगला मासिक धम आरम्भ हाने का जब समय होता है उससे एक सप्ताह पूव भी स्त्री पुरुष समागम नही होना चाहिए। उस काल मे भी गर्भस्थिति की सम्भावना रह जाती है। इसे ही नैसर्गिक नियन्त्रण अथवा स्व नियन्त्रण कहते हैं। इसका अभिप्राय यह हुआ कि मासिक धम आरम्भ होने के १२-१३ दिन तक और मासिक धम आरम्भ होने स एक सप्ताह पूव सयमित जीवन व्यतीत करे और इस बीच मे १०-१२ दिन मिलते हैं उनमे सम्भोग करें तो यथोचित परिणाम प्राप्त हो सकता है। उस अवस्था म गर्भस्थिति की सम्भावना बहुत कम रह सकती है।

यदि सन्तानोत्पत्ति की लालसा हो तो मासिक धम आरम्भ होने के छ दिन बाद अथवा जब भी स्राव बन्द हो गया हो उसके बाद छठी और आठवी रात्रि को सम्भोग किया जाय तो इससे पुत्र की प्राप्ति की सम्भावना होती है तथा सातवी और नवी रात्रि को सभोग करने से कन्या की प्राप्ति की सम्भावना बताई जाती है। यह भी देखा गया है कि सोलहवी रात्रि के समागम से भी पुत्र प्राप्ति हुई है। तदपि प्रथम बारह दिनो गर्भस्थिति की अधिक सम्भावना रहती है। पुत्र की कामना करने वाले यदि चाहे तो तीनो रात्रियो अर्थात छठी आठवी और बारहवी रात्रि को समागम कर अपना अनुभव स्वय प्राप्त कर सकते हैं। यदि यह रात्रि शुक्ल पक्ष की हो तो पुत्र की उत्पत्ति निश्चित मानी जाती है। इसे अनुभूत प्रयोग मानना चाहिए और विषय के ज्ञाताओ का भी ऐसा ही मत है। मनुस्मृति मे छठी

और आठवीं रात्रि का स्पष्ट उल्लेख पाया जाता है।

पुत्र प्राप्ति की कामना करने वाली पत्नी को एक और बात की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। उसको जब यह विदित हो जाय कि उस रात्रि के सगम के फलस्वरूप उसने गर्भ धारण कर लिया है तो उसको चाहिए कि वह मिष्ठान्न का भोग करे खट्टे और बासी वस्तुओं को सर्वथा त्याग दे। इस स्थिति मे चावल की खीर अच्छी बताई गई है। खीर नित्य खाना सम्भव नही होता, इसलिए जब कभी भी अवसर मिले खीर भोजन कर लेना सहायक सिद्ध होता है। इससे पुत्रजन्म की सम्भावना सुनिश्चित हो जाती है।

एक और बात की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। वह है, गर्भस्थिति से आरम्भ कर बच्चा उत्पन्न होने के कम से कम छ मास तक सयम से काम लिया जाय। इस प्रकार जो दम्पति सयम से काम करेंगे वे स्वस्थ और अच्छे परिवार के निर्माण के भागी बन समाज को भी स्वस्थ रखने मे सहायक सिद्ध होगे।

नीचे हम उन औषधियो के विषय म सविस्तार लिख रहे हैं जिनके प्रयोग से मासिक धर्म के दिनो के कष्ट और गर्भावस्था दोनो मे ही लक्षणो के अनुसार सेवन करने से लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त हम उन औषधियो का भी वर्णन कर रहे हैं यदि पुन जल्दी गर्भस्थिति हो जाय अर्थात प्रथम शिशु दो वर्ष से भी कम आयु का हो किन्तु पति-पत्नी सन्तान न चाहते हो तो समागम के तुरन्त बाद निर्धारित औषधि का सेवन कर लें, इससे गर्भस्थिति की चिन्ता से मुक्ति मिल सकती है।

कष्ट और पीडायुक्त मासिक स्राव

पलसेटिला (Pulsatilla) ३०, २००—मासिक धर्म विलम्ब से आता हो, मासिक धर्म रुक रुककर आता हो, कमर, जाघ और जरायु मे पीडा रहती हो, गर्म पदार्थ के प्रति अरुचि, गर्मी लगती हो किन्तु प्यास न लगती हो अथवा कम लगती हो तो ऐसी स्थिति मे पलसेटिला ३ एक्स अथवा ३० शक्ति की मात्रा का सेवन कराने से लाभ होगा।

वाइबनम श्रोपुलस (Viburnum Opulus) ३०—यह वेदनानाशक और जरायु के रोगो की औषधि है।

इसका निरतर प्रयोग करते रहने से मासिक धर्म के प्रारम्भ होने से पूर्व अथवा मासिक धर्म के समय की पीडा दूर हो जाती है।

मासिक धर्म विलम्ब से होता हो, रुक-रुककर होता हो, कुछ घण्टो के लिए होता हो दुर्गन्धयुक्त होता हो और पीडा साथ मे होती हो, पीडा नीचे जाँघो की ओर जाती हो, जरायु और पीठ मे प्रात काल पीडा होती हो तो उसके लिए इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

बेलाडोना क्यू (Belladonna Q) ३०, २००—यह औषधि मासिक धर्म सम्बन्धी पीडा म टिक्चर मे प्रयोग करने से लाभ होता है। चार बूद ताजे पानी म देने से लाभ होता है।

मासिक धर्म मे जिसका पेट मे पीडा होती हो और वह पीडा टाँगो की ओर जाती हो, जिसको एकदम जोर से दर्द उठता हो और एकदम जोर से गायब हो जाता हो उसके लिए यह औषधि बहुत ही उत्तम और गुणकारी सिद्ध होती है।

२०० शक्ति की मात्रा सफल सिद्ध होती है।

जेन्थोक्सीलम (Xanthoxyllum) ६, ३०—मासिक धर्म के समय जिसका अत्यधिक पीडा होती हो, स्राव जल्दी और पीडायुक्त हो पेट के निचले भाग मे और टागो मे पीडा रहती हो, बाईं ओर अधिक कष्ट होता हो, स्राव काला और लगभग गाढा आता हो, जिनको नीद ठीक म न आती हो, दुबली पतली सूखे शरीर वाली हो, उनके लिए इसके सेवन से लाभ होता है।

कलकेरिया कार्ब(Calcarea Carb) ३० २००—जो औरत गोरी मोटी, ढीली ढाली भारी भरकम शरीर वाली हो मासिक धर्म जल्दी होता हो स्राव से पूर्व सिर दर्द ठण्ड और जरायु म काटने वाला दर्द होता हो, स्राव जल्दी और खुलकर तथा लम्बे काल तक होता रहता है मासिक के दिनो से पहले और बाद मे जलन और खारिश रहती हो उनके लिए इस औषधि से लाभ होता है।

मगनेशिया फॉस ३ एक्स(Magnesia Phos)—मासिक के दिनो मे जिसका दर्द दबाने से और गर्मी से ठीक होता है उसके लिए इसका प्रयोग गरम पानी मे बूँदें डालकर करना चाहिए। इससे लाभ होता है।

कालोसिंथ (Colocynth) ३० २००—जो रोगिणी दर्द के कारण झुककर बिस्तर मे बैठती हो ऐसी स्थिति म दोहरी होकर बैठने मे जिस दर्द म आराम मिलता हो उसको इस औषधि का बार-बार प्रयोग करने से

लाभ होता है।

कलकेरिया फास (Calcarea Phos) ३०, २००, १००० — दुबली-पतली-लम्बी, घबराने वाली औरत का यदि मासिक धर्म मे अनियमितता हो तो उसके लिए यह बहुत लाभकारी होती है।

बहुत दर्द के कारण दुर्बलता चिल्लाना इसमे १००० शक्ति की एक मात्रा मासिक धर्म आरम्भ होने से पहले देने से लाभ होता है।

निरन्तर इसका प्रयोग करने से प्रतिमास होने वाले दर्द से भी छुटकारा मिल जाता है।

जिस रोगिणी मे इस औषधि के लक्षण पाये जाते हैं उसको ठण्ड भी बहुत लगती है।

आर्सेनिकम एल्बम (Arsenicum Album) ३० २०० — दर्द के साथ बेचैनी और उलटी करने का दिल करता है जीभ बार-बार सूखती जाती है, दो दो घूट पानी मागना पडता है, उसके लिए यह औषधि उत्तम है।

सेबाइना (Sabina) ३० — रोगिणी की इच्छा लेमानेड पीने की करती हो, स्राव खुलकर और लाल रग का होता है, दर्द जाँघो म जाता है, सगीत अच्छा नहीं लगना, मास के मध्य मे भी स्राव हो जाता है तनिक हिलने-डुलने से कष्ट बढता है गर्मी सहन नही होती ठण्डी और खुली जगह अधिक पसन्द करती है, इस प्रकार के लक्षणो मे इसका प्रयोग लाभदायक सिद्ध होता है।

जल्सिमियम (Gelsemium) ३० २०० — मासिक का रुक रुककर आना, कमर और कूल्हो मे पीडा होना, रोगिणी का यह अनुभव करना कि जरायु सिकुड रही है, कम्पन और कमजोरी के साथ दर्द मे बहुत उपयोगी है, रोगिणी को प्यास नही लगती, इन लक्षणो म यह औषधि उत्तम है।

ट्रिलियम पण्डूलम (Trillium Pendulum) ३०, २०० — कमर और कूल्हो का टूटना-सा अनुभव करना स्राव इतना अधिक कि खडा रहना कठिन हो जाता है, दुर्बलता बहुत अधिक अनुभव होना रक्त से कपडे अधिक गन्दे होना इस अवस्था म इसका सेवन अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होता है। इसका सेवन निरन्तर करते रहना उपयोगी होता है।

टयूबरक्यूलीनम (Tuberculinum) २००, १००० — जिसका मासिक धर्म जल्दी होता हो, मासिक धर्म कुछ देर तक रहना, स्राव के आरम्भ होने पर दर्द का बढना रोगिणी जल्दी सर्दी पकडती हो, दुबली-पतली शरीर की हो, उसके लिए यह औषधि अत्यन्त लाभकारी होती है।

जिनके परिवार में यक्ष्मा का इतिहास हो उनके लिए यह बहुत ही लाभकारी होती है।

सिपिया (Sepia) ३०, २००—जिसका स्राव देर से और रुक-रुक कर होता है योनि में ऊपर की ओर सुइयाँ चुभती हैं, रोगिणी टाँगें थाम करके बैठती हो, कुछ निकल पड़ने का-सा आभास अनुभव करती हो। ऐसी रोगिणी के लिए इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

कॉफिया (Coffea) ३०, २००—स्राव जल्दी और देर तक रहने वाला हो साथ में दर्द होता हो, लम्बे, बड़े काले रक्त के थक्के, खुजली बहुत अधिक होती हो, इन लक्षणों में इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

कमोमिला (Chamomilla) ३०, २००—यदि कॉफिया से दर्द में लाभ न हो तो, डाक्टर कैण्ट का कथन है कि, उसको फिर कैमोमिला देना चाहिए।

स्राव जल्दी होता हो, पीड़ा इतनी कि मानो प्रसव पीड़ा हो, क्रोध में रोगिणी छटपटाती है। इस प्रकार के लक्षणों में यह उपयोगी है।

नेफालियम (Gnaphalium) ३० २००—मासिक स्राव के पहले दिन स्राव रुक-रुककर और बहुत दर्द के साथ केवल पहले दिन होता हो तो यह औषधि उपयोगी सिद्ध होती है।

विवाहिता को मासिक स्राव समय पर न होता हो, काफी दिन चढ़ जाते हों तो उसके लिए यह एकमात्र औषधि है।

गर्भस्थिति

ऊपर हमने मासिक धर्म में अनियमितता का वर्णन किया है। जब स्त्री के गर्भ स्थिर हो जाता है तो फिर मासिक धर्म होना बन्द हो जाता है। इस स्थिति का पता अनेक महिलाओं को तो पहले ही चल जाता है। अर्थात गर्भ स्थित होने के साथ ही उनमें सुस्ती समा जाती है नींद-सी आने लगती है, नींद कम या अधिक आने लगती है जी मिचलाने लगता है जिसे अंग्रेजी में मोर्निंग सिकनैस कहते हैं, भूख में कमी होने लगती है सामान्य भोजन से अरुचि होने लगती है खट्टे बासी, मिट्टी चाक आदि पदार्थ खाने को जी करता है। यदि इस प्रकार के लक्षण उभरकर आयें तो

समझना चाहिए कि उस महिला के गर्भस्थिति है। इस प्रकार की जब अवस्था हो तो किसी भी प्रकार की औषधि का सेवन नही करना चाहिए।

गर्भस्थिति मे स्त्री को चाहिए कि वह सर्वप्रथम अपना भोजन सन्तुलित करे। इससे पूर्व यही उपयुक्त होगा कि किसी डॉक्टर अथवा नर्स से अपनी स्थिति का निरीक्षण कराकर इस स्थिति के विषय मे आश्वस्त हो जाना चाहिए और जब विश्वास हो जाय तो गर्भवती का हल्का और पौष्टिक भोजन दिया जाना चाहिए। इसमे दलिया, दूध फल और सब्जियाँ मुख्य हैं।

गर्भवती का यदि जी मिचलाता हो तो उस अवस्था मे कुछ होमियोपैथिक औषधियाँ दी जा सकती हैं वह हम यथास्थान वर्णन कर रहे हैं। परन्तु इससे पूर्व दो बातो का विशेष ध्यान रखना चाहिए। रात्रि का भोजन हल्का और कम होना चाहिए, चिन्ता से दूर रहकर धार्मिक विचारो के साथ शय्या पर लेटना चाहिए। सहवास नही करना चाहिए।

प्रात नीद खुलने पर लेटे-लेटे ही गर्भवती एक-दो बिस्कुट खा ले और उसके बाद बिस्तर से उठे तो इससे कई बार बडा लाभ होता है। उलटी नही आती जी मिचलाना बन्द हो जाता है। रात्रि का सोते समय इस प्रकार का कोई खाद्य पदार्थ समीप रख लिया जाय और प्रात काल नीद खुलने पर उसका खा लिया जाए। यह कार्य बिना हिले-डुले हो, अर्थात् हिलने डुलने से पहले ही कर लेना चाहिए।

इस स्थिति मे यदि बिस्तर छोडने से पहले दो थ्रेपटिन बिस्कुट खा लिए जाएँ तो इससे न केवल जी मिचलाना टाला जा सकता है अपितु यह प्रोटीनयुक्त शक्तिवर्द्धक बिस्कुट होने के कारण शरीर की पुष्टि मे भी सहायक होता है।

गर्भस्थिति होने पर उलटी और जी मिचलाने की अवस्था मे निम्नलिखित औषधियो का प्रयोग लक्षणानुसार करने से रोगिणी का लाभ होता है।

सिम्फोरीकार्पस रेसमोसा (Symphoricarpus Racemosa) ३० २००—निरन्तर जी मिचलाता रहता हो उलटी होती हो हाजमे मे खराबी हो, खाने की इच्छा कभी होना कभी न होना, भोजन के लिए मन करता है किन्तु भोजन परोसे जाने तक फिर भोजन के प्रति अरुचि हो जाती है, मुख का स्वाद कडवा होना मुख से पानी निकलना, किसी प्रकार के भोजन का भी मन नही करना, पित्त के साथ खट्टी उलटी कब्ज डकार, अतिसार आदि लक्षण हो तो इस औषधि का सेवन करना चाहिए इससे लाभ होता है।

नक्स वोमिका (Nux Womica) ३०—कुछ खाने के फौरन बाद उलटी या दस्त आ जाते हों तो इस औषधि से तुरन्त लाभ होता है। इस पर निर्भर रहा जा सकता है।

कार्बो वेज (Carbo Veg) ३०—डकार आने से थोड़ी देर के लिए चैन मिलता हो तो इस औषधि से लाभ होगा।

गैस का दबाव ऊपर की ओर हो तो इस दवा का बार-बार सेवन करने से आराम मिलता है।

कार्बो एनिमेलिस (Carbo Animalis) ३० २००—मुंह से खट्टा पानी निकलना, अधिक कमजोरी, जल्दी मितली और उलटी अधिक हो, आवाज की दिशा नहीं बता सकना, अधिक दुर्बलता, ऐसे लक्षणों में इस औषधि के सेवन से लाभ होता है।

नेट्रम फॉस (Netrum Phos) ३ एक्स, ३०—खट्टी उलटी और खट्टे डकार हों तो उसमें यह औषधि अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होती है।

पित्त बढ़ने की दशा में भी यह श्रेष्ठ औषधि है।

मैगनेशिया फॉस (Magnesia Phos) ३-एक्स, ६-एक्स—पेट में दर्द के साथ-साथ बदहजमी हो तो गुनगुने पानी में इस औषधि का सेवन कराने से लाभ होता है।

आर्सेनिकम एल्बम (Arsenicum Album) ३०—ऐसा देखा गया है कि कई बार गर्भवती को बहुत बर्चैनी हो जाती है, उसका उलटी करते ही मुख सूख जाता है, घूंट घूंट कर पानी सटकने से थोड़ा चैन मिलता है, लम्बी प्यास नहीं होती, रोगिणी एक स्थान पर लेटी नहीं रह सकती, उस अवस्था में इसका सेवन लाभकारी सिद्ध होता है।

एलेट्रिस फॅरिनोसा (Aletris Farinosa) ३०—एनीमिक स्त्रियों का गर्भावस्था में मिचली या उलटी के लिए इस औषधि का सेवन लाभदायक सिद्ध होता है।

सिपिया (Sepia) ३०—कुछ खाये पीये बिना ही प्रातः जी मिचलाना, खाने पर फिर उलटी हो जाना, दूध पीने के बाद बुरी हालत, विशेषकर उस समय जब उबला हुआ दूध पिया जाय, खट्टे डकार आना, ऐसे लक्षणों पर यह दवा अति श्रेष्ठ है।

क्रियाजोट (Kreasote) ३०—खाने के कई घण्टे बाद उलटी होना, दोपहर का खाना और शाम को उलटी करना, इस प्रकार के लक्षण होने पर इस औषधि के सेवन से लाभ होता है।

इसके कुछ लक्षण यह भी हैं कि पेशाब बहुत दुर्गन्धयुक्त आता हो

और योनि में खारिश होती हो तो उसमें भी यह औषधि लाभकारी सिद्ध होती है।

गर्भावस्था के सामान्य कष्ट

गर्भ स्थित होने पर कुछ बातें ऐसी हैं कि जो सामान्यतया होती ही हैं। जिनमें से अधिकांश का वर्णन और उनकी चिकित्सा ऊपर लिख दी गई है। अब कुछ सर्वसामान्य बातों पर भी हम प्रकाश डाल रहे हैं।

सिर दर्द—आँखों पर बोझ, मुख का लाल और गर्म होना, सिर दर्द के साथ ऐसा हो तो उस अवस्था में बलाडोना ३० की मात्रा प्रति दो घण्टे बाद लेने से आराम मिलता है।

अचानक सिर में दर्द हो जाय अथवा सिर दर्द का कारण जागते रहना हो तो नक्स वोमिका ३० का प्रयोग लाभकारी सिद्ध होता है।

कब्ज—यदि नींद न आने के कारण कब्ज हो गई हो, पाखाना जाने की हाजत हो किन्तु जाने पर न आये या थोड़ी मात्रा में बार-बार आये, और पेट साफ न हो तो नक्स वोमिका ३० का दो-तीन घण्टे के अन्तर से सेवन करना लाभकारी सिद्ध होता है।

मैंगनी जैसा मल निकलने पर कब्ज की शिकायत हो तो उसमें अ्रायानिया ३० की दो मात्राएँ नित्य सेवन से गर्भवती को लाभ होता है।

पाखाना शुष्क हो गाँठें निकलती हो, इस अवस्था में मैगनेशिया म्यूर ३० की मात्रा बहुत लाभदायक सिद्ध होती है।

दिल की धड़कन—यदि गर्भवती के दिल की धड़कन तेज हो तो डिजिटेलिस-३० का प्रयोग अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होता है, यह इसकी महौषधि है।

तनिक चलने फिरने से लगता है कि अभी दिल की धड़कन रुक जायेगी, नाड़ी की गति धीमी हो तो उसके लिए भी यह लाभकारी है।

नाड़ी की तीव्रता के साथ धड़कन हो और हृदयस्थल पर पीड़ा होती हो तो क्रटेगेस-क्यू टिंक्चर की १० १५ बूंद पानी में डालकर दीजिए, इससे लाभ होगा।

यह औषधि हृदय का टानिक भी है और बेचैनी में भी यह बहुत लाभदायक सिद्ध होती है।

अनिद्रा—गर्भिणी यदि अनिद्रा की रोगिणी हो तो उसका

मार्फिया ३० की मात्रा लाभकारी सिद्ध होगी।

चिन्ता के कारण अनिद्रा हो तो उस अवस्था में कैलिफॉस ३० की मात्रा लाभकारी सिद्ध होती है।

मासिक अनियमितता और गर्भस्थिति

इस प्रकरण में हम मासिक अनियमितता के विषय में वर्णन कर रहे हैं। इस अनियमितता का परिणाम यह होता है कि स्त्री भ्रम में पड़कर इसे अनियमितता न समझकर गर्भस्थिति समझ लेती है। यदि कभी मासिक स्राव विलम्ब से हो तो तुरन्त यह नहीं समझ लेना चाहिए कि यह गर्भस्थिति है। गर्भस्थिति के लक्षण उससे सर्वथा पृथक होते हैं और सामान्यतया वह स्त्री को तुरन्त विदित भी हो जाता है कि उसको गर्भस्थिति है। अतः जल्दबाजी में किसी प्रकार का निर्णय लेना उचित नहीं है इससे हानि होने की सम्भावना होती है।

यदि मासिक देर से आता हो और कई-कई दिन निकल जाएँ और गर्भस्थिति के जो लक्षण होते हैं वे भी न दिखाई दें तो उस अवस्था में पलसेटिला १००० शक्तिक्रम की एक मात्रा रात्रि के समय सेवन करें तथा दूसरे दिन पुनः उतनी ही मात्रा ली जा सकती है। यदि पहली मात्रा से रुका हुआ मासिक न आये तो दूसरी मात्रा देनी चाहिए अन्यथा नहीं। दूसरी मात्रा देने के उपरान्त निश्चित ही रुका हुआ मासिक आरम्भ हो जाएगा।

इस प्रकार जिसका मासिक विलम्ब से आता है सामान्यतया उसको प्यास कम लगती है, उसको खुली हवा में रहना रुचिकर लगता है गर्मी सहन नहीं कर सकती, तनिक सी बात पर आँसू बहा देती है इन सब लक्षणों में पलसेटिला बहुत लाभकारी होता है।

अधिक नमक खाने वाली गर्म स्वभाव की स्त्री का मासिक धर्म विलम्ब से आने लगे तो उसको नट्रम म्यूर २०० अथवा १००० शक्ति की मात्रा देने से लाभ होगा।

जिस स्त्री को चिन्ता रहती हो उसको भी मासिक में विलम्ब हो सकता है। ऐसी स्त्री को केलिफॉस २०० १००० की मात्रा लाभ करेगी।

दुःख के कारण जिस स्त्री का मासिक समय से पूर्व आ जाता हो तो उसको इग्नेशिया ३x अथवा २०० का सेवन कराने से अवश्य लाभ होगा।

कुछ स्त्रियाँ ऐसी भी होती हैं जिनको गर्भस्थिति के नाम से ही डर-सा लगने लगता है अथवा यों कहा जाय कि वे गर्भस्थिति नहीं चाहतीं यहाँ तक कि गर्भस्थित होने पर वे 'गर्भपात' कराने के लिए तैयार हो जाती हैं। इसके लिए वे उपयुक्त औषधि की खोज में रहती हैं अथवा ऑपरेशन द्वारा गर्भपात कराना उपयुक्त समझती हैं।

ऐसी स्त्रियाँ यदि समय रहते औषधियों का सेवन कर लें तो उनको गर्भ के कष्ट से मुक्ति मिल सकती है। किन्तु उनका ध्यान यह रखना होगा कि गर्भस्थिति अधिक दिन की न हो। आरम्भ में यदि औषधि का सेवन कर लिया जाय तो गर्भस्थिति समाप्त की जा सकती है।

इस प्रकार की औषधि का सेवन या तो सम्भोग के तुरन्त बाद कर लें या फिर मासिक स्राव की तिथि निकलते ही तुरन्त कर लें तो उससे समय पर मासिक आ जायगा और गर्भस्थिति नहीं रहेगी। किंतु कुछ स्त्रियाँ ऐसी भी होती हैं उन पर इस प्रकार की कोई औषधि प्रभावी सिद्ध नहीं होती उनको इसके लिए ऑपरेशन ही करवाना पड़ता है। उपयुक्त तो यही है कि यदि औषधि काम न दे तो फिर ऑपरेशन कराने से कभी-कभी लाभ के स्थान पर अधिक हानि भी हो सकती है। अतः उस समय प्रकृति के विधान को स्वीकार कर लेना ही उपयुक्त होता है। किसी प्रकार की तेज औषधियों का सेवन भी स्त्री के स्वास्थ्य पर हानिकर प्रभाव उत्पन्न करता है।

अनेक स्त्रियाँ ऐसी हैं कि जिनका समागम के बाद ही अथवा उसके कुछ दिन बाद यह आभास हो जाता है कि उनका गर्भ ठहर गया है। जो गर्भनिरोधक प्रसाधनों का आश्रय लेते हैं और उन प्रसाधनों की असफलता पर मन में तनिक-सा भी सन्देह उत्पन्न होने पर मासिक धर्म से पूर्व ही औषधियों का आश्रय लें तो उनको गर्भ के कष्ट से मुक्ति मिल सकती है।

ऐसे दम्पतियों को अपनी जीवनचर्या पर विशेष ध्यान देना चाहिए। उनको चाहिए कि वे सन्तान के लिए कम से कम स्थान रखें। गर्भ की सम्भावना तब तक रहती है जब तक गर्भाशय का मुख खुला रहता है। यह अवस्था सामान्य स्त्री में मासिक के अनन्तर पहले सप्ताह में और अगले मासिक धर्म आने से एक सप्ताह पूर्व सम्भव है। अतएव सन्तान की इच्छा न करने वाले समझदार दम्पतियों को बीच के दो सप्ताह में सम्भोग करना चाहिए।

इसके अतिरिक्त एक-दो अन्य बातों पर भी ध्यान देना आवश्यक है।

दो तीन बच्चे उत्पन्न हो जाने के बाद गृहस्थ का सुख नियम का पालन बच्चे पर निर्भर करता है। इसमें विचार और आहार मुख्य बातें हैं। गृहस्थियों को चाहिए कि सात्विक आहार लें, मिर्च मसाले तथा मांसाहार से दूर रहें और सरल तथा सादा जीवनयापन करें जिससे कि कामेच्छा से व्याकुल रहने से बचा जा सके। उनको सदा यह स्मरण रखना चाहिए कि वे पशु नहीं मानव हैं और उनको अपना जीवन स्वस्थ, सुखमय और चिंतारहित बनाना चाहिए। यदि मनुष्य की इच्छाएँ सीमित हों तो उसको अधिक दुख नहीं झेलने पड़ते और इस प्रकार उसका जीवन सुख शान्तिमय व्यतीत होता है।

अब हम गर्भनिरोधक औषधियों का वर्णन कर रहे हैं।

समागम के उपरान्त यदि दम्पति को सन्देह हो कि उनके द्वारा अपनाये कृत्रिम साधन असफल रहे हैं तो उस अवस्था में स्त्री को एपिस मैलिफिका ३ एक्स की तीन मात्राएँ दो तीन दिन तक सेवन करनी चाहिए। इसके साथ ही सादे पानी से योनि में 'डूश' करने का ढंग भी बहुत सफल माना गया है।

तीन दिन तक एपिस मेलिफिका का सेवन करने के उपरान्त फिर शेष दिन बीतने की प्रतीक्षा करनी चाहिए। यदि अगली मासिक तिथि से पूर्व या बाद में गर्भ के कुछ लक्षण प्रकट हों तो फिर दो दिन तक इसी औषधि को नित्य प्रति तीन चार बार सेवन करना चाहिए। इससे मासिक धर्म चालू हो जायेगा।

जिन स्त्रियों को मासिक प्रायः विलम्ब से आता है प्रति मास कुछ दिन ऊपर चढ़ जाते हैं उन्हें अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। सामान्य अवस्था में उन्हें पलसेटिला की १००० की एक मात्रा रात को सोते समय लेने से कार्यसिद्धि हो जायेगी। क्योंकि रुके हुए मासिक धर्म को नियमित करने के लिए बहुत ही उत्तम औषधि है। किन्तु इसको गर्भपात की औषधि नहीं मान लेना चाहिए। यह अनियमित मासिक धर्म की औषधि है यही विचार कर इसका सेवन किया अथवा कराया जाना चाहिए। गर्भपात में एपिस मेलिफिका अधिक सफल होती है।

सहानुभूति प्रकट करने या अपने कष्ट का वर्णन करते समय रो देना चटपटे नमकीन पदार्थ खाने वाली को नेट्रम म्यूर २०० १००० पर निर्भर रहना चाहिए। सन्देह होने पर १००० शक्तिक्रम की मात्रा सफल सिद्ध होती है।

यह ध्यान में रखना चाहिए कि अधिक समय न बीते। अवसर यदि

निकल गया तो बाद मे फिर इससे लाभ की अपेक्षा हानि होने की सम्भावना रहती है।

सुखी दाम्पत्य जीवन

स्वानुभव के आधार पर अब हम इस प्रकरण म स्त्री पुरुषो के परस्पर बनते बिगडते सम्बन्धो की चर्चा कर रहे हैं। ऐसे सम्बन्ध जिनम परस्पर बिछाह अथवा तलाक तक की नौबत आ जाती है।

इस प्रकार के लक्षण उभरने पर समझदार दम्पति किस प्रकार इनसे पार पा सकते हैं और किस प्रकार अपने भावी जीवन को सुख और शान्तिमय बना सकते हैं, पति पत्नी मे परस्पर एक दूसरे के प्रति उत्पन्न अरुचि को किस प्रकार दूर किया जा सकता है यही विचारणीय विषय है।

सम्भवतया कोई यह समझ सकता है कि क्या पति पत्नी मे कभी ऐसा समय भी आ सकता है कि वे परस्पर बिछुडने की बात सोचें। अनुभव तो यही बताता है कि आता है अनेक ऐसे दम्पति है जो विछोह का जीवन, आज भी, व्यतीत कर रहे हैं। इनमे से अनेक ऐसे दम्पति भी होंगे जिनके न केवल छोटे छोटे अपितु बडे-बडे बच्चे भी होगे। कोइ बच्चा अपनी माता के पास है तो किसी का बच्चा अपने पिता के पास। यह आधुनिक सभ्यता की देन है अन्यथा प्राचीन समाज मे पति पत्नी किसी न किसी प्रकार परस्पर मिलकर निर्वाह कर ही लेते थे। यह स्थिति दु खमय थी अथवा कि आज की स्थिति दुखमय है, यह विवाद का विषय है, हम इसपर प्रकाश डालना उपयुक्त नही समझते।

सर्वप्रथम हम विवाह से पूर्व की मानसिक अवस्था का उल्लेख कर रहे हैं।

जब युवक और युवती यौवन मे प्रविष्ट होते है तभी उनके मन म परस्पर समागम की इच्छा अंकुरित होने लगती है। स्त्री पुरुष का यौन सम्बन्ध एक नैसर्गिक प्रक्रिया है। तदपि ऐसे स्वस्थ युवा युवक युवतिया जो विवाह म अरुचि व्यक्त करते थे उनको हमने अपनी चिकित्सा से स्वस्थ कर इस योग्य बनाया कि वे विवाह के प्रति रुचि व्यक्त करने लगे।

ऐसे युवक-युवतियो की हमने चिकित्सा की है जो कि शारीरिक स्वा

स्थ्य की दृष्टि से सर्वथा स्वस्थ और सुपुष्ट होने पर भी विवाह के लिए सर्वथा अरुचि व्यक्त करते थे, यौन सम्बन्धों के लिए जिनके मन में किसी प्रकार का लगाव और आकर्षण नहीं था। माता पिता ने यथाशक्ति प्रयत्न कर लिया किन्तु लडका अथवा लडकी विवाह के लिए तैयार नहीं।

एक युवक जो विवाह के लिए बिलकुल भी तैयार नहीं होता था, उस की माता इमसे बहुत दुखी थी। उसको मेरे पास लाया गया। मैंने उसकी चिकित्सा की और उससे उसकी मन स्थिति में परिवर्तन हुआ। परिणाम स्वरूप विवाह में अरुचि मिट गई। उसका विवाह कर दिया गया। इससे न केवल उसकी माता की मनोकामना पूर्ण हुई अपितु युवक स्वयं भी गृहस्थ में अपने मन से प्रविष्ट हुआ।

इस प्रकार की मन स्थिति वाला व्यक्ति यदि हो तो उसका पलसेटिला दवा की शक्ति की मात्रा दो दिन छोडकर देने से लाभ होता है।

जो पुरुष विवाह की इच्छा नहीं करता, जिनका स्वभाव बदला लेने वाला है, जो स्त्री से घृणा करते हैं, ऐसे पुरुष के लिए लकेसिस २०० उपयुक्त औषधि है।

पिकरिक एसिड—२०० भी इस अवस्था में अच्छा काम करती है।

विवाहोपरान्त जिन पति पत्नियों के सम्बन्ध मधुर नहीं रह पाते, आवेश में आकर साधारण दम्पति परस्पर सम्बन्ध विच्छेद करने के लिए उद्यत हो जाते हैं इस स्थिति में किस प्रकार के लक्षण उभर आते हैं और उनकी क्या चिकित्सा होनी चाहिए इस विषय पर नीचे विस्तार से लिख रहे हैं।

कोई युवक अति कामुक प्रकृति का होता है उसमें स्त्री सहवास की इच्छा इतनी अधिक होती है कि उसकी पूर्ति न होने पर वह अभद्र व्यवहार करने पर भी उतर आता है, इससे पत्नी दुखी होती है, उसके मन और स्वास्थ्य पर इसका विपरीत प्रभाव पडता है। गर्भावस्था में भी उस का पति इस बात का ध्यान नहीं रखता कि पत्नी को आराम मिलना चाहिए इसके विपरीत वह अपनी इच्छा को ही सर्वोपरि मानता है। इसी प्रकार पत्नी ने प्रसव किया और बच्चा उसका दूध पीता है उस अवस्था में भी पति नित्य स्त्री समति की इच्छा करता है।

इन सब अवस्थाओं में उस पुरुष को निम्नलिखित औषधियों का सेवन करना चाहिए। औषधि तथा उसके लक्षणों का विस्तृत विवरण इस प्रकार है—

एनाकार्डियम (Anacardium) २००, १०००—जिन युवकों को उपदंश (सिफलिस) का रोग हो चुका हो अथवा उनके परिवार में पिता

या दादा या अथवा नाना को यह रोग हो चुका हो उनका मानसिक लक्षण कुछ इस प्रकार का हो—आलसी और सुस्त स्वभाव, आत्मविश्वास की कमी स्नायुओं की दुर्बलता।

ये इसके मुख्य लक्षण हैं। यदि कुछ खा लेने से कष्ट दब जाय तो इस औषधि का २०० शक्ति की एक मात्रा समय समय पर अर्थात् चार-पाँच दिन बाद और १००० शक्ति की मात्रा दो सप्ताह बाद लेने से मन स्वस्थ हो जाता है।

इसके सेवन से मन पर नियन्त्रण करने की शक्ति आ जाती है।

बेटा म्यूर (Baryta Mur)—हर प्रकार के उन्माद जिसमें यौन सम्बन्ध की इच्छा या उन्माद भी सम्मिलित है, की उत्तम औषधि है।

इसके लक्षण हैं, कामेच्छा का तीव्र होना टाँगों में दुर्बलता का अनुभव होता है। दो सौ शक्तिक्रम की मात्रा का प्रयोग उपयुक्त है।

कन्थरिस (Cantheris) ३०, २००—पुरुषेन्द्रिय में उत्तेजना में तीव्रता के साथ दर्द भी हो, बार-बार पेशाब करने की इच्छा हो, पेशाब करने के बाद पहले या बीच में काटने वाली जलन। इन लक्षणों के साथ यौन सम्बन्ध की तीव्र इच्छा को सामान्य बनाने के लिए इस औषधि का प्रयोग प्रभावी सिद्ध होता है।

लाइकोपोडियम (Lycopodium) २००, १००० —जिस युवक अथवा पुरुष को गैस की शिकायत हो, निचले भाग में गैस होती हो यौन सम्बन्ध की बहुत तेज भूख रहती है किन्तु यौनक्रिया में प्रसन्नता नहीं होती दुर्बलता के कारण शीघ्र पतन हो जाता है ऐसी अवस्था में लाइकोपोडियम की उच्च शक्ति की एक मात्रा बहुत ही प्रभावी होती है।

यह औषधि नपुंसकता में बहुत ही उत्तम पाई गई है।

नक्स वोमिका (Nux Vomica) ३०, २००—जिसका स्वभाव उत्तेजक हो, मन पर नियन्त्रण न हो, हर समय स्त्री संगति के लिए आतुर, इतना आतुर कि थककर चूर होने पर ही जिसकी तृप्ति होती हो, हाजमे से कमजोर, कब्ज मल एक बार में पूरा नहीं उतरता, थोड़ा-थोड़ा कर कई बार जाना पड़ता है।

इन लक्षणों में नक्स वामिका उपयोगी औषधि है।

पिक्रिक एसिड (Picric Acid) २०, २००—काम में जिसकी रुचि न होती हो शरीर तथा मन से जो थका मादा-सा हो, तीव्र इच्छा वाला, जल्दी और तेजी से वीर्य स्खलित होना, गर्मी के कारण जिसकी दशा बिगड़ जाती हो, ऐसे लक्षणों पर इस औषधि का प्रयोग लाभकारी सिद्ध होता है।

पलसेटिला (Pulsatilla) ३०, २००, १००० —सामान्यतया यह स्त्रियों की औषधि है किन्तु पुरुषों पर भी इसका अच्छा प्रभाव होता है।

जिस युवक की इच्छा सदा तीव्र रहती हो, पेशाब रुक रुककर आता है जिसके साथ में अण्डकोष तक दर्द रहता है, स्राव पीला होता है। इन लक्षणों पर इसका प्रयोग लाभकारी है।

स्टाफेसेग्रेरिया (Staphysagria) २००, १०००—यह औषधि सब प्रकार से शुद्धि की औषधि मानी जाती है। यह विचार और कर्म से भी शुद्धि करती है।

जिसे हर समय यौन सम्बन्धी बातों का ही ध्यान रहता हो, निरन्तर उसी प्रकार की बातें करना, इच्छा का तीव्र होना, इच्छापूर्ति न होने पर क्रोध करना, आँखों पर देखने से अपराधी का सा भास होना, इस औषधि के मुख्य लक्षण हैं।

स्ट्रेमोनियम (Stramonium) ३०, २००—जो युवक यौन सम्बन्ध की ही बात करता हो हर समय योजना बनाना, गन्दी बातों से न थकने वाला, नग्न अपनी जननेन्द्रिय पर हाथ रखने वाला, मस्तिष्क उत्तम गर्म, इन लक्षणों पर इसका प्रयोग लाभकारी है।

फासफोरस (Phosphorus) २००—न रोक पाने वाली यौन इच्छा रहती हो, गन्दे और यौन सम्बन्धी स्वप्न आना वीर्य का जल्दी स्खलित हो जाना, यौनक्रिया की शक्ति कम रहना तदपि इच्छा तीव्र होती है। इन लक्षणों पर इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

सलिक्स नाइजरा (Salix Nigra)—इसके प्रयोग से न केवल उत्तेजना रहती है अपितु वह अपनी सामान्य अवस्था में भी आ जाती है। इस प्रकार के रोगियों में इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

सेलिनियम (Selenium) २००—यह महान औषधि है। जिसे नींद में भी वीर्यपात होता हो यौनेच्छा बहुत होती हो कई बार यत्न करते ही लज्जा का सामना करना पड़ता है तदपि स्त्री को तंग करता रहता है रह नहीं सकता, वीर्य बहुत पतला गर्मियों में लक्षणों का अधिक स्पष्ट रूप में उभर आना इस प्रकार के लक्षणों में यह औषधि लाभकारी होती है।

ट्यूबरक्यूलिनम (Tuberculinum)—जिस युवक के परिवार में यक्ष्मा का इतिहास रहा हो और युवक की तीव्र यौनेच्छा रहती हो उसके लिए यह उत्तम औषधि है।

इसकी २०० अथवा १००० शक्तिक्रम की मात्रा देने से लाभ होता है।

कोनियम (Conium) २००—जो व्यक्ति विधुर है अथवा अविवाहित जीवन व्यतीत कर रहा है, उसकी कामेच्छा शमन के लिए इस औषधि का प्रयोग अत्यन्त लाभकारी होता है।

कामोद्दीप्त युवती

पुरुष की ही भाँति अनेक महिलाएँ भी ऐसी होती हैं कि जिनकी कामेच्छा प्रबल होती है और उनकी तृप्ति बड़ी कठिनाई से हो पाती है।

कुछ वर्ष पूर्व होमियोपैथिक जरनल में एक महिला का इस प्रकार का विवरण प्रकाशित हुआ था कि अपने मनचाहे अथवा प्रेमी से विवाह करने के उपरान्त भी उसकी कामेच्छा तृप्त नहीं होती थी। उसको इस प्रकार की लत लग गई थी कि वह अपने कुत्ते को अपनी छाती पर लिटा लेती थी और फिर उससे अपने स्तनों को चाटने देती थी। उसे इस प्रकार करवाने पर आनन्द की प्राप्ति होती थी।

उसके लक्षणों पर ध्यान दिया गया तो पता चला कि उसका मासिक स्राव काला आता था। विवाह किये सात वर्ष हो गये थे किन्तु तब तक भी गर्भस्थिति नहीं हुई थी।

यह अवस्था जान कर उसके पति ने उसकी चिकित्सा कराने का यत्न किया। सौभाग्य से उसको चिकित्सा से लाभ हुआ। प्लेटिना की एक लाख शक्ति की एक मात्रा से ही लाभ हो गया था।

यहाँ हम इस प्रकार की युवतियों के लिए कुछ मुख्य मुख्य औषधियों का लक्षण सहित विवरण दे रहे हैं।

प्लेटिना (Platina) २०० १०००—जिसको यौन सम्बन्धों की प्रबल इच्छा रहती हो, जिसका मासिक स्राव काले रंग का हो, जो अन्य महिलाओं को अपने से घटिया समझती है, यौन की उसकी भूख मिटती ही नहीं, हर समय समागम की तीव्र इच्छा करती हो इन लक्षणों में इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

सलिक्स नाइग्रा (Salix Nigra) २००—यह औषधि स्त्री और पुरुष दोनों के लिए समान रूप से उपयोगी है।

जिसको यौन सम्बन्ध की तीव्र इच्छा रहती हो, मासिक में बहुत

कठिनाई होती हो, मासिक से पहले और बाद में घबराहट होती हो, आँखों में लालिमा हो, इन लक्षणों में इसका प्रयोग लाभकारी सिद्ध होता है।

सिपिया (Sepia) २००—जो स्त्री अपनी टाँगों को क्रॉस करके बैठती हो, जो यह अनुभव करती हो कि कुछ निकल अथवा गिर जायगा, जो उसे पसन्द करते हैं उनके प्रति उदासीन भाव हो, मासिक धर्म विलम्ब से आता हो, दूध पीने से पेट खराब हो जाता हो, अचार-चटनी का शौक हो, समागम की बहुत इच्छा होती हो।

इस प्रकार के लक्षणों में इसका प्रयोग उपयोगी होता है।

पल्सेटिला (Pulsatilla)—जिसे विलम्ब से मासिक आता हो, प्यास कम लगती हो, मासिक के दौरान भी तीव्र कामेच्छा रहती हो, इन लक्षणों पर इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

कल्केरिया कार्ब (Calcarea Carb)—जिसे मध्याह्नोत्तर समागम की तीव्र इच्छा होती हो उस स्त्री के लिए यह उत्तम औषधि है।

मोटी-ताजी सुन्दर स्त्री के लिए उत्तम औषधि है।

बेलाडोना (Belladonna) २००—समागम की निरंतर इच्छा, रात्रि के समय भी ठीक प्रकार से न सो सकना, इन लक्षणों में इस औषधि का प्रयोग लाभकारी सिद्ध होता है।

जिंकम मेटलिकम (Zincum Metallicum) २००—इस औषधि के लक्षण बेलाडोना के लक्षणों के समान ही हैं।

यदि रोगिणी को बेलाडोना से लाभ न हुआ हो तो उस अवस्था में इस औषधि का प्रयोग लाभकारी होता है।

मस्कस (Moschus) २००—जो स्त्रियाँ काफी आयु की हैं अथवा जिन बूढ़ी स्त्रियों को कामेच्छा सताती है उनके लिए यह सफल औषधि है।

एपिस मेलिफिका (Apis Melifica) ३०, २००—जो स्त्रियाँ विधवा हो गई हैं अथवा अविवाहित हैं, उनकी तीव्र यौनेच्छा का इसके प्रयोग से शमन किया जाता है।

कुछ अनुभूत प्रयोग

कभी-कभी विचित्र प्रकार के रोगी से सामना हो जाता है। एक विवाहित दम्पति थे। पति-पत्नी म परस्पर प्रेम भी बहुत था। पति अपनी पत्नी से प्रसन्न था और पत्नी भी अपने पति से प्रसन्न थी। उनके दो बच्चे भी थे।

किन्तु सहसा पत्नी मे कुछ लक्षण उभर आये। उसे सामागम के उपरान्त अप्रसन्नता होती थी। समागम के बाद कई दिन तक तबियत खराब रहने लगी, तबियत गिरी गिरी-सी रहती कुछ भी अच्छा नही लगता था, योनि के भीतर पीडा भी होती थी जो कि समागम के समय नही होती थी, समागम के लिए उसम अरुचि भी नही थी। किन्तु अपनी बाद की अप्रसन्नता के कारण वह समागम से दूर रहना चाहती थी।

गर्मियो के दिन थे, जब व चिकित्सा के लिए आये थे।

लक्षण स्पष्ट नही थे तदपि मैंने उस महिला को नैट्रम म्यूर की २०० शक्ति की एक खुराक उसी समय दे दी और एक खुराक और बनाकर उसे सुरक्षित रखने के लिए कह दिया। मेरा अभिप्राय था कि यदि पहली मात्रा का प्रभाव न हुआ हो तो दूसरी मात्रा ले ली जाय।

पति-पत्नी को कहा गया कि इस औषधि सेवन के दो-तीन दिन बाद ही वे सहवास करें तब तक सयम से काम लें। यदि तब भी पीडा और अप्रसन्नता हो तो फिर दूसरी मात्रा का प्रयोग करें, अन्यथा नही।

यह प्रयोग सफल रहा। उनको दूसरी मात्रा की आवश्यकता ही नही पडी, एक मात्रा से उनकी चिकित्सा हो गई।

इसी प्रकार एक अन्य युवती थी। उसके एक बच्चा भी था। उस युवती का सहवास के समय पीडा होती थी। यह कष्टदायक होने लगा था, कारण उस युवती को विदित नही था।

उस युवती को भी नट्रम म्यूर की २०० शक्ति की एक मात्रा प्रतिदिन एक सप्ताह तक दी गई। इससे उसको लाभ हुआ और पीडा समाप्त हो गई।

एक अन्य महिला थी। उनके भाई की अकाल मृत्यु हो गई। कई मास

के बाद उसने अनुभव किया कि उसे अपने पति की सगति से अरुचि हो गई है। पति ने समझा कि भाई की मृत्यु के कारण वह दुखी और उदास रहती है। उसने उसके साथ सहानुभूति का व्यवहार किया, उसको समझाया-बुझाया, किन्तु पत्नी की उदासी और अप्रसन्नता दूर नही हुई।

इससे पति को चिन्ता हुई। वह विचार करने लगा कि यदि यह स्थिति स्थायी हो गई तो उसका भावी जीवन नारकीय हो जायेगा। अभी तो युवावस्था ही है। उसने होमयोपैथी चिकित्सा कराने का निश्चय किया।

उसको इग्नेशिया २०० की मात्रा दी गई। दो सप्ताह की औषधि से स्थिति में कुछ सुधार होने लगा। अत वही चिकित्सा चालू रखी और उस का परिणाम यह हुआ कि एक दो मास में वह स्त्री सामान्य गृहणी सी हो गई। इस प्रकार उनके परिवार का सकट टल गया।

नपुसकता

नपुसकता पुरुष के लिए अभिशाप है। यदि पुरुष नपुसक हो तो उसका गृहस्थ जीवन सुखी नही रह सकता। उसके लिए जीवित ही मृत समान हो जाना पडता है। उसे स्वय से ही घृणा होने लगती है।

यहाँ हम उसकी चिकित्सा पर प्रकाश डाल रहे हैं।

लाइकोपोडियम (Lycopodium) २००, १०००, १० ०००—दुर्बल मनुष्य की मान मर्यादा स्थिर रखने के लिए यह महान् औषधि मानी गई है। पति पत्नी की आयु का अन्तर अधिक हो जैसे वृद्ध व्यक्ति विवाह करता हो, तो उसको इस औषधि का सेवन करना चाहिए। इस दवा की उच्च शक्तिक्रम की दस हजार या एक लाख शक्ति की मात्रा सेवन करने पर उस वृद्ध में आत्मविश्वास का सचार हो सकता है।

एग्नस कसटस (Agnus Castus) २००—जिसका अधिक सहवास करते रहने और वीर्यपतन के कारण नपुसकता आ गई हो स्त्री सगति के लिए मन न करता हो उसको भय रहता है कि वह स्त्री सम्भोग के लिए समर्थ नही है। उसके लिए २०० शक्ति की एक मात्रा प्रति तीसरे दिन देने से लाभ होता है।

सबल सेरुलेटा (Sabal Serrulata)—जिसको पेशाब बहुत मात्रा

हो, जिसके प्रोस्टेट ग्लैंड्स बढ गए हो, उन लक्षणो मे यह अत्यन्त उपयोगी होती है। नपुसकता की यह महान औषधि है।

पानी मे पाँच बूदें डालकर दिन मे चार बार प्रतिदिन लेने से लाभ होता है।

जिन स्त्रियो के स्तन छोटे हो अथवा उनका उभार नष्ट हो गया हो, वे भी यदि इसका सेवन करेंगी तो उनका उभार बढ जाएगा।

एनाकार्डियम (Anacardium) २०० १०००—जो वेश्यागमन से अपनी शक्ति नष्ट कर चुके है, जो किसी एक बात पर टिक नही सकते, जो अपने निणय पर स्थिर नही रह सकते ऐसे पुरुषो के लिए यह अत्यन्त उपयोगी है। २०० अथवा १००० की मात्रा से लाभ होता है।

सलिनियम (Selenium) २००—जिसे शीघ्रपतन का रोग हो जिसे नीद मे वीयपात हो जाता हो, टाँगो में दद होता हो, इस प्रकार के लक्षणो मे यह उत्तम औषधि है।

इसका निरन्तर प्रयोग किया जाना चाहिए। यह धातु से बनी होती है और विषैली भी नही है।

स्टाफेसगेरिया (Staphysagria) २०० १०००—जो पुरुष नपुसक होने के साथ-साथ क्रोधी भी हो, इच्छा तो बहुत रहती है किन्तु शक्ति क्षीण हो चुकी है उसको यह ध्यान रहता है कि वह अयोग्य है और इसके कारण उसको चिन्ता रहती है क्रोध भी आता है, इच्छा प्रबल होने से सदा यौन सहवास पर ही ध्यान रहता है, इन लक्षणो मे इस औषधि का प्रयोग बहुत लाभकारी होता है।

बाँझपन

दाम्पत्य जीवन मे बाँझपन बहुत बडा अभिशाप है। जो स्त्री गभ धारण नही कर सकती उसका जीवन नीरस ही नही अपितु व्यथ है। नपुसकता यदि पुरुष के लिए अभिशाप है तो बन्ध्यात्व स्त्री के लिए अभिशाप है। बन्ध्या को न केवल समाज मे सम्मान प्राप्त नही होता है अपितु उसकी स्वय की मानसिक स्थिति ऐसी हो जाती है कि वह रुग्ण हो जाती है। अपने परिजनो, विशेषतया पति, सास, श्वसुर, ननद आदि की दृष्टि

में वह एक प्रकार से अपराधी सी रहती है। यदि परिवार संयुक्त हो तो उसका रहना दूभर हो जाता है। भले ही उसका पति उसको कुछ न कहता हो इसे वह अपने दुर्भाग्य की बात समझकर संतोष कर ले किन्तु उसकी अपनी ही जाति की स्त्रियाँ उसको सुख की सांस नही लेने देती। प्रात से सायंकाल तक उसको ताने दे-देकर छलनी कर देती हैं।

यदि पति की किसी दुबलता के कारण भी पत्नी गर्भधारण नहीं कर सकती तो भी दोष उसका ही माना जाता है। सुशिक्षित नारी यह जानती है कि इसमें दोष अथवा कमी जो कुछ है वह उसके पति की है तदपि नारी समाज अथवा उसके परिवार वाले उसे ही दोषी मानते हैं। उसको मौन रहकर यह सब सहन करना पडता है। अपने गृहस्थ को सुखी रखने के लिए उसको यह यातना सहनी पडती है।

कौन नारी है जो बच्चे के लिए न तडफती हो? प्रत्येक नारी अपनी कोख से अपनी सन्तान की उत्पत्ति के लिए लालायित रहती है। जिनकी सन्तान नही होती वे किसी अन्य के बच्चे को अपना कर गोद लेते हैं, किन्तु उससे उनको वह मानसिक तृप्ति और संतोष नहीं मिलता जो कि स्त्री को अपनी कोख से और पुरुष को अपनी पत्नी से अपने रक्त का प्रतिनिधि मिलने पर होती है। वंध्या अथवा थोपी गई वंध्या का यह सब भीतर ही भीतर दबाना पड जाता है। पत्नी कभी अपने पति को नही धिक्कारती।

किसी स्त्री की कोख से निरन्तर कन्या ही जन्म लेती रहती हैं और उसके कोई पुत्र उत्पन्न नही होता तो इसके लिए भी स्त्री को ही दोषी माना जाता है। जब कि विज्ञान द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि स्त्री केवल भूमि है उस पर जैसा भी बीजारोपण होगा वैसा ही अकुर उसमें उगेगा। पुरुष के शुक्राणुओं में यदि पुत्र के कण नहीं हैं तो इसके लिए भी स्त्री को ही दोषी ठहराया जाता है।

ऐसी बहुत कम स्त्रियाँ होती हैं जिनके गर्भाशय न हो अथवा उसके गर्भाशय में किसी प्रकार का कोई दोष हो। यदि किसी के दोष हो भी तो उसके लिए सर्जन की सहायता से उस दोष को दूर किया जा सकता है जिससे कि स्त्री का बाँझपन मिटाया जा सके। अत सर्वप्रथम पुरुष का शारीरिक निरीक्षण करवाना आवश्यक है। उसके वीर्य का भी परीक्षण होना चाहिए। सामान्यतया दोष पुरुष का होता है और उसे स्त्री के माथे पर मढ दिया जाता है।

पुरुष के नपुंसकत्व की चिकित्सा के विषय में हम पिछले अध्याय में विस्तार से वर्णन कर आये हैं। उसमें उल्लिखित औषधियों का आश्रय पुरुष

का नपुसकत्व समाप्त किया जा सकता है। किसी भी स्त्री को वन्ध्या घोषित करने से पूर्व उचित यही है कि पुरुष का परीक्षण करवा लिया जाए।

किन्तु यदि पुरुष सर्वथा स्वस्थ है और पत्नी दुर्बल है तो निम्नलिखित लक्षणो पर औषधि का चयन करके स्त्री की चिकित्सा की जानी चाहिए। चिकित्सा की अवधि मे पुरुष को चाहिए कि वह सयम से काम ले। आत्म-नियन्त्रण करे।

१ यदि गर्भाशय अविकसित है तो उस स्थिति मे कोई भी औषधि लाभदायक सिद्ध नही हो सकती। कदाचित ऑपरेशन ही इसमे सहायक हो सकता है।

२ किन्तु यदि स्त्री की डिम्बग्रन्थियो मे किसी प्रकार का दोष हो तो, स्राव रुक-रुककर आता हो, स्तनो मे पीडा हो तो 'कोनियम' इसके लिए उत्तम औषधि है। २०० की शक्ति मे सेवन कराने से अवश्य लाभ होगा।

३ यदि स्त्री को अधिक मात्रा मे ल्यूकोरिया हो तो निरन्तर बोरेक्स का प्रयोग उत्तम है।

४ स्त्री दुबली-पतली हो तदपि भूख पूर्ण रूप से लगती हो तो उसको आयोडम ३० के सेवन से लाभ होता है।

५ मासिक धर्म अनियमित हो विलम्ब से आता हो ऐसा अनुभव करना कि योनि द्वार से कुछ खिसक जाएगा तो उस स्थिति मे सीपिया लाभदायक होता है। यह तीस और दो सौ शक्ति मे दिया जा सकता है।

६ रक्त की कमी, सहानुभूति पसन्द न करना, जल्दी क्रोध कर लेने वाली स्त्री के लिए नेट्रम म्यूर ३० या २०० की मात्रा लाभदायक होती है।

औरम मेटलिकम (Aurum Metallicum) ३०, २००—यानि के साथ कपडा लगने पर विचित्र सी सनसनाहट अनुभव करना, जरायु बढा हुआ अनुभव करना जरायु बाहर निकलना, इन लक्षणो पर इस औषधि का प्रयोग लाभकारी होता है।

कल्केरिया कार्ब (Calcarea Carb) ३०, २००– मासिक स्राव अधिक होता हो अथवा जल्दी-जल्दी होता हो तो इन लक्षणों मे इस औषधि का प्रयोग उत्तम है।

यह फूली हुई सुन्दर स्त्रियो पर अधिक उपयोगी सिद्ध होती है।

प्लेटिना (Platina) ३०, २००—जो स्त्रियाँ बहुत अधिक कामोत्तेजना से पीडित रहती हैं सन्तान उत्पन्न करने की अपेक्षा जिन्हे

अपनी कामवासना की तृप्ति की अधिक चाह रहती है, जो पुरुष सहवास की बहुत ही भूखी रहती है, उनके लिए यह बहुत उत्तम औषधि है।

फासफोरस (Phosphorus) ३०, २००—मासिक धर्म रुक-रुककर और जल्दी होता हो, किन्तु काफी दिन तक रहता हो, स्तनों में सुई चुभने का सा दर्द, ल्यूकोरिया काफी तेज होता हो मासिक की तिथि से पहले ही रक्त रिसने लगता है तथा जो स्त्रियाँ लम्बी होती हैं, उनके लिए यह उत्तम औषधि है।

ट्रिलियम पेण्डूलम (Trillium Pendulum) ३०, २००—जरायु से तीव्र रक्तस्राव होता हो, ऐसा अनुभव होता हो कि कूल्हे और पीठ टुकड़े टुकड़े हो रहे हैं कमकर बाँध रखने से अच्छा अनुभव होना ल्यूकोरिया बहुत अधिक होता हो उस स्थिति में यह औषधि उत्तम है।

लैकेसिस (Lachesis) २००—जिस स्त्री को मासिक स्राव बहुत ही कम और मात्रा में भी थोड़ा होता है, सामान्यतया दर्द रहता है किन्तु मासिक स्राव प्रारम्भ होने पर दर्द का मिट जाना स्तन नीले पड़े हुए और उन पर सूजन होना, स्राव में छिछड़े से निकलते हों गर्मी से सिर तथा मुख तमतमाना हो तो इस औषधि का सेवन कराना चाहिए।

इसमें कोई सन्देह नहीं लक्षणों के आधार पर यदि औषधियों का चयन किया जाए तो इनसे आशातीत सफलता मिल सकती है। किन्तु यह भी इस पर निर्भर करता है कि स्त्री और पुरुष संयम का जीवन व्यतीत करें। स्त्री का संतुलित और शुद्ध आहार और उसके शुद्ध विचार उसको माँ बनने में सहायता कर सकते हैं।

इसमें जितना उत्तरदायित्व स्त्री का है उतना ही पति का भी है। सर्वाधिक आत्मसंयम की आवश्यकता पुरुष के लिए है। सामान्यतया यही देखा जाता है कि पुरुष में आत्मसंयम की बहुत कमी होती है। वह स्त्री की पीड़ा की भी परवाह नहीं करता।

पति पत्नी गृहस्थ रूपी गाड़ी के दो पहिये हैं और दोनों पहियों का समान और स्वस्थ रहना है, तभी गाड़ी ठीक प्रकार आगे चल सकती है, यदि एक में भी खराबी आ गई तो फिर उसका अधिक चल पाना बहुत कठिन हो जाता है।

गर्भ धारण और प्रसव

गर्भ धारण और प्रसव, यह न सुनने और देखने में तो यह सब स्त्री का ही काम है किन्तु इसमें बहुत बड़ा भाग पुरुष का भी होता है। यदि यों कहा जाय कि उतना ही भाग होता है जितना पत्नी का तो कोई अतिशयोक्ति नहीं। इस स्थिति का पति-पत्नी दोनों के लिए समान महत्त्व है। यहाँ हम गर्भ धारण से प्रसव काल तक दम्पति को क्या करना चाहिए और किस प्रकार रहना चाहिए, इस पर प्रकाश डाल रहे हैं।

गर्भस्थिति होने अथवा उसका ज्ञान होने पर यदि समझदार पति थोड़ा समझदारी और संयम से काम ले तो बहुत बड़ी समस्या का समाधान बड़ी सरलता से ही हो जाएगा। किसी भी पति के लिए यह कोई कठिन बात तो नहीं होनी चाहिए, किन्तु आज का युग कुछ इस प्रकार का है कि उसमें वासना अधिक है, भावना कम।

इस दिशा में हम पति पर किसी प्रकार बहुत बड़ा अंकुश रखना नहीं चाहते। पति से अपेक्षा यही की जाती है कि वह इस अवसर पर अपने ध्यान को थोड़ा विकेन्द्रित करे। सुशिक्षित दम्पति यह भलीभाँति जानते हैं कि विवाहित जीवन का वास्तविक आनन्द न केवल अपने सुन्दर और स्वस्थ बने रहने में है अपितु उनके बच्चे भी उतने ही सुन्दर और स्वस्थ होने चाहिए।

अतः गर्भस्थिति का ज्ञान होते ही उन्हें अपना सारा ध्यान अपने यौन आनन्द से हटाकर गर्भ स्थित बालक की ओर मोड़ लेना चाहिए। यदि इस बात को स्मरण रखा गया तो सारी समस्या ही सुलझ जाती है। यह तो हुआ संयम।

इसका दूसरा अंग है आहार। आहार स्त्री की रुचि और ऋतु अनुसार होना तो आवश्यक है ही किन्तु इतना अवश्य ध्यान में रखना चाहिए कि आहार पाचनशील हो। गरिष्ट भोजन इसमें लाभकारक नहीं होता। हानि कर सकता है। तेज मसालेदार, गर्म और बहुत चर्बीयुक्त भोजन हानिकारक है। यह भ्रम हानिकर है कि इससे बच्चा गर्भ में ही मोटा-

ताजा और तगडा होगा। इसकी अपेक्षा उसके जन्म के बाद उसको मोटा-ताजा-तगडा किया जाए तो वह उत्तम है। सात आठ मास तक गर्भिणी को फलो का रस, गाय का दूध, अच्छे गेहूँ का रोटी, इसके साथ उचित साग सब्जी देना लाभदायक है। प्रात -साय थोडा-बहुत टहलना। इससे अधिक कुछ करने की आवश्यकता नही।

कुछ पति अथवा पत्नी के सास-श्वसुर ऐसे भी होते हैं कि पत्नी अथवा बहू के गर्भधारण करते ही उसको अधिकाधिक आराम देने के विचार से उससे सारे काम करने-कराने बन्द कर देते हैं। यह उनके मनोभावो मे सदभावना का प्रतीक तो है किन्तु इससे गर्भिणी को लाभ के स्थान पर हानि अधिक होती है। इसके परिणामस्वरूप गर्भिणी आलसी हो जाती है। उसका दुष्परिणाम यह होता है कि वह रोगिणी बन जाती है। इस प्रकार सुख और आराम की गर्भावस्था बिताने वाली स्त्री को प्रसव के समय बहुत कष्ट झेलना पडता है। यहाँ तक कि किसी किसी को तो सर्जरी द्वारा प्रसव कराने की आवश्यकता पड जाती है।

गर्भिणी को काम करने से कभी रोकना नही चाहिए। हाँ यह हो सकता है, और होना ही चाहिए कि उससे किसी प्रकार का भार उठाने वाला अथवा झटके वाला काम नही कराना चाहिए और न ही स्वेच्छा से करने देना चाहिए। गाव मे गर्भिणी स्त्री से पीसने का तो काम कराया जाता है किन्तु कूटने का काम रोक दिया जाता है। इसी प्रकार के काम नगर म कराये और रोके जाने चाहिए। नगर मे भारी कपडे धोना बाल्टी आदि उठाना, बहुत देर तक चूल्हे के पास बैठे रहना आदि काम नही कराने चाहिए। बैठे रहने पर जरायु पर जोर पडता है।

यत्न यही होना चाहिए कि गर्भिणी सदा प्रसन्न रहे उसे कब्ज न होने पाये समय पर उसको यथोचित हल्का आहार मिलना चाहिए। विचारो मे स्वच्छता हो सके तो ईश्वर चिन्तन बस अधिक कुछ नही। इतने से ही गर्भिणी को प्रसव के समय कष्ट नही होगा।

अब हम गर्भावस्था मे सेवनीय कुछ शक्तिवर्द्धक ओषधियों का उल्लेख कर रहे हैं—

कलकेरिया फॉस (Calcarea Phos) ६ एक्स—गर्भस्थिति के आरम्भ से ही इसकी चार गोलियाँ दिन मे चार बार देनी चाहिए। गर्भ मे बच्चे के लिए कलसियम बडा आवश्यक है, यह उसे माँ के द्वारा ही प्राप्त हो सकता है। कैलसियम की कमी के कारण प्रसव के उपरान्त बच्चा और उसकी माँ दोनो को ही कष्ट होता है।

फाइव फॉस (Five Phos) ६-एक्स—इस ओषधि म लोहा,

कैलसियम, मैगनेशिया तथा अन्यान्य लवण पदार्थ होते हैं। जिन स्त्रियों में रक्त की कमी होती है अथवा जो दुर्बल होती हैं उनके लिए यह बहुत उत्तम औषधि है। इसके सेवन से माँ और बच्चा दोनों ही स्वस्थ रहते हैं। जिन स्त्रियों के बच्चे गिर जाते हैं अथवा पैदा होने के तुरन्त बाद या कुछ दिनों बाद मर जाते हैं उनको निरन्तर इस औषधि का सेवन कराया जाय तो इससे लाभ होगा। औषधि सेवन कई मास तक कराना उपयोगी है।

स्वानुभव के आधार पर हमने इसका प्रयोग किया है और लगातार ४-५ मास तक एक ऐसी महिला को जिसके दो बच्चे तो गर्भ में ही समाप्त हो गये थे और एक बच्चा उत्पन्न होने के कुछ दिन बाद ही मर गया था सेवन कराया और समय पर उसके स्वस्थ और सुन्दर बच्चा उत्पन्न हुआ।

यह उल्लेखनीय है कि उस महिला के पति स्वयं एलापैथी के चिकित्सक थे किन्तु वे अपनी पत्नी की चिकित्सा करने में असमर्थ रहे थे।

प्रसव के समय की जटिलताएँ

अनेक बार यह पाया गया है कि अनेक स्त्रियों को प्रसव से कई दिन पूर्व ही प्रसव की-सी पीड़ा होने लगती है। यह पीड़ा अति कष्टदायक होती है। यह पीड़ा प्रसव पीड़ा की भाँति ही बार-बार या अति तीव्र रूप से नहीं आती। यह पीड़ा नाभि के नीचे आरम्भ होती है और फिर लुप्त हो जाती है। यह वास्तविक प्रसव पीड़ा की भाँति आरम्भ होकर निरन्तर बनी भी नहीं रहती और न ही धीरे-धीरे बढ़ती है। इस पीड़ा से जरायु का मुख खुलने का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

प्रसव पीड़ा और नकली पीड़ा इन दोनों में अन्तर को समझना चाहिए और पीड़ा होने पर जाँच कर लेना चाहिए कि यह प्रसव पीड़ा है अथवा नकली पीड़ा है।

नकली पीड़ा

इसमें निम्न औषधियों का प्रयोग लाभकारी होता है—

कमोमिला (Chamomilla) ३०—प्रसूति के स्वभाव में चिड़चिड़ापन, बेचैनी, पित्त मिश्रित पतले दस्त, उसके साथ ही तेज दर्द क्रोध अधिक आना, इन लक्षणों में इस औषधि का प्रयोग लाभदायक है।

सिमिसिफ्यूगा (Cimcifuga) ३०—डिम्ब ग्रंथियों में पीड़ा, पीड़ा

नीचे-ऊपर होना और उसका भीतरी जाँघों तक जाना, नींद न आना और अधिक जी मिचलाना, पेट में एक ओर से दूसरी ओर तीर की भाँति पीड़ा, कूल्हा में भी पीड़ा हो तो इस औषधि का प्रयोग लाभकारी सिद्ध होता है।

नक्स वोमिका (Nux Vomica)—दुर्बलता और पीड़ा, बार-बार टट्टी जाने की हाजत, ऐसा अनुभव होना कि मल भीतर घूम रहा है। इन लक्षणों में यह उपयोगी है।

कौलोफाइलम (Caulophyllum) ३०—जब पीड़ा नीचे नीचे की ओर हो तो उसमें इससे आराम मिलता है।

सिपिया (Sepia) ३०—कपड़े धोने के बाद नकली पीड़ा का उठना, कब्ज की प्रकृति वाली गर्भिणी के लिए यह लाभदायक है।

पल्सेटिला (Pulsatilla) ३०—पीड़ा का इधर उधर होते रहना एक स्थान से दूसरे स्थान पर शान्त, शीघ्र आँसू बहा देने वाली गर्भवतियों की यह महान औषधि है।

कलि फॉस (Kali Phos) ३०, २००—जिन स्त्रियों को स्नायु दौर्बल्य हो, घबराहट से पीड़ा का आभास हो चिड़चिड़ापन तथा उदासी चिंता कब्ज आदि लक्षणों में इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

जटिलताएँ

अनेक स्त्री रोग विशेषज्ञ प्रसव से एक दो मास पूर्व एक्टा रेसिमोसा देने की सिफारिश करते हैं। इसे ६ या ३० शक्ति में प्रतिदिन दो-तीन बार देने से बिना प्रसव पीड़ा अथवा कष्ट के बच्चा उत्पन्न हो जाता है। कई गर्भिणियों को यह भय रहता है कि प्रसव के समय कष्ट होगा विशेषतया प्रथम प्रसव के अवसर पर तो होता ही है। उस समय गर्भिणी को किसी प्रकार का अनुभव नहीं होता। कुछ ऐसी भी स्त्रियाँ होती हैं जिनको प्रथम प्रसव में बहुत कष्ट भोगना पड़ता है वे दूसरे गर्भ के समय भी उसी कष्ट का विचार कर डरती रहती हैं। ऐसी अवस्था में गर्भिणी को आर्निका मांट'-३ का पहले से ही प्रयोग करा देना चाहिए। बायोकेमिक कलकेरिया फ्लोर ६ एक्स भी दिया जा सकता है। ये दोनों औषधियाँ नित्य दिन में तीन बार दो मास पूर्व से सेवन कराने से आशातीत लाभ होता है।

अनुभव से ऐसा माना जाता है कि पुत्र उत्पन्न होने की स्थिति में पीड़ा जल्दी जल्दी और तीव्र होती है और फिर चार पाँच घण्टे में प्रसव हो जाता है। यदि गर्भ में कन्या हो तो पीड़ाएँ ठण्डी और रुक रुककर आती हैं। लम्बे काल के लिए कष्ट होता है।

ऐसी ही एक गर्भिणी के पास कोलोफाइलम २००' की एक मात्रा एक

गिलास पानी मे घोलकर प्रसव पीडा होने पर रख दी गई और फिर दस-दस मिनट मे उसको एक दो चम्मच पिलाते रहे। उसके परिणामस्वरूप प्रसव शीघ्र हुआ और कष्ट भी कम हुआ।

ऐसे समय मे जानकार स्त्रियाँ अपनी पुत्रवधुओ अथवा पुत्रियो के लिए इस ओषधि की व्यवस्था करके रखती है। इस ओषधि के सेवन मे प्रसव पीडा तीव्र होने लगती है और प्रसव शीघ्र होने म इससे सहायता मिलती है।

यदि चार-पाच घण्टे तक प्रसव न हो तो फिर निम्नलिखित ओषधियो का आश्रय लेना चाहिए।

एकोनाइट (Aconite) ३०, २००—जब गर्भिणी प्रसव पीडा से बहुत चिल्लाती हो, अत्यधिक घबराहट, बेचैनी, मृत्यु का भय, चिल्लाना और उसका यह कहना कि 'मैं नही बचूगी' आदि, ऐसी अवस्था म यह उपयोगी सिद्ध होती ह।

कास्टीकम (Causticum) ३०—पीडा सहते सहते जब गर्भिणी थक जाती है पीडा सहने की उसमे शक्ति न रह जाती हो, यह सम्भावना हो कि सर्जन की सहायता के बिना प्रसव सम्भव नही है उस अवस्था म इस ओषधि का प्रयोग किया जाय तो सहायता मिल सकती है। कदाचित इसके सेवन से ऑपरेशन की आवश्यकता न पडे।

इसकी ३० शक्ति की मात्रा देनी चाहिए। इसके सेवन स दद लेन और सहने की शक्ति बढती है पीडाएँ तीव्र होगी और प्रसव शीघ्र होगा।

कनथरिस (Cantheris) ६ ३०—पेशाब मे जलन हो, बच्चा गभ म ही दम तोड जाय आपरेशन करन की आवश्यकता पड जाय, ऐसे समय मे इस ओषधि का प्रयोग लाभकारी होता है।

एक गर्भिणी का बच्चा गभ मे सूख जाने की स्थिति म जब पेशाब मे दुग ध थी और गर्भिणी के कमरे मे घुसने पर दुग ध आ रही थी तो मरणासन्न गर्भिणी को इस ओषधि पर रखा गया। वह स्त्री दो मास मे स्वस्थ हो गई। मासिक धम पुन आरम्भ हो गया और वह सब प्रकार स सुयोग्य बन गई।

जेलसेमियम (Gelsemium) ३० २००—गर्भिणी अति घबराने वाली हो, पीडा आरम्भ हो जाय, पेशाब करे तो सुख अनुभव करती हो जरायु का मुख सिकुडा हुआ होने से, इस स्थिति म इस ओषधि स प्रसव म सुविधा होती है।

केलि फास (Kali Phos) ३०—थकी-माँदी घबराई हुई उदास धडकन तेज, अनिद्रा दद न ले सकना, इस स्थिति म इस ओषधि का

प्रयोग लाभकारी सिद्ध होता है।

पल्सेटिला (Pulsatilla) ३०—लगातार पीड़ा न आना, हलका मीठा दर्द पानी की भांति स्राव होने पर यदि पीड़ा न बढ़ती हो तो इस औषधि के सेवन से लाभ होगा।

गर्भिणी का जी मिचलाना और मुख का स्वाद कड़ुआ होना भी इस औषधि के लक्षण हैं।

बेलाडोना (Belladonna) ३०—गर्भिणी का मुखमण्डल तपा हुआ, लाल सिर में पीड़ा, आंखों में लाल डोरे, हाथ पैर पटकना, एस लक्षणों में इस औषधि का प्रयोग लाभकारी होता है।

सकिल कोरनूटम (Secale Cornutum)—सर्वथा दर्द न ले सकना, सब कुछ ढीलाढाला नीचे की ओर दबाव डालने की शक्ति भी न होना, पेशाब का रुकना, जांघों में दर्द, ऐसी स्त्रियों के लिए उपयोगी जो पहले दो-तीन प्रसव कर चुकी हों। यह बहुत ही उत्तम औषधि है।

काफिया (Coffea) ३०, २००—बहुत अधिक पीड़ा रहने पर इसका प्रयोग किया जा सकता है, इससे गर्भिणी को चैन मिलता है।

प्रसव

स्त्री का जब प्रसव हो जाता है तो उसके बाद उसके जीवन का एक नया ही अध्याय आरम्भ हो जाता है। कई मास तक उसको अपना और अपने बच्चे का विशेष ध्यान रखना होता है। यदि इस अवसर पर वह विशेष सावधानी न बरतेगी तो इससे न केवल उसको हानि होगी अपितु बच्चे के स्वास्थ्य पर भी उसका प्रभाव पड़ेगा।

सामान्यतया प्रसव के बाद के चालीस दिन तो बहुत ही विशेष सावधानी के होते हैं। उस अवधि में एक तो बच्चा बहुत ही कोमल होता है। उसको सम्हालना बड़ी टेढ़ी खीर होती है। उस दशा में तो यह और भी कठिन हो जाता है जब प्रसविनी का पहला प्रसव हो। और यदि प्रसविनी के साथ कोई अनुभवी महिला नहीं है जैसे उसकी सास, माँ अथवा बहन या ननद तो फिर कठिनाई और भी बढ़ जाती है। क्योंकि प्रसविनी स्वयं अनुभवहीन होने के साथ-साथ उस समय दुर्बल होती है

उस अवस्था में उसका और नवजात शिशु का विशेष ध्यान रखना होता है।

प्रसव हो जाने के उपरान्त बच्चे को भली भाँति नहलाने और कपड़े पहनाने के बाद शहद अथवा ग्लूकोज आदि चटाने से पूर्व, एक मात्रा सल्फर २०० की मिल्क सुगर में ताजी बनाकर पिलानी चाहिए। इसी प्रकार उसी समय एक खुराक प्रसूता को भी दे देनी चाहिए।

सल्फर को 'सोरा' मियाज्म का राजा माना गया है। इसकी प्रतिक्रिया मानव के रक्त में शुद्धीकरण के रूप में होती है। इससे यह लाभ होता है कि जलवायु अथवा वातावरण के कारण शिशु तथा उसकी माँ को होने वाली बीमारियों से यह दोनों को बचाता है। इस एक ही मात्रा से प्रसव के बाद होने वाली अनेक बीमारियों से बचा जा सकता है। यह इतनी गहराई में प्रभाव करने वाली औषधि है कि छोटे छोटे लक्षणों जैसे जुकाम, खाँसी, मुख पर दाने, गर्मी सर्दी का प्रकोप आदि से मुक्ति मिल जाती है।

प्रसव के बाद भी प्रसूता के कमर और पेट में पीड़ा होती रहती है। इसका प्रभाव सब प्रसूताओं पर नहीं होता किन्तु अनेक ऐसी प्रसूताएँ होती हैं जो घबराने वाली होती हैं भावुक होती हैं उनको यह पीड़ा होती है। उन्हें साधारणतया उस प्रसव का ही वातावरण कष्ट देने लगता है, कई बार तो प्रसूता खीज जाती है उसको क्रोध आने लगता है। ऐसी अवस्था में यदि प्रारम्भ में उसका सल्फर की मात्रा दी गई हो तो यह सब नहीं होता।

आर्निका ३ एक्स भी ऐसे कष्ट में बहुत अच्छा काम करती है।

गर्मी की ऋतु में शिशु के मुख पर गर्मी के दाने आ जाते हैं, जिन्हें सामान्यतया पाउडर की सहायता से दबाने का यत्न किया जाता है। उससे लाभ भी होता है। किन्तु यदि उस समय आर्निका कम शक्तिक्रम की दी जाय तो उससे लाभ होता है। दानों का जन्म के समय से ही क्रीम, पाउडर ऑयण्टमेण्ट आदि से ही दबाने का अभिप्राय उन्हें शिशु के रक्त में वापस भेजना है। यह उचित नहीं है।

होमियोपैथिक सिद्धान्त के अनुसार 'सोरा' केवल खाज खुजली का दबना ही नहीं अपितु किसी भी विकार का दब जाना भी 'सोरा' है। इसके अनुसार बाहरी औषधि प्रयोग की आदत डालना कई छोटे छोटे लक्षणों को दबाकर अनेक रोगों का शरीर में बीज बोने के समान है। पहले ही दिन माँ और शिशु को सल्फर २०० का एक बार सेवन कराना उन्हें बाद में होने वाले इन सब प्रभावों से मुक्ति दिलायेगा।

प्रसूता का भोजन पौष्टिक होना चाहिए। दूध, घी, कारले, मछली या मीट का सूप जैसा भी मौसम हो, देना चाहिए। प्रसूता का कमरा खुला और हवादार होना चाहिए।

प्रसूता की योनि और गुदा के मध्य का स्थान प्रसव के समय, विशेषतया जब प्रथम प्रसव हो तो साधारणतया फट जाया करता है। उस स्थान पर घाव भी हो जाता है। उस अवस्था में 'कलेण्डुला-क्यू' लोशन का दस बूँदें पचास ग्राम पानी में डालकर उस स्थान को साफ कर देना चाहिए। उसके बाद दिन में अनेक बार इसी औषधि या मलहम लेकर उस स्थान पर लगाते रहना चाहिए। इससे घाव भर जाता है।

यदि प्रसूता को अधिक दुर्बलता हो तो चाइना ३ एक्स, 'एसिड फास'-३० का सेवन कराया जा सकता है।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि प्रसव के बाद प्रसूता को अनिद्रा रोग घेर लेता है। उस अवस्था में काफिया ३० का सेवन कराना लाभकारी होता है।

प्रसूता को प्रसव के बारह घण्टे के भीतर यदि पेशाब न उतरे तो उसको प्रति पन्द्रह मिनट के अन्तर पर एकोनाइट ३-एक्स की मात्रा देनी चाहिए। इस प्रकार तीन चार मात्रा देने के उपरान्त पेशाब उतर आयेगा। यदि एकोनाइट से काम न बने तो बेलाडोना ६ देने से काम सिद्ध हो जायेगा।

कब्ज

प्रसूता को यदि दो दिन तक शौच न आये तो कोलिन सोनिया ६ या ३० का सेवन कराने से यह बाधा दूर हो जाती है।

अतिसार हो जाने की अवस्था में हायोसाइमस ३० और पल्सेटिला-३० उत्तम औषधियाँ हैं। यदि इसके साथ बेचैनी भी हो तो और रोगिणी घूंट घूंट पानी पीती हो तो उसको आर्सेनिकम ३० का सेवन रामबाण सिद्ध होगा।

प्रसव के बाद चालीस दिन या इससे कम समय तक लाल रक्त निकलता रहता है, बाद में यह पीला पड़ जाता है और अन्त में बन्द होने से पूर्व यह खारिशदार—खुजली पैदा करने वाला बन जाता है। यदि यह स्राव एक मास अथवा चालीस दिन तक भी बन्द न हो तो—(आजकल सामान्यतया यह स्राव तीन सप्ताह तक ही रहता है) ऐसी स्थिति में साबीना ६ का प्रयोग करना चाहिए। कई बार यह स्राव एकदम रुक जाता है। ऐसी अवस्था में एकोनाइट ३ एक्स का प्रयोग उत्तम होता है।

यदि स्राव मे दुर्गन्ध अधिक हो तो क्रियाजोट ३०, कार्बोवेज-३० का प्रयोग किया जाना चाहिए। कैलेण्डुला लोशन दस बूद दो औंस पानी मे मिलाकर योनि को नित्य साफ करने से लाभ होता है।

प्रसवोपरान्त आने वाले रोग

सूतिका ज्वर

यह अति भयानक ज्वर होता है। इसका मूल कारण तो एक प्रकार के जीवाणु का विष है। यह जीवाणु प्रसव के बाद जरायु मे प्रविष्ट हो जाता है। यह प्राय उस स्त्री की असावधानी के कारण होता है जो प्रसूता की परिचर्या के लिए नियत होती है। जो वस्त्र बदलती है, मालिश करती है, दूध आदि करती और सफाई करती है। उस परिचारिका के हाथ साफ न हो तो उसके माध्यम से ज्वर के जीवाणु जरायु मे प्रविष्ट हो जाते है। फूल का कुछ अश जिसे 'जेर' भी कहा जाता है प्रसव के बाद जरायु मे रह जाता है वहाँ यदि वह सड जाय तो उससे भी यह रोग होता है।

प्रसव के बाद तीन-चार दिन बाद ही ज्वर आना आरम्भ होता है। ज्वर जाडा, सर्दी, कँपकँपी से आरम्भ होता है। कभी कभी तो यह बढकर १०६ डिग्री तक भी पहुँच जाता है। यदि यह ज्वर बिगड जाय तो प्रसव के बाद होने वाला स्राव, पसीना और स्तनो का दूध बन्द हो जाता है और जरायु से पीब निकलने लगता है। यह भयानक स्थिति है, इसमे मृत्यु का भी भय रहता है।

सूतिका ज्वर की चिकित्सा

एकोनाइट (Aconite) ६, ३०—अधिक ज्वर कम्पन, बडी तेज नाडी, शुष्क त्वचा, फूला हुआ नम पेट, बहुत अधिक प्यास, बेचैनी जरायु मे दर्द आदि मे प्रयोग से लाभ होता है।

आर्निका माण्ट (Arnica Mont) ३०—यदि प्रसव के समय आपरेशन की आवश्यकता पडी हो अर्थात् आपरेशन के समय तेज चाकू का प्रयोग किया गया हो तो इस औषधि पर ध्यान देना आवश्यक है। शरीर म

अकडन, किसी भी वस्तु को खाने के लिए सर्वथा अरुचि, नींद न आना आदि लक्षणो पर यह औषधि उत्तम है।

बेलाडोना (Belladonna) ३०—पेट के निचले भाग मे पीडा स्तनो से दूध का आना सहसा रुक जाना, सिर मे झटके वाला दर्द, घुटी घुटी लाल आँखें इन लक्षणो पर यह उत्तम औषधि है।

आर्सेनिकम एल्बम (Arsenicum Album) ३०—मृत्युभय, पेट मे पीडा, पेट मे जलन अनुभव करना, बेचैनी, घूट घूट पानी पीने से चैन मिलना मिचली, नाडी का रुक-रुककर धीमी चाल से चलना, इन सभी लक्षणो मे इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

वेरेटम विराडी (Veratrum Viride) ३ ६, ३०—बहुत अधिक कम्पन हाथ पैरो का मुडना ऐंठन जिससे जीवन जाने का भय हो जाय ऐसी दशा मे एक मात्रा देने से ही पाँच-दस मिनट मे स्थिति सुधर जाती है।

चाइना (China) ३०—दुर्बलता की अवस्था मे उत्तम औषधि है। सूतिका ज्वर की जब प्रथम अवस्था मे बहुत अधिक रक्तस्राव हुआ हो और रोगिणी दुर्बलता अनुभव कर रही हो तो इससे लाभ होता है।

कोलोसिन्थ (Colocynth) ३०—जब पेट का निचला भाग बहुत फला हो तो सूतिका ज्वर मे इससे लाभ होता है।

नक्स वोमिका (Nux Vomica) ३०—जब जरायु पर अधिक दबाव पडता हो बार-बार शौच जाने की इच्छा होती हो, ऐसी दशा मे इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

केलि साइनेटिस (Kali Cynatus)—रोगिणी चिल्लाती हो, सहसा पीडा की लहर सी उठती हो, प्रात पेट के निचले भाग मे दर्द का दौरा अधिक हो तो इसके सेवन से लाभ होता है।

लेकेसिस (Lachesis) ३०—नींद खुलने पर बहुत अधिक निचले भाग म दर्द होने पर उपयोगी औषधि है।

मर्क कोर (Merc Cort) ६ ३०—पेट के निचले भाग म काटने वाला दर्द छूते ही दर्द होने लगे, बहुत अधिक प्यास, मल के साथ रक्त का निकलना इन लक्षणो पर यह औषधि बहुत उत्तम है।

केलि फॉस (Kali Phos) ३ एक्स, १२ एक्स—स्नायु-दुर्बलता के साथ सूतिका ज्वर मे यह उपयोगी औषधि है।

रस टॉक्स (Rhus Tox) ३०—जरायु के भीतर सूजन के साथ ज्वर, जाँघो मे लगडाने वाली पीडा, टाँगें काम करना छोड रही हैं इस प्रकार की अनुभूति, स्राव म दुर्गन्ध, टाइफाइड बुखार जैसे लक्षण उभर आयें तो इस स्थिति मे यह दवा रामबाण सिद्ध होती है।

पायरोजन (Pyrogen) ३०, २००—जब रक्त दूषित हो जाय तो इसके प्रयोग से रोगिणी का ज्वर उतर जाता है।

यदि ज्वर निरन्तर ऊँचे तापमान पर रहे तथा रोगिणी की दशा सुधर न रही हो तो 'लेकेसिस-३०' और 'हायोसाइमस-३०' बारी-बारी से देने से लाभ होगा।

पेट के निचले भाग पर गर्म पट्टी रखनी चाहिए इससे पेट को टकोर मिलेगी। स्थान को साफ सुथरा और वातावरण सुन्दर रखना चाहिए।

पुराना सूतिका रोग

यह रोग सूतिका ज्वर से भिन्न है। रक्त की कमी के कारण यह ज्वर होता है। प्रसव के उपरान्त प्रसूता की देखभाल ठीक प्रकार से न होने के कारण शरीर रक्तहीन होने लगता है।

इसके लिए निम्न औषधियों का प्रयोग लाभकारी होता है—

फरम फॉस ३०, कलकेरिया फॉस ३०—इन दोनों औषधियों को दिन में चार-पाँच बार बारी-बारी से देने से लाभ होता है।

नेट्रम म्यूर (Natrum Mur) ३०—नमकीन चीजों की इच्छा अधिक होती हो और प्यास लगती हो तो इन लक्षणों में यह लाभकारी सिद्ध होती है।

मुर्गा, मछली का सूप, फलों का रस, दूध आदि का सेवन रोगिणी को सबल रखने में सहायक होते हैं जिससे वह रोग से संघर्ष करने में समर्थ होती है।

सूतिकोन्माद

प्रसव के उपरान्त कुछ स्त्रियों में उन्माद के लक्षण दिखाई देने लगते हैं। इसका मुख्य कारण वंश-परम्परा दोष माना जाता है। इसके जो अन्य कारण बन सकते हैं वे हैं प्रसव के बाद कई दिन तक चलने वाला रक्त-स्राव का बन्द हो जाना, अधिक दुर्बलता, प्रसूता के साथ उचित व्यवहार न होना अथवा कन्या उत्पन्न होने की अवस्था में कठोर व्यवहार करना आदि आदि।

प्रसूता के साथ सहानुभूति एवं प्रेम का व्यवहार करना चाहिए कन्या उत्पन्न करके उसने कोई अपराध नहीं किया, न उसने जान-बूझकर ऐसा कुछ किया, अतः प्रसूता के साथ प्रेम का व्यवहार करना उसके स्वस्थ होने में सहायक होता है।

यदि प्रसूता के साथ अच्छा व्यवहार न किया गया तो वह उदास

रहेगी, मन-ही मन कुंठित होगी, कायता का आभास होगा और सम्भव है वह आत्महत्या का विचार कर अथवा वास्तव म आत्महत्या कर भी ले।

यहाँ हम इसके लिए कुछ आवश्यक एव उपयोगी औषधियो का उल्लेख कर रहे हैं जो इस स्थिति म लाभकारी सिद्ध होती हैं—

औरम मेटेलिकम ३०—प्रसूता मे यदि आत्महत्या की प्रवत्ति दिखाई दे, अथवा उसकी बातो से निराशा व्यक्त हो कि वह जीवित रहने म किसी प्रकार का लाभ नही देखती, इन लक्षणो मे इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

इग्नेशिया (Ignatia) ३०—चुपचाप विषाद म सुबकने वाली प्रसूता को इसके सेवन से लाभ होता है।

प्लेटीना (Platina) ३०,२००—महत्वाम की तीव्र इच्छा, स्वय को अत्यधिक श्रेष्ठ प्राणी मानने वाली, आदि लक्षणो म इस औषधि का प्रयोग लाभदायक है।

पल्सेटिला (Pulsatilla) ३०—हर समय रोने वाली, दूसरे की आज्ञा स्वीकार न होने पर भी उत्तर न देने वाली, आँखो मे आँसू भरने वाली, इस प्रकार जिसका स्वभाव हो उसके लिए यह औषधि उत्तम है।

स्ट्रेमोनियम (Stramonium) ३०,२००—रोगिणी हर समय बोलती रहती है अश्लील बातें करती है निरन्तर बोलने वाली, इन लक्षणो मे इस औषधि के प्रयोग से लाभ होता है।

एग्नस कैसटस (Agnus Castus)—स्त्री असाधारण रूप स पुरुष का समागम कर चुकी हो और फिर सहवास की उसकी इच्छा ही समाप्त हो गई हो इस अवस्था म इस औषधि का प्रयोग लाभकारी होता है।

बेलाडोना (Belladonna) ३०—प्रलाप करना, प्रसूता का मुख लाल होना, आखो म लाल डोरे आदि उन्माद के लक्षणो मे इसका प्रयोग करना चाहिए।

पेट के निचले भाग मे दद

कई बार जब आपरेशन द्वारा प्रसव कराया जाता है तो उस अवस्था मे कभी-कभी यह रोग हो जाया करता है। इसके कारण पेट के निचले भाग म पीडा होती है और जरायु मे शोथ हो जाता है। यही इसके मुख्य लक्षण हैं।

स्टाफेसगेरिया (Staphysagria)—यदि प्रसव आपरेशन के द्वारा होने पर प्रसूता को यह रोग हुआ है तो सवप्रथम इस औषधि का प्रयोग करना चाहिए।

रस टाक्स (Rhus Tox)—यदि प्रसूता को रोग के साथ ज्वर भी हो तो इसकी ६ अथवा ३० शक्ति की मात्रा देने से लाभ होगा।

एपिस मेलिफोका (Apis Melifica) ३०—यदि पीडा ऐसी हो जैसे कि उसको मधुमक्खी ने काटा है, तो इन लक्षणों में इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

पेट का लटकना

किसी किसी स्त्री का प्रसव के बाद पेट का निचला भाग लटक जाता है। इसमे उसका शरीर बेडौल हो जाता है और उसकी सुन्दरता भी समाप्त हो जाती है। उस भाग के पट्ठो के ढीले पडने से यह रोग होता है।

कलकेरिया ३०, २०० अथवा साइलिशिया ३०, २०० का बहुत दिनो तक सेवन कराते रहने से लाभ होता है।

कलकेरिया देने से पूर्व सल्फर २०० की एक मात्रा यदि प्रसव के तत्काल बाद न दी गई हो तो दे देनी चाहिए।

सिर के बालो का गिरना

प्रसव के कारण स्त्री दुर्बल हो जाती है। इसके कारण से कभी कभी उसके बाल भी गिरने लगते हैं। यह आम रोग है। कई स्त्रियो के बाल इतनी अधिक मात्रा मे गिरने लगते है कि आश्चर्य होता है। उसके परिणाम-स्वरूप उनका सिर एक प्रकार से गजा-सा हो जाता है।

प्रसव के तुरन्त बाद सल्फर २०० की एक मात्रा बहुत काम करती है। इसके सेवन से प्रसव के उपरान्त होने वाले अनेक उपद्रवो से मुक्ति मिल जाती है।

फासफोरिक एसिड ३० २०० देने से बालो का गिरना रुक जाता है।

चाइना ३०—गर्भावस्था अथवा बाद मे अतिसार हो और बाल गिरते हो तो इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

आर्सेनिकम ३०—यदि बेचैनी हो तो लाभकारी होती है।

स्तनो का रोग

प्रसव के उपरान्त कभी-कभी किसी स्त्री के स्तनो मे भी रोग उत्पन्न हो जाता है। प्रत्येक गर्भवती और प्रसूता को अपने स्तनो का ध्यान रखना चाहिए। कस कर जैकेट पहनना स्त्री के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक माना गया है। कसे हुए जैकेट मे स्तनो की चूचियाँ कसी और दबी रहती है जो कि हानिकारक हैं। स्तनो की प्रतिदिन ठीक प्रकार से सफाई करना भी

आवश्यक है।

जब माता नवजात शिशु को दूध पिलाना आरम्भ करे तो पिलाने से पूर्व स्तन से पहली एक-दो बूंद बाहर निकाल देनी चाहिए। उसके बाद दूध पिलाना ठीक होता है। दूध पिलाने के बाद स्तनों को स्वच्छ जल से धोना चाहिए। स्तन फटते हैं और न कोई अन्य रोग ही होता है।

प्रसव के कुछ काल बाद प्रायः स्त्रियों को यह शिकायत होती है कि उनके स्तन लटक गये हैं। ढीले पड़ गये हैं। यदि बच्चा दूध पीता हो तो ऐसा होना स्वाभाविक ही है। हाँ, यदि अधिक ढीले और लटकने वाले हों तो उस अवस्था को रोका जा सकता है।

पेट सब रोगों की जड़ है। उसका नित्य ही साफ रहना आवश्यक है। प्रसूता को हलका और पौष्टिक आहार मिलना चाहिए। इसके अतिरिक्त यह ध्यान रखना चाहिए कि प्रसूता जिस समय अपने बच्चे को दूध पिलाती है उस समय उसका मन शान्त और प्रसन्न होना चाहिए। स्तनपान कराते समय बच्चे की स्थिति भी ठीक होनी चाहिए, उसको स्तनों के बराबर में हाथों पर लिटाना चाहिए।

इसके विपरीत जो स्त्रियाँ लेटे-लेटे ही बच्चों को दूध पिलाती हैं अथवा जैक्ट से स्तनों को बाहर खींचकर दूध पिलाती हैं उनके स्तन ही कुछ काल बाद अधिक ढीले और लटकने वाले हो जाते हैं। बच्चे को सदा बैठकर ही दूध पिलाना चाहिए। लेटकर पिलाना दोनों के लिए ही हानिकारक होता है।

इसकी कुछ औषधियाँ निम्न प्रकार हैं—

कलेण्डुला लोशन (Calendula Lotion)—यदि स्तनों में कष्ट हो तो दो औंस पानी में एक ड्राम लोशन डालकर स्तनों को साफ करें।

फलेण्ड्रम (Phellandrum) ६ ३०—बच्चे के दूध पीते समय यदि स्तनों में पीड़ा हो तो इसका सेवन लाभकारी होता है।

ग्रफाइटिस (Graphites) ३०—यदि स्तनों में दाने हो जाएँ तो इसका सेवन लाभकारी होता है।

क्रोटन टिग (Croton Tig) ६ ३०—यदि दर्द इतना अधिक हो कि स्नायु और शिराओं को झकोर दे तो इसका प्रयोग ही सर्वोत्तम है।

चाइना (China) ३०—दूध पिलाने के बाद यदि माता दुर्बलता का अनुभव करे तो इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

दूध का अधिक होना

यदि प्रसूता के आवश्यकता से अधिक दूध होता है तो वह भी माता के

लिए कष्टकर होता है। ऐसी स्थिति में नेट्रम सल्फ ६-एक्स अथवा पल्सेटिला ३० का प्रयोग लाभकारी सिद्ध होता है। पल्सेटिला नम्र स्वभाव की स्त्रियों को अधिक लाभ करता है।

मसूर की दाल को रगड़ कर लेप बनाकर स्तनों पर लगाने से भी लाभ होता है।

दूध का अति कम होना

जिस प्रकार किसी प्रसूता का अधिक दूध होता है उसी प्रकार किसी किसी प्रसूता का बहुत कम दूध होता है। ये दोनों ही अवस्थाएँ हानिकारक होती हैं।

यदि प्रसव के एक दिन बाद तक भी दूध न उतरे तो प्रसूता को एग्नस कैक्टस ६ या ३० की मात्रा देने से लाभ होगा।

एसफियोटाइडा (Asafeotida) ३०—यदि प्रसूता का दूध अचानक कम हो जाय अथवा बंद हो जाय तो उस अवस्था में इस औषधि का प्रयोग लाभकारी है।

कैमोमिला (Chamomilla) ३०—यदि क्रोध के कारण प्रसूता के दूध में कमी आ जाय तो इसका प्रयोग उत्तम है।

एकोनाइट (Aconite) ३०—यदि किसी भय के कारण प्रसूता का दूध कम हुआ है तो इससे लाभ होगा।

इग्नेशिया (Ignatia)३० २००—यदि परिवार में कोई दुर्घटना हो जाय और उससे प्रसूता के मन को दुःख पहुँचे तो उस अवस्था में इसका प्रयोग लाभकारी सिद्ध होता है।

क्रोध, दुःख और भय की अवस्था में यदि बच्चे को दूध पिलाया जाय तो उसका बच्चे के स्वास्थ्य और मन पर बुरा प्रभाव होता है। इस बात को ध्यान में रखना चाहिए।

दूध का स्वयं निकलना

दूध स्वयं निकलने की अवस्था में प्रसूता को चाहिए कि नित्य स्तनों विशेषतया उसकी चूचियों को साफ करे।

बोरेक्स ३० इसकी महान् औषधि है। इसका प्रयोग करना चाहिए।

जो स्त्रियाँ मोटी-ताजी हैं उनको सल्फर के बाद कल्केरिया काब से लाभ होगा।

स्तनों में यदि दूध इकट्ठा हो जाय और स्तन सूजे सूजे दिखाई दें तो ब्रायोनिया ३० का प्रयोग लाभकारी होता है।

स्तनो का पक जाना

ग्रायानिया ६, ३= का निरंतर प्रयोग स्तना के फोडे को फाड देता है। तनिक छूने से अधिक दद हो वो हीपर सल्फर ६ एक्स या ३ उत्तम ग्रापधि है।

स्तन पर गाँठ की ग्रनुभूति हो ता फाइटोलाका ६, ३० का प्रयाग करें। इसका लोशन चार-पाँच बूद दो ग्रौस पानी म डालकर लगाने से लाभ होता है।

गम पुलटिस बाँधने से फोडा फट जाता है।

स्तना के पक जाने पर समय पर ग्रोपधि का सेवन करना लाभदायक होता ह ग्र यथा सजन की सहायता की ग्रावश्यकता पड सकती है जा कि प्रसूता ग्रौर शिशु दोना के लिए हानिकारक हो सकता है।

शिशु की देखभाल एव सम्भावित रोगो से बचाव

जैसा कि हम पहले भी बता ग्राये हैं कि प्रसव के बाद प्रसूता का उत्तरदायित्व बहुत ग्रधिक हो जाता है। न केवल ग्रपना ग्रपितु बच्चे का भी उसको ध्यान रखना होता है। इसके लिए उसको न केवल ग्रपने स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिए ग्रपितु ग्रपने विचारो को भी सात्विक ग्रौर शान्त रखने की ग्रावश्यकता होती है। बच्चे तथा ग्रपने भी सुख के लिए उसको ग्रपने ग्रनेक मनोरजन ग्रौर सुख-सुविधा का त्याग करना पडता है।

जब तक शिशु एक वर्ष का नही हो जाता तब तक ता माता को बहुत ही सावधानी बरतनी होती है। ग्रपनी सुख-सुविधाग्रो को तिलाजलि देनी होती है। ऐसा नही कि सदा गम्भीर बना रहना चाहिए। इसके विपरीत माता को सदा प्रसन्न ग्रौर सन्तुष्ट रहने का यत्न करना चाहिए। यह माता ग्रौर शिशु दानो के स्वास्थ्य के लिए उत्तम है।

बच्चे के लिए माँ का दूध सबसे उत्तम है। कम से कम एक वर्ष तक नही ता दस मास तक ता माँ बच्चे को ठीक प्रकार से दूध पिला सके इसके

लिए उसको स्वय भी प्रचुर मात्रा मे दूध पीना चाहिए तथा फलो का सेवन करना चाहिए। इससे माता का दूध ठीक और पौष्टिक होगा।

यदि किसी प्रकार माता का दूध बच्चे के लिए पूर्ण नही होता है तो फिर शिशु को गाय का दूध भी पिलाया जा सकता है। गाय का दूध पानी मिलाकर हल्का कर लेना आवश्यक है। बच्चे को लगभग हर तीन घण्टे बाद दूध पिलाया जाना चाहिए। चाहे माँ का दूध पिलाना हो अथवा बाहर का दूध पिलाना हो किन्तु दूध पिलाने के समय का पहले से ही निर्धारण कर लेने से शिशु के स्वास्थ्य पर अच्छा प्रभाव होता है।

जो माताएँ अधिक देर रात तक जागती रहती हैं सिनेमा अथवा अन्य मनोरजन के कारण समय पर सोती नही इससे उनके दूध पर भी प्रभाव पडता है। माँ का आलस्य, नीद पूरी न होने की सुस्ती, आदि भी दूध के माध्यम से शिशु को प्रभावित करती है। इसके साथ ही माता का आहार भी शुद्ध और ताजा होना चाहिए।

पहले वर्ष मे बच्चे को कोई कृत्रिम ठण्डी चीज नही देनी चाहिए। फ्रिज का पानी अथवा बर्फ का पानी बच्चे को देना अनेक रोगो को आमन्त्रण देना है।

बच्चा जब तीन मास का हो जाय तो उसको फलो का रस तथा सब्जियो का सूप देना लाभकारी हो सकता है।

शिशु को औषधि सेवन कराने की अपेक्षा फलो के रस आदि दिए जाएँ तो इससे उसके सुपुष्ट शरीर की नीव पडेगी। फलो का रस बच्चे को स्वस्थ, सुन्दर सुपुष्ट और बुद्धिमान बनाने मे सहायक होता है।

दो तीन हरी सब्जियो को पानी मे उबाल कर उसमे हल्का-सा नमक मिलाकर एक दो चम्मच बच्चे को पिलाने से उसको पर्याप्त लाभ होगा।

बच्चे को यदि कब्ज हो जाए तो पहले दिन किसी प्रकार की कोई दवा नही देनी चाहिए। चाहे तो दिन मे दो तीन बार दो चार चम्मच सन्तरे का रस पिलाने से लाभ होता है।

बच्चे को यदि अतिसार हो तो उस अवस्था मे सेब का रस पिलाना लाभकारी होता है। जूस पिलाने के बाद यदि बच्चे को अगली फीड न दी जाए तो लाभ होगा। क्योकि सेब का रस गरिष्ट होता है।

इसी प्रकार माता को भी अपने आहार मे परिवर्तन कर लेना चाहिए।

माता को जिस समय थकान हो रही हो उस अवस्था मे उसको चाहिए कि वे बच्चे को दूध न पिलाये। बच्चे को दूध पिलाने से पूर्व माता स्वय दूध चाय आदि पीकर स्वस्थ हो जाए तब बच्चे को दूध पिलाये।

इसी प्रकार वष आदि पीकर अथवा लड़ाई-झगड़ा करने के उपरान्त भी बच्चे को तुरन्त दूध नही पिलाना चाहिए। इससे बच्चे को हानि होती है।

बच्चे को रोग से बचाने का शत प्रतिशत उत्तरदायित्व उसकी माता पर होता है। कई माताएँ रात को सोते हुए बच्चे को दूध पिलाने की आदत डाल देती हैं। यह आदत न तो बच्चे के लिए अच्छी होती है और न माता के लिए ही, इससे दोनो के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

उचित यही है कि बच्चे को रात्रि की अन्तिम फीड रात दस बजे के लगभग दी जाए और बच्चे को सुला दिया जाए। उसके बाद प्रात उठकर छ बजे से पूर्व कोई फीड न दी जाए। माता को यत्न करके बच्चे को नियत समय पर फीड लेने का अभ्यास डालना चाहिए।

बच्चे को नहलाने से पूर्व आधा घण्टे तक उसकी तेल मालिश करना आवश्यक है। मालिश धीरे धीरे और सरसो अथवा औलिव आयल से की जानी चाहिए। तदनन्तर ताजे पानी से स्नान करना चाहिए। शीतकाल में पानी को गुनगुना कर लेना चाहिए। बहुत अधिक गर्म पानी से स्नान कराना अच्छा नही। सिर और आँखो पर अधिक गर्म पानी डालना ही नहीं चाहिए।

पतले बच्चो के लिए औलिव आयल की मालिश अच्छी है। इससे उसके पट्ठो पर माँस आ जाता है ऐसा अनुभव से देखा गया है। शिशु यदि कन्या है तो औलिव आयल की मालिश से उसकी त्वचा कोमल और सुन्दर बनती है।

बच्चे की नीद का भी विशेष ध्यान रखना पड़ता है। बच्चा जितना अधिक और अच्छी प्रकार से सोयेगा उतना ही वह स्वस्थ रहेगा। एक दो वर्ष तक तो बच्चे को कम से कम १४ से १६ घण्टे तक सोना ही चाहिए। दस घण्टे से कम तो बच्चे को सोना ही नही चाहिए।

कुछ बच्चो का स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। उस अवस्था मे माता को अपने आहार मे फलो का रस, फल, रसदार सब्जियाँ तथा दूध दही का सेवन करना चाहिए। माता को सदा अपने मन को शान्त रखने का प्रयास करना चाहिए। इसके परिणामस्वरूप दूध के माध्यम से बच्चा चिड़चिड़ापन से दूर रहेगा।

कुछ बच्चे रोते हैं और उनको कन्धे पर लटकाया जाए तो शान्त हो जाते है। ऐसे बच्चो को कभी कभी कैमोमिला-३० की एक मात्रा देने से लाभ होता है। इससे उसके स्वभाव मे धीरे धीरे परिवर्तन आता है।

गर्मियों के दिनों में माँ को ऐसे तंग करने वाले बच्चे को कै मोमिला ३० से बहुत लाभ होता है।

दाँतों के निकलने समय जब हरे पीले दस्त आते हैं और बच्चा रोता है उस अवसर पर भी कैमोमिला का सेवन उसको लाभ करता है।

जिन बच्चों के माता पिता में किसी प्रकार की कमी होती है जैसे हकलाना, पिता का यह विचार करना कि यही इसका प्रभाव बच्चे पर भी न पड़े ऐसे बच्चा का लक्षणानुसार औषधि देने से इस कमी से बचाया जा सकता है। जब बच्चा बोलने लगता है उस समय उसका देखकर लक्षण विचार कर उसकी चिकित्सा की जा सकती है। किन्तु माता को चाहिए कि वह पहले से ही इस सम्बन्ध में चिंतित न रहे अन्यथा शिशु पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ेगा जो कि अनुचित है।

जब बच्चा तीन चार मास का हो जाए तो एक बादाम तोड़ कर रात्रि को पानी में भिगोकर रख दीजिये। प्रातः छीलकर उसे साफ सिल पर महीन पीस लेना चाहिए। पहले आधा ही बादाम पीसिये और बच्चे को चटाइये। बच्चा बड़ा होने के साथ-साथ पूरा बादाम चटाइये। बादाम चन्दन की भाँति घिसकर लेप के रूप में बच्चे को चटाने से बच्चे की जिह्वा चुस्त हो जाएगी और इससे बच्चा बोलना भी जल्दी सीखेगा। इतना ही नहीं उसका बोलना भी इसके प्रभाव से स्पष्ट होगा।

एक बात जो विशेष ध्यान देने की है वह है अचानक न तो तापमान में किसी प्रकार का परिवर्तन आना चाहिए और न ही सहसा आहार में कोई परिवर्तन करना चाहिए। अन्यथा शिशु पर इसका विपरीत प्रभाव होता है।

बच्चे के वस्त्र भी ऋतु के अनुकूल ही होने चाहिए। वस्त्र इतने फिट भी नहीं होने चाहिए कि बालक का शरीर कसा रहे और न इतने ढीले ही होने चाहिए कि उनमें बच्चे के हाथ-पैर उलझ जाएँ। बच्चा ठीक प्रकार से साँस ले सके और ठीक प्रकार से हिल-डुल सके, ऐसे वस्त्र उसको पहनाने चाहिए। शीतकाल में गरम कपड़े पहनाने चाहिए। ऐसे कपड़े नहीं पहनाने चाहिए कि जिनसे उसको पसीना आये। पसीना आने पर हवा लगने से बच्चे का स्वास्थ्य बिगड़ता है।

यदि शिशु का जन्म ग्रीष्मकाल में हुआ है तो ध्यान रखना चाहिए कि नहलाने आदि में वह कैसा रहता है। ठण्ड तो नहीं पकड़ लेता। यदि ठण्ड नहीं पकड़ता है तो शीत ऋतु आते ही उसको गर्म कपड़ों में लपेटना उचित नहीं। गर्म कपड़ों का प्रयोग धीरे धीरे करना चाहिए।

फलों का रस और सब्जियों का रस और गाय का शुद्ध दूध बच्चे को

सर्दी-गर्मी सहन करने के योग्य बनाते हैं। बच्चे का पेट साफ रहना चाहिए यह आवश्यक है। फलों का रस और सब्जियों का सूप इसमें सहायक होता है।

स्तनपान करने में असमर्थ शिशु

बच्चा यदि स्तनपान नहीं करता है तो माता को चाहिए कि वह बच्चे को गोद में लिटाये हुए ही अपने स्तन को दबाकर उससे बूंद-बूंद करके दूध निकालकर बच्चे के मुख में डाले। बच्चे का मुख स्तन के साथ लगा होना चाहिए। स्तन की चूची को बच्चे के मुख के साथ इस प्रकार लगाना चाहिए कि जिससे दबाने पर उसकी बूंद बच्चे के मुख में जाए। जब तक वह स्वयं चूसने में समर्थ नहीं होता तब तक इस प्रकार करते रहना चाहिए।

यदि इसमें भी सफलता न मिले तो बच्चा को चाइना—६, ३० की मात्रा को मिल्क शुगर में बनाकर उसके मुख से लगाना चाहिए। इसके सेवन से बच्चे की दुर्बलता दूर होगी और वह दो-चार दिन में सामान्य रूप में स्तनपान करने लग जाएगा।

नाभि का रोग

प्राय यह देखने में आता है कि बच्चे की नाभि से पस निकलने लग जाती है और उसमें घाव हो जाता है। इसके लिए कलैण्डूला मदर टिंक्चर की दस पन्द्रह बूंदें पचास साठ ग्राम पानी में मिलाकर रुई से उस घाव को साफ करना चाहिए।

साइलीशिया ६ या ३० की शक्ति में बच्चे को निरन्तर देते रहना चाहिए। जब तक पस बन्द न हो जाए और घाव ठीक न हो जाए तब तक यह चिकित्सा करनी चाहिए।

यदि पस में दुर्गन्ध आती हो तो साइलिशिया के स्थान पर आर्सेनिकम ६, ३० का सेवन कराना चाहिए। नाभि स्थान पर सूजन के साथ लाली हो तो बैलाडोना उपयोगी होता है।

यदि नाभि से रक्त निकले तो हेमामेलिस ६ का सेवन कराना चाहिए। इसके साथ ही हेमामेलिस मदर टिंक्चर पानी में घोलकर लगाने से लाभ होगा।

यदि रक्तस्राव निरन्तर गहरे रंग का हो तो उस अवस्था में आर्सेनिकम —६ अथवा ३० की शक्ति में दे सकते हैं।

पीलिया

प्राय यह देखा जाता है कि बच्चे के जन्म के प्रथम सप्ताह में किसी बच्चे को पीलिया हो जाता है। कई बार यह पीलापन एक-दो दिन में स्वय ही हट जाता है। यदि ऐसा न हो तो बच्चे का औषधि का सेवन कराना चाहिए।

इस अवस्था में कैमोमिला ६, सर्वप्रथम दिया जाना ठीक है।

उसके बाद चाइना-६ और मर्क साल ३० दे सकते हैं।

कब्ज हो तो नक्स वोमिका ३० दीजिए।

बच्चा रोये चिल्लाये बिना दिन में दस्त करता है तो उस स्थिति में उसका पोडोफाइलम ३० का सेवन कराना चाहिए।

यदि कई दिन तक भी पीलिया न हटे तो चेलिडोनियम मदर टिंक्चर ६ की शक्ति में उसके लिए उपयोगी है। इससे उसका यकृत ठीक होगा इसके साथ ही यह पीलिया को भी ठीक करेगा।

कालमेग और चेलिडोनियम मदर टिंक्चर एक एक बूंद मिलाकर चार चम्मच पानी में मिलाइये। इस प्रकार एक चम्मच की एक मात्रा दिन में चार बार देने से बच्चे को लाभ होगा।

मा को अपने भोजन का विशेष ध्यान रखना चाहिए। तले हुए, खट्टे पदार्थ नहीं खाने चाहिए।

कैमोमिला ३० के प्रयोग से प्राय पीलिया ठीक हो जाता है। यदि उससे लाभ न हो तो चाइना ३० या मर्क साल ३० देने से बच्चा ठीक हो जाता है।

नक्स वोमिका (Nux Vomica) ३०—बच्चे को कब्ज के साथ पीलिया हो तो उसके लिए यह उपयोगी है।

चाइना (China) ३०—पीलिया के साथ अतिसार हो तो उसमें यह लाभकारी है। इससे बच्चे की दुर्बलता भी दूर होती है।

पोडोफाइलम (Podophyllum) ३०—पीलिया के साथ दस्त भी हो तो उसके लिए यह उत्तम औषधि है। दस्त बिना दर्द के होता है और प्राय प्रात काल से सन्ध्या तक रहते हैं और रात के अतिसार में यह औषधि उपयोगी नहीं है।

चेलिडोनियम (Chelidonium) ६, ३०—इसके सेवन से पीलिया के साथ साथ यकृत के विकार भी दूर हो जाते हैं। इसके टिंक्चर की दो बूंद जल में देना चाहिए।

हरनिया

बाल्यावस्था मे यह अधिकाश बच्चो को हो जाया करता है। यदि इसके लिए होमियोपैथिक ओषधि का आश्रय लिया जाए तो आपरेशन से बचा जा सकता है।

बच्चा जब रोता है तो उस समय उसकी नाभि और आँतो पर जोर पड़ने से यह रोग उत्पन्न हो जाता है। हरनिया के लक्षण आने पर 'पैड', पट्टी या ट्रेस' लाभकारी सिद्ध होते हैं।

नक्स वोमिका (Nux Vomica) ६—सर्वप्रथम इसका प्रयोग किया जाना चाहिए। यह निरापद है और रोगनाशक भी।

कलकेरिया कार्ब ६, ३० (Calcarea Carb)—बच्चा मोटा-तगड़ा हो, या हाइड्रोसील के लक्षण उभर आयें तो उसमे यह उत्तम ओषधि है।

सल्फर (Sulphur) ३०—सबसे पहले यदि इस ओषधि की एक मात्रा का सेवन कराया जाए तो सर्वोत्तम है।

नीला पड जाना

यह रोग भी प्राय नवजात शिशुओ को हो जाता है। सर्दी अथवा कमरे की दूषित वायु और हृदय मे विकार के कारण बच्चे के होठ और गाल पीले और शरीर नीला पड जाता है। विशेष कर नीचे का भाग—टाँगें और पैर। हृदय जोर जोर से धडकता है। शरीर ठण्डा रहता है।

आर्सेनिकम एल्बम (Arsenicum Album) ६, ३०—यदि शरीर बिल्कुल ठण्डा हो तो इस दवा को दो-दो घण्टे पर देना चाहिए।

डिजिटेलिस (Digitalis) ३०—हृदय के लक्षण नाडी का धीमा चलना आदि लक्षणो पर यह उत्तम ओषधि है।

जल्सीमियम (Gelsemium) ३०—बच्चा काँप उठता हो नींद पूरी न आती हो इस अवस्था मे इसके निरन्तर प्रयोग से अवश्य लाभ होगा।

कमरे की खिडकियाँ तथा रोशनदान खुले रहने चाहिए। शीतकाल मे कमरा गर्म रहना चाहिए। इन बातो को विशेष ध्यान मे रखिये।

सिर मे रसौली

कभी कभी प्रसव के समय बच्चे का सिर दब जाता है इस कारण वह एक ओर का सूज जाता है। साधारणतया तो इस सूजन को स्वयमेव ठीक हो जाना चाहिए और इसके लिए चिकित्सा की आवश्यकता नही होनी

चाहिए।

कलकेरिया (Calcarea Carb) ६, ३०—यदि सूजन से असली रसौली बन जाए तो इसके सेवन से लाभ होता है। यही इसकी एकमात्र औषधि है।

मुख पर दाने

कमोमिला (Chamomilla) ३०—यदि दाने गर्मी के कारण निकले हों तो इसका प्रयोग लाभकारी है।

रस टाक्स (Rhus Tox) ३०—यदि सर्दी में ऐसे लक्षण आयें तो इसके प्रयोग से लाभ होगा।

डल्कामारा (Dulcamara) ३०—सर्दी से होने वाले दानों पर ही इसका प्रयोग लाभकारी है।

सीपिया (Sepia) ३०—यह औषधि विशेषतया कन्याओं के रोग में लाभकारी होती है।

लाइकोपोडियम (Lycopodium) ३०—यदि पेट में गैस हो तो इसके प्रयोग से लाभ होगा।

सल्फर (Sulphur) ३०—यदि दानों में खुजली हो तो उस अवस्था में इसका प्रयोग लाभकारी होता है। ऐसे में यही देना आवश्यक है।

खुजली

कभी-कभी शिशु के कोमल शरीर में खुजली उभर आती है। कभी-कभी तो जब माताएं बच्चे की तेल मालिश करती हैं और फिर कुछ समय बाद उसको स्नान करा देती हैं तो इससे भी यह खुजली दूर हो जाती है। इससे यह सिद्ध होता है कि खुश्की के कारण उसको खुजली थी, जो कि तेल मालिश और स्नान से दूर हो गई।

यदि जन्म के समय सल्फर २०० की एक खुराक दी गई होती जैसा कि हम प्रसव प्रकरण में इसके गुणों का बखान कर आये हैं, तो बच्चे को कभी खुजली होती ही नहीं।

सल्फर (Sulphur) ३०—यदि तेल मालिश और स्नान से खुजली दूर न हो तो इस औषधि का प्रयोग किया जाना चाहिए। इसकी एक मात्रा प्रातःकाल चार दिन तक निरन्तर देते रहने से खुजली दूर होने के साथ-साथ बच्चे का रक्त भी शुद्ध हो जाएगा।

कपड़े बदलते समय अथवा वस्त्र उतारते समय खुजली हो उस अवस्था में आर्सेनिकम ३० का प्रयोग लाभकारी होता है।

रस टाक्स (Rhus Tox)—खुजली के साथ यदि बच्चा जलन भी अनुभव करे, कराहे और रोय तो इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

मस्से और तिल

ये लक्षण चर्म रोग से सम्बंधित हैं। कभी-कभी ये नवजात शिशु के शरीर पर भी देखने को मिल जाते हैं। यदि प्रारम्भ में इनकी ठीक चिकित्सा कर ली जाए तो इनसे मुक्ति मिल सकती है।

थूजा क्यू (Thuga Q)—इसको मिल्क शुगर में मिलाकर सेवन कराना चाहिए और मदर टिंक्चर को रुई से दिन मे मस्से पर लगाना चाहिए।

सल्फर (Sulphur) ३०, २००—यदि शिशु की माता पिता मे ऐसे लक्षण हो तो उनको भी ओषधि का सेवन कराना परमावश्यक है जिससे कि भावी बालक इनको उत्तराधिकार मे प्राप्त करने से बच जाए।

घाव

गन्दे रखे जाने वाले बच्चो के कानो के पीछे या बगल मे अथवा जांघों मे प्राय घाव बन जाया करते हैं।

सल्फर (Sulphur) ३०—यदि घाव पहले खुजली से प्रारम्भ हो तो इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

लाइकोपोडियम (Lycopodium) ३०—यदि घाव म से रक्त निकल रहा हो तो इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

ग्रेफाइटिस (Graphites)—यदि घाव मे से शहद की भाँति गाढा लेस निकलता हो तो इससे लाभ होता है।

कैमोमिला (Chamomilla) ३०—शरीर पर लाल दाने आकर घाव बन जाए तो उसके लिए यह उत्तम ओषधि है।

घावो को केण्डुला मदर टिंक्चर को पानी मे डालकर उससे सदा साफ करते रहना चाहिए।

त्वचा का फट जाना

पटोलियम (Petroleum) ३०—यदि बच्चा मिट्टी मे खेलता हो और उसके कारण उसकी त्वचा फट जाती हो तो उसके लिए यह ओषधि उत्तम है।

नेट्रम म्यूर (Natrum Mur) ६ एक्स, १२-एक्स—गर्मी के मौसम मे त्वचा फटने पर यह लाभकारी होती है।

एगरीकस (Agaricus) ६, ३०—पैरो पर अथवा शरीर के किसी भाग मे दरार सी पडने पर इसका प्रयोग करना चाहिए।

नाइट्रिक एसिड (Nitric Acid) ३०—जब त्वचा काली पड जाए और ठण्डा पानी डालने से चैन मिले तो इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

बालो की सीकरी

सीकरी न केवल बच्चो के यह तो बडो के सिर पर भी छा जाया करती है। प्रारम्भ से यदि इसकी रोकथाम न की जाए तो इससे अधिक हानि होने की सम्भावना होती है।

सल्फर (Sulphur) ३०—सप्ताह मे दो-तीन बार इसका प्रयोग करने से यह जड से मिट जाया करती है।

सिर पर लगाने के लिए आलिव आयल बहुत उत्तम है।

फोडे-फुंसियां

फोडे फुसियाँ बच्चो को प्राय होते रहते हैं। उनकी चिकित्सा यदि तुरत करा ली जाए तो उससे अधिक हानि होने की सम्भावना नही रहती।

आर्निका (Arnica) ३-एक्स—गर्मी मे मुख पर फोडे निकल आयें और वे बहुत कष्टदायक हो तो इसका प्रयोग उत्तम है।

कलकेरिया कार्ब (Calcarea Carb) ३०—मोटे-ताजे बच्चो के लिए यह उपयोगी औषधि है।

सल्फर (Sulphur) ३०—कलकेरिया कार्ब से पूर्व रोगी को यदि इस औषधि का सेवन कराया जाय तो उत्तम है।

लाइकोपोडियम (Lycopodium) ३०—दुर्गन्धयुक्त रक्तमिश्रित फोडा मे स्राव होने पर इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

हीपर सल्फर (Hepar Sulphur) ३०—सिर पर फोडे निकल आयें तो इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

ग्रेफाइटिस (Graphites) ३०—शहद की भाँति गाढा स्राव निकलता हो तो उसमे यह उपयोगी है।

जूएँ

सिर यदि गन्दा रहे तो उसमे जूएँ हो जाया करती हैं। इसलिए सिर को सदा साफ रखना चाहिए। मैले-कुचले बच्चे ही नही बडो के सिर पर भी इसके कारण जूए पड जाती हैं।

रस टाक्स (Rhus Tox)—खुजली के साथ यदि बच्चा जलन भी अनुभव करे, कराहे और रोए तो इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

मस्से और तिल

ये लक्षण चर्म रोग से सम्बन्धित हैं। कभी-कभी ये नवजात शिशु के शरीर पर भी देखने को मिल जाते हैं। यदि प्रारम्भ में इनकी ठीक चिकित्सा कर ली जाए तो इनसे मुक्ति मिल सकती है।

थूजा क्यू (Thuga Q)—इसको मिल्क शुगर में मिलाकर सेवन कराना चाहिए और मदर टिंचर को रुई से तिल या मस्से पर लगाना चाहिए।

सल्फर (Sulphur) ३०, २००—यदि शिशु की माता पिता में ऐसे लक्षण हों तो उनको भी औषधि का सेवन कराना परमावश्यक है जिससे कि भावी बालक इनको उत्तराधिकार में प्राप्त करने से बच जाए।

घाव

गन्दे रखे जाने वाले बच्चों के कानों के पीछे या बगल में अथवा जांघों में प्रायः घाव बन जाया करते हैं।

सल्फर (Sulphur) ३०—यदि घाव पहले खुजली से प्रारम्भ हो तो इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

लाइकोपोडियम (Lycopodium) ३०—यदि घाव में से रक्त निकल रहा हो तो इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

ग्रेफाइटिस (Graphites)—यदि घाव में से शहद की भाँति गाढा लेस निकलता हो तो इससे लाभ होता है।

कैमोमिला (Chamomilla) ३०—शरीर पर लाल दाने आकर घाव बन जाए तो उसके लिए यह उत्तम औषधि है।

घावों को कैण्डुला मदर टिंचर को पानी में डालकर उससे सदा साफ करते रहना चाहिए।

त्वचा का फट जाना

पटोलियम (Petroleum) ३०—यदि बच्चा मिट्टी में खेलता हो और उसके कारण उसकी त्वचा फट जाती हो तो उसके लिए यह औषधि उत्तम है।

नेट्रम म्यूर (Natrum Mur) ६ एक्स, १२ एक्स—गर्मी के मौसम में त्वचा फटने पर यह लाभकारी होती है।

एगरीकस (Agaricus) ६, ३०—पैरों पर अथवा शरीर के किसी भाग मे दरार सी पडने पर इसका प्रयोग करना चाहिए।

नाइट्रिक एसिड (Nitric Acid) ३०—जब त्वचा काली पड जाए और ठण्डा पानी डालने से चैन मिले तो इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

बालो की सीकरी

सीकरी न केवल बच्चो के यह तो बडो के सिर पर भी हो जाया करती है। आरम्भ से यदि इसकी रोकथाम न की जाए तो इससे अधिक हानि होने की सम्भावना होती है।

सल्फर (Sulphur) ३०—सप्ताह म दो-तीन बार इसका प्रयोग करने से यह जड से मिट जाया करती है।

सिर पर लगाने के लिए आलिव आयल बहुत उत्तम है।

फोडे-फुंसियाँ

फोडे फुंसियाँ बच्चो को प्राय होते रहते हैं। उनकी चिकित्सा यदि तुरन्त करा ली जाए तो उससे अधिक हानि होने की सम्भावना नही रहती।

आर्निका (Arnica) ३ एक्स—गर्मी मे मुख पर फोडे निकल आयें और वे बहुत कष्टदायक हो तो इसका प्रयोग उत्तम है।

कलकेरिया कार्ब (Calcarea Carb) ३०—मोटे-ताजे बच्चो के लिए यह उपयोगी औषधि है।

सल्फर (Sulphur) ३०—कलकेरिया कार्ब से पूर्व रोगी को यदि इस औषधि का सेवन कराया जाय तो उत्तम है।

लाइकोपोडियम (Lycopodium) ३०—दुर्गन्धयुक्त रक्तमिश्रित फोडो मे स्राव होने पर इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

हीपर सल्फर (Hepar Sulphur) ३०—सिर पर फोडे निकल आयें तो इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

ग्रेफाइटिस (Graphites) ३०—शहद की भाँति गाढा स्राव निकलता हो तो उसमे यह उपयोगी है।

जूएँ

सिर यदि गन्दा रहे तो उसमे जूएँ हो जाया करती है। इसलिए सिर को सदा साफ रखना चाहिए। मैले-कुचले बच्चे ही नही बडो के सिर पर भी इसके कारण जूएँ पड जाती हैं।

स्टाफेसगेरिया ३० और बायोकेमिक नेट्रम म्यूर ६ एक्स के प्रयोग से सिर की जूएँ नष्ट हो जाती हैं। ये खाने की औषधि हैं।

सिर पर लगाने के लिए सैबाडिल्ला मदर टिंक्चर की एक बूंद और पन्द्रह बूंद पानी के अनुपात में पानी तैयार करके सिर को नित्य साफ करने से भी जूए साफ हो जाती हैं।

कान में पीड़ा

बच्चे को सर्दी-जुकाम होने अथवा खसरा होने के बाद, या दाँत निकालते समय उसके कान में दर्द हो जाया करता है। इससे बच्चा दुखी रहता है। परेशान रहता है।

इसकी चिकित्सा इस प्रकार है—

एकोनाइट (Aconite) ३०—शुष्क, सर्द हवा में कान दर्द की प्रथम औषधि है।

बेलाडोना (Belladonna) ३०—यदि कान लाल हो तो निरन्तर इसका प्रयोग करना चाहिए। कई बार अधिक कष्ट होने पर बेलाडोना मदर टिंक्चर की एक बूंद ड्रापर से कान में डालने से लाभ होता है।

कमोमिला (Chamomilla) ३०—दाँतों के दिनों में यदि कान में पीड़ा हो तो इसका प्रयोग उत्तम है।

मैग फॉस (Mag Phos) ३ एक्स—कान दर्द की यह अचूक दवा है। इससे दर्द तुरन्त बन्द हो जाता है।

पल्सेटिला (Pulsatilla) ३०—नजला थम जाने के बाद कान में दर्द हो तो उसके लिए यह उत्तम औषधि है।

हीपर सल्फर (Hepar Sulphur) ६—कान में फुंसी हो तो इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

अजुनी

आँख के ऊपर या उसके पास होने वाली छोटी-सी फुंसी है। यह बच्चों को ही नहीं बड़ों को भी हो जाती है। पहले आँख लाल होगी, उसके बाद अजुनी दाने की शक्ल की बन जाती है। किसी किसी में दर्द होता है किसी में नहीं भी होता।

पल्सेटिला (Pulsatilla) ३०—यह इसके लिए उत्तम औषधि मानी गई है।

सल्फर (Sulphur) ३०—जब अजुनी में खारिश हो तो उस अवस्था में इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

हीपर सल्फर (Hepar Sulphur) ६—पकने वाली अजुनी मे इसको देने से लाभ होता है। इसके प्रयोग से दाना फट जाता है और साफ हो जाता है।

स्टाफेसगेरिया (Staphysagria) ३०, २००—यदि बार बार अजुनी होने का स्वभाव हो तो इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

बेलाडोना (Belladonna) ३०—आंख के आस-पास लाल होते ही इसका प्रयोग करना चाहिए।

टिटनेस

ऐसा माना जाता है कि नाडू नवल कोड द्वारा बच्चे के मेरुदण्ड मे किसी प्रकार का कीड़ा घुस जाने के कारण यह रोग हो जाता है। यदि परिचारिका अथवा माता के हाथ गन्दे हो अथवा बच्चे या उसकी परिचारिका के वस्त्र गन्दे हो तो उनके माध्यम से यह नाडू मे पहुँचकर मेरुदण्ड मे पहुँचता है।

यह रोग जब होता है तो जबड़े बन्द हो जाते हैं। यह भयानक रोग माना गया है। बच्चा मा का दूध भी नही पी सकता। उसकी मुट्ठिया बँध जाती हैं तथा सारा शरीर अकड़ने लगता है। ज्यो ज्यो दौरे पड़ते हैं कष्ट बढ़ता जाता है।

इस रोग से मृत्यु का भय भी रहता है।

एकोनाइट (Aconite) ६, ३०—यदि ठण्ड के कारण आरम्भ हो, बच्चा बेचैन और लगातार रोता चिल्लाता हो तो इस दवा का सेवन कराने से लाभ होता है।

नक्स वोमिका (Nux Vomica) ३०—कई दिन तक शौच न हुआ हो और ऐसे लक्षण आ गए हो तो इस ओषधि का प्रयोग उत्तम है।

बेलाडोना (Belladonna) ३०—यदि नाभि सूजी हुई हो तो उन लक्षणो मे यह उत्तम ओषधि है।

जेलसीमियम (Gelsemium) ३०—अकड़न कम्पन और थिरकन और जबड़ा कठिनाई से खुलता हो तो इस ओषधि का जल्दी-जल्दी प्रयोग मे लाना चाहिए।

इग्नेशिया (Ignatia) ३०—यदि ऐसा भास हो कि माँ ने दुखद अवस्था मे अथवा क्रोध मे बच्चे को दूध पिलाया है उसके अनन्तर इस ओषधि का प्रयोग अति लाभकारी सिद्ध होगा।

आर्निका ३० हाईपेरीकम ३० (Arnica Hypericum) ३०—चोट लगने या जख्म हो जाने के कारण टिटनेस के लक्षण दिखाई दें तो आर्निका

३० दिन के उपरान्त हाई पोटेन्सी ३० प्रयोग कराना चाहिए।

यह टिटनस की उत्तम औषधि है।

घाव पर केलेन्डूला लोशन पानी में मिलाकर या ऑलिव ऑयल में मिलाकर लगाया जा सकता है।

मैननजाइटिस

अन्यान्य रोगों की भाँति यह भी भयानक रोग ही है। यह प्रथम सिर दर्द से आरम्भ होता है। जब बच्चा रोता चिल्लाता है, उसकी देखभाल ठीक नहीं होती, सिर इधर से उधर पटकता है। श्वास और नाड़ी की अनियमितता, उलटी, आँख का भेंगापन और साथ में ज्वर, गर्दन और सिर के पिछले भाग में पीड़ा आदि लक्षण हैं।

एपिस (Apis) ६, ३०—बच्चा जब आधी नींद में चीखता चिल्लाता है तो इन लक्षणों में यह अच्छी औषधि है।

बेसिलिनम (Bacilinum) २००—यदि माता पिता में पुरानी खाँसी, दमा अथवा यक्ष्मा का इतिहास हो तो इस औषधि की एक मात्रा सप्ताह में एक दो बार देने से लाभ होता है।

हेलिबोरस (Helleborus) ३०—गर्दन और सिर के पिछले भाग में बहुत पीड़ा, बच्चे का सिर पटकना, इन लक्षणों में इसका प्रयोग लाभकारी है।

निरन्तर ज्वर

कभी-कभी बच्चा को ऐसा ज्वर भी हो जाता है जो कि ठीक होने में नहीं आता। उसके लिए निम्न औषधियाँ हैं—

पल्सेटिला (Pulsatilla) ३०—पेट की खराबी के साथ यदि ज्वर हो तो उसमें यह उत्तम औषधि है।

फरम फॉस (Ferrum Phos) १२ एक्स, ३०—यह ज्वर की उत्तम औषधि है।

जेल्सेमियम (Gelsemium) ६, ३०—निढाल बच्चा बुखार से चुपचाप पड़ा रहता है तो इससे बहुत लाभ होता है।

यदि इसको फरम फास १२ एक्स के साथ बारी-बारी से दिया जाए तो आशातीत सफलता मिल सकती है।

एण्टिम क्रूड (Antim Crud) ३०—भूख न लगती हो, जिह्वा पर सफेद मैल की परत जमी हुई हो इस औषधि के सेवन से ज्वर टूट जाएगा।

सिना (Cina) ३०—मल में सूतिका कृमि हों तो इस प्रकार के ज्वर में यह ओषधि बहुत ही श्रेष्ठ मानी गई है।

दूध उलटना

यह सामान्य रोग माना गया है।

नक्स वोमिका (Nux Vomica) ३०—कब्ज के साथ बच्चा दूध उलट देता हो तो इस ओषधि के सेवन से लाभ होगा।

पल्सेटिला (Pulsatilla) ३०—माँ का पेट खराब रहता हो और बच्चा दूध पीकर दही की भाँति निकाल दे तो यह उत्तम ओषधि है।

र्यूम (Rheum) ३०—दूध उलटने पर बहुत खट्टी दुर्गंध आय और बच्चे के शरीर में भी खट्टी 'बास' आती हो तो यह ओषधि अति लाभकारी सिद्ध होगी।

एथूजा (Aethusa) ३०—दूध पीते ही बच्चा दूध उलट दे तो इसके सेवन कराने से वह अवश्य बन्द हो जाएगा।

कलकेरिया कार्ब (Calcarea Carb) ३०—जब दूध उलटने के साथ दुर्गंधयुक्त अतिसार भी हो तो इस ओषधि का निरन्तर प्रयोग करते रहना चाहिए। यह बहुत उत्तम ओषधि है।

इपिकाक (Ipecac) ३०—बच्चा जो दूध उलटता है उसमें यदि लेस हो तो उसके लिए यह अत्यन्त उपयोगी ओषधि है।

क्रियाजोट (Kreasote) ३०—जब दूध उलटने का लक्षण पुराना हो जाए तो इस ओषधि का प्रयोग कराना उत्तम होता है।

हिचकी

यदि दिन में एक-दो बार बच्चे को हिचकी आ जाए तो यह अच्छा लक्षण है। किन्तु यदि अधिक बार आये तो मीठे जल के पिलाने से शान्त हो जाएगी।

इसके लिए नक्स वोमिका ३० और कार्बोवेज ३० भी उत्तम ओषधियाँ हैं।

नाक का रुक जाना

सामान्यतया यह देखा जाता है कि सर्दी के कारण बच्चे की नाक रुक जाती है श्वास रुक जाता है ऐसे लक्षण आदि देखने में आते हैं।

डल्कामारा (Dulcamara) ६—गर्मी के अन्त में, बरसात के बाद इस ओषधि के प्रयोग से बच्चे को लाभ होता है।

३० देने के उपरान्त हाई प्रीक्म ३० प्रयोग कराना चाहिए।

यह टिटनेस की उत्तम ग्रावधि है।

घाव पर केल्डूला लाशन पानी मे मिलाकर या ग्रालिव ग्राय मिलाकर लगाया जा सकता है।

मैननजाइटिस

ग्रन्यान्य रोगो की भाँति यह भी भयानक रोग ही है। यह प्रथम दर्द से प्रारम्भ होता है। जब बच्चा रोता चिल्लाता है, उसकी देखभ ठीक नही होती, सिर इधर से उधर पटकता है। श्वास और नाडी अनियमितता, उलटी, आँख का भेंगापन और साथ मे ज्वर, गर्दन म सिर के पिछले भाग मे पीडा आदि लक्षण हैं।

एपिस (Apis) ६, ३०—बच्चा जब आधी नीद मे चीखता चिल्लाए है तो इन लक्षणो मे यह अच्छी ओषधि है।

बेसिलिनम (Bacilinum) २००—यदि माता पिता म पुरान खाँसी, दमा अथवा यक्ष्मा का इतिहास हो तो इस ग्रावधि की एक मात्र सप्ताह मे एक दो बार देने से लाभ होता है।

हेलिबोरस (Helleborus) ३०—गर्दन और सिर के पिछले भाग म बहुत पीडा, बच्चे का सिर पटकना, इन लक्षणा म इसका प्रयोग लाभकारी है।

निरन्तर ज्वर

कभी-कभी बच्चो को ऐसा ज्वर भी हो जाता है जो कि ठीक होने मे नही आता। उसके लिए निम्न ओषधियाँ हैं—

पल्सेटिला (Pulsatilla) ३०—पेट की खराबी के साथ यदि ज्वर हो तो उसमे यह उत्तम ओषधि है।

फैरम फास (Ferrum Phos) १२ एक्स, ३०—यह ज्वर की उत्तम ओषधि है।

जेल्सेमियम (Gelsemium) ६, ३०—निढाल बच्चा बुखार से चुपचाप पडा रहता है तो इससे बहुत लाभ होता है।

यदि इसको फैरम फॉस १२ एक्स के साथ बारी बारी से दिया जाए तो आशातीत सफलता मिल सकती है।

एण्टिम क्रूड (Antim Crud) ३०—भूख न लगती हो, जिह्वा पर सफेद मैल की परत जमी हुई हो इस ओषधि के सेवन से ज्वर टूट जाएगा।

ऐसे बच्चे को सामान्यतया सूखा रोग हो जाता है।

इस अवस्था में बच्चे का तापमान भी सामान्य से अधिक रहने लगता है। कई बार ऐसा भी होता है कि यह शिकायत दाँतों के दिनों से प्रारम्भ होती है।

प्रारम्भ में जैसा कि ऊपर बताया गया है कि प्रसूता और शिशु को सल्फर ३० या २०० की मात्रा अवश्य देनी चाहिए। उसके सेवन से इस प्रकार के सब रोगों से मुक्ति मिल जाती है।

यदि सूखा रोग का लक्षण सामने आ जाए तो उस अवस्था में भी सल्फर ३०, २०० की मात्रा देने के बाद बालक को कलकेरिया कार्ब पर रखना चाहिए।

ज्वर या कोई अन्य लक्षण न हो तो और बच्चा लम्बा पतला हो तो कलकेरिया फॉस ६ एक्स बायोकैमिक कई दिन तक खिलाते रहने से जहाँ बच्चा दाँत आसानी से निकाल लेगा वहाँ सूखने से भी बच जाएगा।

कैंसर

कैंसर वह भयानक और दुस्साध्य रोग है जिसके विचार मात्र से ही मनुष्य को कपकपी आ जाती है। ऐसी धारणा है कि जिसको यह रोग लग गया उसके प्राण लेकर ही रहता है।

तदपि निराश होने से तो इससे छुटकारा नहीं पाया जा सकता।

होम्योपैथी में औषधियों के भण्डार की कमी नहीं है, किन्तु दुःख इस बात का है कि इस ओर किसी का ध्यान सहसा जाता ही नहीं है। औषधि विज्ञान तथा आयुर्विज्ञान के क्षेत्र में नई-नई खोजें की जा रही हैं। अभी भी प्रयोग जारी हैं किन्तु इस विषय पर जो प्रयोग और अनुभव पहले प्राप्त किये जा चुके हैं उनके प्रयोग के लिए न तो डाक्टरों को प्रोत्साहित किया जाता है और न ही होम्योपैथिक अस्पतालों की कोई व्यवस्था की जाती है।

कैंसर की रोकथाम पर अन्वेषण करने के लिए करोड़ों रुपये व्यय किये जा रहे हैं, तदपि इसका विस्तार बढ़ता जा रहा है और महँगे से महँगा इलाज कराने पर भी इससे रोगी निरंतर मरते ही जा रहे हैं। आज

नक्स वोमिका (Nux Vomica) ३०—पहले बायाँ नथुना बन्द होता हो और फिर दायाँ, इस प्रकार बारी-बारी से नथुने बन्द होने पर इसका प्रयोग बहुत ही सफल सिद्ध होता है।

एमोनिया कार्ब (Ammonia Carb) ३०—नाक से पानी बहता है किन्तु नाक बन्द है बच्चा बेचैन रहता है, उस अवस्था में इसके प्रयोग से बन्द नाक खुल जाएगी।

एंटिम टार्ट (Antim Tart) ३०—यदि छाती में गड़गड़ाहट के साथ नाक बन्द हो निमोनिया के लक्षण हों तो भी, इन सबमें यह उत्तम औषधि मानी गई है।

सम्बूकस (Sambucus) ३०—श्वास में कष्ट, नाक बन्द और शुष्क लेटे रहने पर बच्चे का कष्ट बढ़ता है उस अवस्था में इस औषधि का प्रयोग अत्यन्त लाभकारी होता है।

कैमोमिला (Chamomilla) ३०—बच्चा कन्धे पर उठाये जाने पर और खुली हवा में चैन अनुभव करे तो इसका सेवन कराने से उसका चिड़चिड़ापन ठीक हो जाएगा।

आर्सेनिकम (Arsenicum) ३०—नाक का बहना, होठों का जलाये या खारिश पैदा करे जिससे बच्चा बेचैन हो, बार बार प्यास लगे किन्तु बहुत थोड़ी तो इन लक्षणों में यह उत्तम औषधि है।

काली खाँसी

यह छूत का रोग है। अधिकांश बच्चों को यह हो जाया करता है। इसकी अवधि भी लम्बी होती है। यह प्राय तीन सप्ताह से छ सप्ताह तक रहती है।

बलाडोना (Belladonna) ३०—बच्चे का मुख लाल हो खाँसते खाँसते अधिक लाल हो जाता हो। यदि आरम्भ में ही इसका प्रयोग किया जाए तो रोग की रोकथाम जल्दी हो सकती है।

ग्रेफाइटिस (Graphites) ३०—काली खाँसी की यह उत्तम औषधि है। खाँसते खाँसते बच्चे को उलटी आ जाती है, आक्रमण जल्दी जल्दी होता है, इस प्रकार के रोग में यह उत्तम औषधि है। तीन-तीन घण्टे बाद देते रहने से रोग सर्वथा ठीक हो जाता है।

सूखा रोग और हड्डियों का टेढ़ा होना

जिन बच्चों को समुचित आहार नहीं मिलता और जिनका आहार ठीक प्रकार पचकर उसका रस नहीं बन पाता और रस से रक्त नहीं बनता

ऐसे बच्चे को सामान्यतया सूखा रोग हो जाता है।

इस अवस्था मे बच्चे का तापमान भी सामान्य से अधिक रहने लगता है। कई बार ऐसा भी होता है कि यह शिकायत दाँतो के दिनो से प्रारम्भ होती है।

प्रारम्भ मे जैसा कि ऊपर बताया गया है कि प्रसूता और शिशु को सल्फर ३० या २०० की मात्रा अवश्य देनी चाहिए। उसके सेवन से इस प्रकार के सब रोगो से मुक्ति मिल जाती है।

यदि सूखा रोग का लक्षण सामने आ जाए तो उस अवस्था मे भी सल्फर ३० २०० की मात्रा देने के बाद बालक को कलकेरिया कार्ब पर रखना चाहिए।

ज्वर या कोई अन्य लक्षण न हो तो और बच्चा लम्बा, पतला हो तो कलकेरिया फास ६ एक्स बायोकेमिक कई दिन तक खिलाते रहने से जहाँ बच्चा दाँत आसानी से निकाल लेगा वहाँ सूखने से भी बच जाएगा।

कैंसर

कैंसर वह भयानक और दुस्साध्य रोग है जिसके विचार मात्र से ही मनुष्य को कपकपी आ जाती है। ऐसी धारणा है कि जिसको यह रोग लग गया उसके प्राण लेकर ही रहता है।

तदपि निराश होने से तो इससे छुटकारा नही पाया जा सकता।

होम्योपैथी म औषधियो के भण्डार की कमी नही है, किन्तु दुख इस बात का है कि इस ओर किसी का ध्यान सहसा जाता ही नही है। औषधि विज्ञान तथा आयुर्विज्ञान के क्षेत्र मे नई-नई खोजें की जा रही हैं। अभी भी प्रयोग जारी हैं किन्तु इस विषय पर जो प्रयोग और अनुभव पहले प्राप्त किये जा चुके हैं उनके प्रयोग के लिए न तो डाक्टरो को प्रोत्साहित किया जाता है और न ही होम्योपैथिक अस्पतालो की कोई व्यवस्था की जाती है।

कैंसर की रोकथाम पर अन्वेषण करने के लिए करोड़ो रुपये व्यय किये जा रहे हैं, तदपि इसका विस्तार बढता जा रहा है और महँगे से महँगा इलाज कराने पर भी इसके रोगी निरंतर मरते ही जा रहे हैं। आज

तक यह नहीं सुनने में आया है कि अमुक कैंसर का रोगी अमुक अस्पताल अथवा डॉक्टर से चिकित्सा कराने के उपरान्त नीरोग हो गया है।

जिसको एक बार पता लग गया कि उसको कैंसर रोग हो गया है तो बस फिर वह अपने जीवन की घड़ियाँ गिनना प्रारम्भ कर देता है। कैंसर का नाम ही इतना भयावह है कि बस कुछ न पूछिये। सम्भवत रोग इतना भयावह न हो किन्तु इस विषय में जो प्रचार किया जाता है, उसके कारण यह भयावह हो गया है।

कैंसर विशेषज्ञ तथा उसके चिकित्सक यह तो स्वीकार करते हैं कि इसकी जल्दी से जाँच नहीं हो सकती तो भी निरन्तर इस नाम की रट लगाने तथा सन्देह प्रकट करने से रोगी को जीते जी मृत्यु की घड़ियाँ गिनने पर विवश कर देते हैं। बीस तीस हजार रुपया इसकी साधारण-सी चिकित्सा पर व्यय हो जाना तो सामान्य सी बात है। इससे ही कल्पना की जा सकती है उस सामान्य भारतीय की क्या दुर्दशा होगी जिसको धीरे से यह बता दिया जाय कि उसके अमुक अंग में डॉक्टरों को 'कैंसर' होने का सन्देह है।

मैं यहाँ पर स्वानुभव की एक घटना का उल्लेख कर रहा हूँ।

एक दिन मेरे पास अधेड़ आयु के पति-पत्नी आये। पत्नी का कहना था कि उसके दिल का दुःख होता है। बैठे बैठे दिल घबराने लगता है। एलोपैथी की चिकित्सा कराई डॉक्टरों का कहना है कि हृदय में कुछ विकार आ गया है।

होम्योपैथिक सिद्धान्त के अनुसार मैंने उस महिला का सारा इतिहास सुना। आधा घण्टा पूछताछ करने तथा लक्षण समूह एकत्रित करने के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि वह वात रोग से पीड़ित है जिसका दबाव हृदय पर पड़ता है। जिसको हम साधारण शब्दों में Gastralagia अथवा Gastritis कह सकते हैं।

चिकित्सा प्रारम्भ करने से पूर्व मैंने उस महिला को उसके खान-पान से सम्बन्धित कुछ निर्देश दिये। उसको बताया कि इस अवस्था में उसको क्या खाना चाहिए और क्या नहीं खाना चाहिए तथा कुछ ऐसे पदार्थ भी बताये कि जिनका सेवन उसको बिलकुल नहीं करना चाहिए। रोगिणी को कहा गया कि वह चार दिन बाद आकर अपनी स्थिति का वर्णन करे।

चार दिन बाद जब रोगिणी आई तो उसने बताया कि वह अपनी स्थिति में कुछ सुधार सा अनुभव कर रही है। वायु का प्रकोप ऊपर को न होने से उसके दिल की घबराहट कम हो गई थी। केवल पेट में बनने वाली गैस का रास्ता अन्य दिशा की ओर मोड़ दिया था।

एक सप्ताह तक उसको औषधि दी गई। उसके बाद उसने बताया

कि वह सर्वथा स्वस्थ है। चिकित्सा पूर्ण होने पर उसको हृदय के लिए टानिक के रूप में क्रेटागस-क्यू का कुछ दिन तक सेवन करते रहने का निर्देश दिया और उसको आश्वस्त किया कि उसको किसी प्रकार का हृदय रोग नहीं है।

इस घटना के बहुत दिनों बाद वह महिला एक दिन अपने पुत्र को लेकर मेरे पास आई। वह उस दिन पूर्ण रूप से संतुष्ट दिखाई देती थी। उस दिन अपनी पुत्रवधू की खाँसी की औषधि के लिए आई थी। बातों-बातों में उसने अपने 'हृदय रोग' का फिर उल्लेख करते हुए बताया कि एक दिन वह रसोई में बैठी रोटी बेल रही थी और उसका यही सन्देह उस समय भोजन कर रहा है। सहसा उस महिला की आँख से आँसू झरने लगे। क्योंकि उस समय उसको डॉक्टरों की बात कचोट रही थी कि उसको हृदय रोग है। इस कारण अनायास उसके आँसू बह चले थे। लड़के ने बार बार पूछा कि वह क्या रो रही है तो उसने उसको बताया नहीं। उसको एक ही भय सता रहा था कि इन बच्चों को छोड़कर अब उसे शीघ्र ही इस दुनिया से कूच कर जाना है।

उसका कहना था कि अब मुझसे चिकित्सा कराने के उपरांत जब वह स्वस्थ हो गई है तो अपनी उस दिन की घटना पर उसको स्वयं हँसी आने लगती है।

इससे ही अनुमान लगाया जा सकता है कि रोग की भयावहता के चित्रण से रोगी के मन पर क्या प्रतिक्रिया होती है।

होम्योपैथी के प्रवर्तक हैनिमन ने रोग के नाम को कभी कोई महत्त्व दिया ही नहीं। उनका रोगी को यही कहना था कि वह अपना कष्ट कथन कर दे इसके बाद चिकित्सक का काम है कि वह निरीक्षण-परीक्षण कर रोग का निदान करे।

क्या रोगी के मन को स्वस्थ और सबल बनाये रखने के लिए जिससे कि रोग से लड़ने के लिए उसकी संजीवनी शक्ति सुदृढ़ और सामर्थ्यवान बनी रहे उसके लिए ग्रेट हैनीमेन का यह सिद्धांत उपयोगी नहीं ? क्या हम मानव मात्र की भलाई के लिए इसे क्रियान्वित नहीं कर सकते ?

डाक्टर जेम्स टाइलर कैंट का होम्योपैथी में बड़ा नाम है। वे सन १९१६ तक डॉक्टर हनीमेन के सिद्धांतों पर खोज करते रहे हैं। उसका ही यह परिणाम है कि हाम्योपैथिक जगत में उनका नाम एक महान प्रोफेसर और चिकित्सक के रूप में सम्मान के साथ लिया जाता है। उन्होंने एक स्थान पर लिखा है 'यदि बच्चे हाम्योपैथिक चिकित्सक की देख रेख में बड़े होते हैं तो न उन्हें कभी यक्ष्मा होगा न ब्राइट डिजीज और न ही

कभी कोई दुस्साध्य रोग होगा और वे अपनी पूर्ण आयु सुख से जियेंगे।"

उपर्युक्त बातों से हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि यदि किसी भी रोग की होम्योपैथिक चिकित्सा होती है तो योग्य होम्योपैथ यह स्वयं ही देख लेगा कि रोगी के लक्षण उसके शरीर को क्या हानि पहुँचा सकते हैं। लक्षण समूह पर चयन की गई औषधि उस रोगी को किसी भी दुस्साध्य रोग से बचाने की सामर्थ्य रखती है।

तदपि स्वास्थ्य के कुछ नियम हैं, जिनका पालन करने का विधान हर चिकित्सा पद्धति में बताया जाता है।

यदि रोगी आरम्भ से ही होम्योपैथिक चिकित्सक के अधीन हो तो कैंसर की सम्भावना को निर्मूल सिद्ध किया जा सकता है। किंतु यह सम्भव नहीं है। क्योंकि इस प्रकार का सन्देह होने पर रोगी पहले ऐलोपैथ के पास दौड़ा हुआ जाता है। वहाँ से निराश होने पर कोई भूला-भटका होम्योपैथ के पास पहुँचता है शेष तो यों ही अपने प्राण गँवा देते हैं।

कैंसर के लिए उपर्युक्त औषधियों का हम वर्णन करें उससे पूर्व हम यह बता देना उपयुक्त समझते हैं कि कैंसर की उत्पत्ति का ठीक कारण अभी कोई ज्ञात नहीं कर पाया है। तदपि हैनीमैन का सिद्धान्त तो अटल है। वह यह कि अपनी सजीवनी शक्ति को स्थिर बनाये रखिये। आलस्य नहीं करिये और स्वस्थ रहिये।'

इसके लिए सर्वप्रथम सामान्य स्वास्थ्य के नियम जैसे प्रातःकाल समय पर उठना, हलका व्यायाम करना, शौच और स्नान आदि समय पर करके शुद्ध पौष्टिक आहार लेना। मनुष्य के शरीर और मन की स्वस्थता के लिए आहार और विचार ही मुख्य है।

यदि आप स्वस्थ विचार सबल मन और सादा शुद्ध आहार अपना शक्ति के अनुसार रखते हैं तो आपको कोई रोग नहीं घेर सकता। यहां पर यह प्रश्न स्वाभाविक उत्पन्न होता है कि रोगी तो फिर भी दिखाई देते हैं। बच्चे और स्त्रियां रोगी हैं स्त्रियों के जरायु में कैंसर होता है और बच्चे ल्यूकोरिया का शिकार होते हैं। यह सब क्यों ?'

इसका उत्तर स्पष्ट है। यह भोगवाद का युग है। मद्यपान करने वाला और अनियमित जीवन व्यतीत करने वाला पुरुष अच्छी-भली पत्नी को भी रोगिणी बना देता है। शुद्ध विचार और आहार वाला रोगी क्या होगा ? होगा भी तो माता पिता की गलतियों के परिणामस्वरूप ही होगा जो उसको रक्त द्वारा प्राप्त हुआ है।

अब हम कैंसर की औषधियों का उल्लेख करते हैं।

कैंसर का लक्षण समूह

(क) हैमोग्लाबिन का शरीर में कम हो जाना अर्थात् शरीर भार में निरंतर गिरावट, दुर्बलता अनुभव करना।

(ख) रक्त में लाल श्वेत कणों के अनुपात में गडबडी, मुख और त्वचा का श्वेत या काला पडना।

(ग) लाल कण (Red Carpuscles) कम होना रक्ताल्पता के लक्षण।

(घ) टायफाइड मलेरिया, पीलिया ल्यूकोरिया गुर्दे अथवा फेफडा, यकृत आदि में गडबडी के कारण शरीर की नैसर्गिक गर्मी में कमी ठण्डापन बढना, अर्थात् तनिक से परिवर्तन से ठण्ड लगना, हाथ-पैरों में पसीना।

(ङ) शरीर के किसी भाग से रक्तस्राव।

(च) बारम्बार शरीर के किसी भाग में जख्म या फोडा होना।

(छ) किसी प्रकार का निरन्तर स्राव होते रहना अर्थात् ल्यूकोरिया या जरायु में जल्दी-जल्दी रक्तस्राव होना।

(ज) जरायु के रोग जो निरंतर होते रहे हैं।

(झ) दुर्गंधयुक्त स्राव, फोडा अथवा गले, कान, जरायु से वर्षों तक होने वाले स्राव।

(ञ) रसौलियाँ शरीर के किसी भाग में दर्द वाली रसौलियाँ अथवा बिना दर्द वाली रसौलियाँ।

इन मोटे मोटे सम्भावित लक्षणों में से किसी एक के भी उत्पन्न होने पर समय पर होम्योपैथिक चिकित्सा हो जाय तो कैंसर तो दूर की बात, रोगी ठीक हो जायेगा। कैंसर न तो सहसा होता है और न चिकित्सक को यह बात रोगी पर प्रकट करनी चाहिए। जबकि चिकित्सक रोगी को बचा नहीं सकता है तो फिर उसको उसके रोग के विषय में बताकर उसको मृत्यु के मुख में धकेलने का जघन्य अपराध करना भी उसके लिए शोभनीय नहीं है।

चिकित्सक का यही उचित है कि यथासम्भव उसके लक्षणों के अनुसार उसकी चिकित्सा करे और उसे सान्त्वना देता रहे।

चिकित्सा

कार्सिनोसिन (Carcinosin) २००, १०००—यह कैंसर का 'नजोड' (Nosode) है। अर्थात कैंसर की पस से तैयार की गई औषधि है। लक्षणों के अनुसार सम्भावना होने पर एक मात्रा बडी शक्ति देकर मास दो मास

देखें कि रोगी में कितना सुधार होता है। दो सौ शक्ति की मात्रा सप्ताह में एक बार दी जा सकती है।

कार्बोनिकम सल्फ्यूरेटम (Carboneum Sulphuratum) ३०, २००—ल्यूकोरिया की अवस्था में यह उत्तम औषधि है। यदि लक्षण समूह पर ठीक चयन किया जाय तो रोगी स्वस्थ होता जायेगा।

इसके लक्षण हैं क्रोध, स्वभाव में तेजी, दृष्टि और सुनने में भ्रम होना, आँखों के आगे धुंधलापन, स्याटिका की पीडा, पेट के निचले भाग में घूमने वाली सूजन जैसे वायु के साथ बाजुओं में लहरों की सी पीडा उठना प्रातः गहरी नींद आना और चिन्ता, खुली हवा में अच्छा अनुभव करना, नाश्ते के बाद नहाने, गर्म और गीले मौसम में अस्वस्थता।

इस औषधि को कैंसर से बचने के प्रयोग में लाया जा सकता है।

सबाडिल्ला (Sabadilla)२००, १०००—रोगी को यह भय सताना कि उसको कहीं कैंसर तो नहीं है।

इस मानसिक लक्षण पर इस औषधि का सेवन बहुत उत्तम है।

एक रोगिणी जिसके स्तन में फोडा होने से वह चिन्तित थी कि कहीं उसको कैंसर तो नहीं हो गया उसको २०० शक्ति की मात्रा से लाभ हुआ।

विभिन्न अंगों के कैंसर की चिकित्सा

१—गला	केलि आयोड २००, १०००
२—जीभ	केलि साइनेटम २०० १०००
३—हड्डी	आयेडम, औरम मैटेलिक्म २००, १०००
४—छाती	आर्सेनिकम एल्बम, फाइटोलाका
५—यकृत	कौलेस्ट्रियम ३०, २००
६—पेट	काण्डूरंगू
७—जरायु	लेपिस एल्बम, कार्बो एनिमेलिस

कैंसर की पीडा से तत्काल लाभ करने वाली औषधियाँ

एपिस, सैड्रन, मैग फॉस मारफीन ओपियम, कैलिफास साइलीशिया।

कुछ अनुभूत प्रयोग

ब्लड प्रेशर

ब्लड प्रेशर इस युग म सामान्य-सी बात हो गई है। पाचनक्रिया का दोष इसका मूल कारण है। प्रात वायु भ्रमण करना हल्का जल्दी पच जाने वाला पौष्टिक भोजन खुली हवा और चिन्ता से मुक्ति यदि इन सावधानियो पर ध्यान दिया जाय तो ब्लड प्रेशर से मुक्ति मिल सकती है। अर्थात नियमित जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति ब्लड प्रेशर का शिकार नही हो सकता।

केलि फॉस(Kali Phos) ३० एक्स—वृद्धावस्था, थकावट, दिमागी थाम की स्थिति मे इसका प्रयोग लाभकारी है।

क्रेटगस-क्यू (Crataegus)—इसके निरन्तर प्रयोग से हृदय को बल मिलता है और इस प्रकार रक्तचाप से बचा जा सकता है।

हलका व्यायाम शरीर को स्वस्थ रखने के लिए बहुत आवश्यक होता है। यदि आवश्यकता पडे तो मात्र 'शवासन' भी व्यायाम का ही काम देता है। इससे रक्त के बहाव म साम्यता आती है।

हार्ट अटैक

रक्तचाप की ही भाँति आजकल हार्ट अटैक की बात भी बहुत सुनने को मिलती है। जब मनुष्य के शरीर से अधिक रस निकल जाता है तो इसके कारण उसका हृदय दुर्बल हो जाता है। मनुष्य को चाहिए कि वह अपनी इच्छाओ को सीमित करे। जो लोग प्राणायाम करते है उनको बहुत लाभ होता है। धन का अत्यधिक लोभ भी हृदय को दुर्बल कर देता है।

आधुनिक युग मे इसके औषधि के रूप म लहसुन की बडी चर्चा है। किन्तु होम्योपैथिक मेटिरिया मेडिका मे इसकी औषधि का बहुत पहले उल्लेख किया जा चुका है।

नई खोज के अनुसार सुनने मे आया है कि लहसुन के स्पर्श मात्र से हृदय आघात से बचा जा सकता है। इसकी विधि है प्रातःकाल उठकर

शौच आदि से निवृत्त होने के बाद लहसुन की एक गाँठ दाना हाथो में लेकर मुट्ठियाँ बन्द कर लीजिए। यह काय प्रतिदिन पन्द्रह मिनट तक करना चाहिए। इसे नित्य के व्यायाम का एक भाग मानकर कर लेना चाहिए। जो ऐसा करेगा उसको कभी हृदयाघात नही होगा।

यह करने पर भी प्राकृतिक नियमो का पालन करना तो आवश्यक है ही। लहसुन हाथ म पकड कर उसके साथ खेलने स वह बात नही बनगी जिस उद्देश्य म उसको हाथ लेने का विधान बनाया है। हाँ, इतना किया जा सकता है कि लहसुन को मुट्ठी मे दबाकर प्रात काल पन्द्रह मिनट तक सर कर ली जाय।

क्रेटेगस-क्यू हार्ट टानिक है। इसकी दस दस बूँदें प्रात और साय ताजे जल म डालकर प्रयोग करने से जहाँ इससे हृदय स्वस्थ होगा वहाँ आयु म भी वृद्धि होगी।

जिन बच्चो को विवाह और भविष्य की चिन्ता सतानी हो उन्हे लहसुन-व्यायाम से पूव पल्सेटिला १० एम की एक मात्रा ले लनी चाहिए। इससे उनका तनाव कम हो जायगा।

आहार ठीक रखना परमावश्यक है।

यदि नाडी बहुत दुबल हा तो 'क्रेटेगस' की अपेक्षा डिजिटेलिस-३०' का कुछ दिन तक प्रयोग करना चाहिए।

हृदय पर बोझ अथवा हृदयक्षेत्र म काई परेशानी हो तो क्रेटेगस के अतिरिक्त स्पाइजिलिया ३० (Spigelia) का कुछ दिन प्रयोग करना उचित होगा।

घबराने वाले जडता महसूस करने वाले को जेलसियम ३० पर भरोसा करना चाहिए।

बाजुआ मे पीडा जाती हो हृदय जकडा हुआ सा लगता हो तो कैक्टस ३० महा उपयोगी औषधि है।

नीचे हम इन चारो औषधियो के लक्षणो का वणन कर रहे हैं। पाठकों को चाहिए कि वह अपने लक्षणानुसार औषधि का चयन करें। हृदय महा प्राण माना गया है। अत हमारा निवेदन है कि इस विषय मे असावधानी नही अपितु विशेष सावधानी की आवश्यकता है, अत लक्षणो के अनुसार औषधि के चयन मे सतकता का ध्यान रखा जाना चाहिए।

क्रेटेगस—नाडी की गति तीव्र, सिर पीडा, बेचैनी, जडता हृदयस्थल मे पीडा रक्तचाप बढा हो तो इन लक्षणो मे यह लाभकारी औषधि है।

डिजिटेलिस—नाडी की गति धीमी जैसे कि रक्तचाप गिर गया हो रोगी का यह भय सताता है कि यदि वह हिलेगा डुलेगा या उठकर बैठेगा

ना उसकी हृदयगति रुक जायगी।

स्पाईजीलिया—हृदय की धड़कन बढ़ी हुई, हृदय धड़कन के आक्रमण जल्दी-जल्दी होना, नाड़ी दुर्बल अनियमित, ऊँचा सिर रखकर दायीं ओर लेट सकने म समथ, ये इसके मुख्य लक्षण हैं।

जेलशीमियम—यह डिजेटिलिस से उलटा है। रोगी समझता है कि यदि वह चलना फिरना बन्द कर देगा तो उसकी हृदय-गति रुक जायेगी। जड़ता छाई रहती है, प्यास नही लगती और घबराहट होती है।

कैकटस—हृदयस्थल मे पीड़ा और बाजुओं मे पीड़ा का आना ऐसा अनुभव करना कि किसी लोहे के फीते से या हाथ से किसी ने जकड़ रखा है, घुटन महसूस करना।

हृदय म यदि जन्मजात कोई दोष न हो और वंश परम्परा म भी हृदय की दुबलता का कोई इतिहास न मिला हो तो हृदय रोग अथवा रक्त चाप पेट्ू व्यक्तियों को होता है। ऐसे व्यक्ति जो खान पीने म चटोर तथा भोगवादी अनियमित जीवन व्यतीत करने वाले होते है। ऐसे लोगों को निम्नलिखित चार-पांच औषधियां लाभकारी होंगी—

कार्बोवेज ३०—कुछ अनियमित खान-पान के बाद गैस का दबाव ऊपर को हो तो उसके लिए यह उपयोगी औषधि है। सामान्यतया इसका प्रयोग पाचनक्रिया को ठीक रखने के लिए किया जाना अच्छा है।

नक्स वोमिका ३०—निचले भाग मे गैस हो, बार-बार शौच जाने की इच्छा गैस का निकलना, इस प्रकार के जो भोगवादी हैं, जो बैठे रहते हैं उनकी पाचनक्रिया को इससे लाभ होता है।

खाने पीने का स्वाद लेने वाले इसके प्रयोग से ब्लड प्रेशर से बचे रहेंगे। किन्तु यह ध्यान मे रखना चाहिए कि सीमा से अधिक बदपरहेजी तो फिर कठिनाई से ही ठीक हो सकती है।

लाइकोपोडियम ३०, २००—इसका दबाव निचले भाग मे रहता है। जो व्यक्ति कजूस वत्ति का ह उसके लिए यह उत्तम औषधि है। जिन लोगो को व्यापार के कारण तनाव रहता है उनके ब्लड प्रेशर से बचने तथा पाचनक्रिया की गड़बड़ी के लक्षण उभरते ही इसका प्रयोग लाभदायक है। इसके प्रयोग से रक्तचाप के कारण आने वाले चक्करों से भी बचा जाता है। मध्याह्नोत्तर यदि गैस बनती हो तो उसम यह बहुत लाभकारी है। विषय भोग म लगे रहने वालो के लिए, चटोर वृत्ति वालों के लिए यह उपयोगी औषधि है।

यह 'नब्ज' की महान औषधि है।

नेट्रम फास और मग फास ३०—इन दोनो को मिलाकर लेने से

पाचनक्रिया ठीक रहती है। खाना खाते खाते पेट में पीडा हो तो उसके लिए यह बहुत उत्तम है। जिन रोगियो को डॉक्टरों ने पित्त विकार अर्थात 'एसिडिटी' का रोगी बता दिया है उनको चाहिए कि वे प्रारम्भ में ही नेट्रम फॉस का प्रयोग करें। इसके प्रयोग से ब्लड प्रेशर और हृदय रोग से बचे रहेंगे।

कॅलि फॉस के साथ मॅग फॉस ३० स्त्रियों के लिए बहुत ही उत्तम औषधि है। मासिक धर्म के अवसर पर पेट मे अफारा अथवा कमर मे पीडा तथा उन दिनों की पीडा से बचने के लिए गर्म पानी मे इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

कलि फॉस ३०, २००—जो स्त्रियाँ नर्वस रहती हैं, लो ब्लड प्रेशर हो, घबराहट हो, इसके प्रयोग से वे लाभान्वित होंगी।

जो माताएँ घर पर बहुत अधिक काम करती हैं, अथवा बच्चों की चिंता करती है, उन्हें इनका निरंतर प्रयोग करना चाहिए।

मधुमेह

यह रोग भी आधुनिक युग में सामान्य होता जा रहा है। जो लोग ठाठ-बाट से रहते है मनचाहा खाते-पीते हैं आराम का जीवन व्यतीत करते है उनमे यह अधिकांशतया पाया जाता है।

इसमे पेशाब का बार बार आना और प्यास के लक्षण आते ही सिजा-इजम की पाच बूंदें आधी प्याली पानी मे डालकर इस प्रकार की एक मात्रा दिन में तीन चार बार लेने से इस भयानक रोग से मुक्ति मिल सकता है।

घबराहट, बेचैनी के साथ बार-बार पेशाब आना, इसमे एसिडफास —३०, २०० का प्रयोग लाभकारी होता है।

प्रात उठकर सैर करना हलका व्यायाम करना आलस्य को दूर भगाना तथा बैठे रहने काम कम करना, भोजन को नियमित करना चीनी, मीठे पदार्थ तथा मिष्ठान का प्रयोग बंद कर देना इसके लिए अत्यंत आवश्यक है।

अनानास, संतरा, जामुन, मौसमी इसके लिए उत्तम फल हैं। जामुन की ऋतु मे इसका प्रयोग करना मधुमेह की चिकित्सा का ही काय करगा।

आधुनिक आदतें

मनुष्य जीवन मे उसके स्वभाव का बहुत बडा महत्त्व होता है। जिस किसी का भी स्वभाव अच्छा होता है, सामान्यतया वह जीवन मे सफल ही होता है। स्वभाव मे मनुष्य की आदतें, खान-पान और व्यवहार भी आता है। यहाँ हम केवल उसकी वतमान मे सामान्य प्रचलित आदतो के विषय मे ही उल्लेख कर रहे हैं।

सिगरेट पीना मद्यपान करना, अफीम का नशा करना अथवा इसी प्रकार का कोई और नशा करना मनुष्य की आदतो मे सम्मिलित है। ये आदतें भी एक प्रकार का रोग ही हैं और ये भी रोग की ही भाँति मनुष्य शरीर को खोखला कर देती हैं।

इन आदतो से छुटकारा पाने के लिए हम यहाँ पर कुछ औषधियो का उल्लेख कर रहे हैं। यदि इनका आश्रय लिया जाय तो मनुष्य अपनी इन विनाशकारी आदतो से मुक्ति पा सकता है। औषधि सेवन के साथ-साथ व्यक्ति मे दृढ निश्चय की भावना का होना बहुत आवश्यक है। थोडी भी मानसिक शक्ति हुई तो औषधि आपके मन को सुदृढ बनाने मे सहायक होगी और आदत छूट जायेगी।

धूम्रपान

कलडियम (Caladium) २००—जो लाग तम्बाकू और हुक्का पीते हैं यह उनके लिए लाभकारी है। निरन्तर सिगरेट अथवा सिगार का कश लगाने वाले २०० शक्ति की एक मात्रा एक दिन छोडकर दूसरे दिन लेते रहे और अपने मन मे निश्चय करें तो कुछ ही दिनो मे धूम्रपान की यह आदत दूर हो जायेगी।

टेबेकम (Tabacum) २००, १०००—इसका प्रयोग भी तम्बाकू खाने वालो के लिए उपयोगी होता है। किसी दूसर को देखकर यदि सिगरेट पीने को मन करे तो उसके लिए २०० की दो मात्राएँ सिगरेट का स्वाद

लेने की इच्छा को मिटा देंगी।

विशेष—हमारे एक डॉक्टर मित्र की युवा कन्या बहुत ही आधुनिक विचारों की थी। वह नगर के सबसे अधिक खर्चीले कालेज मे पढ़ती थी और छात्रावास म ही रहती भी थी। छात्रावास का जीवन उन्मुक्त जीवन होता है। जहा अधिकाश छात्राएँ मनमानी का व्यवहार करती हैं। सिगरेट पीना तो वहा का फैशन ही होता है।

हमारे डॉक्टर मित्र की कन्या का मन भी अपनी सहवासिनियो को देखकर सिगरेट पीने को करने लगा। उसने पीना आरम्भ नही किया था। उससे पूर्व एक दिन रविवार को उसने अपने पिता से अपनी मन स्थिति का वर्णन किया। डॉक्टर साहब ने उसको इसके विषय मे बहुत कुछ कहा और उसकी हानियो के विषय मे बताया तथा नैतिकता का पाठ भी पढाया।

इसके साथ ही उन्होने टेबेकम—२००' की एक मात्रा उसके मुख मे डालते हुए कहा, "यदि तुम अपने मन को वश मे रखने में समर्थ हुई तो भविष्य मे तुम्हारा मन सिगरेट पीने के लिए नही करेगा।"

इसका परिणाम आश्चर्यजनक रूप से लाभकारी हुआ। वह लडकी छात्रावास मे अपनी सहवासिनियो के साथ रही किन्तु कभी उसके मन मे सिगरेट पीने की इच्छा नही उठी। यहाँ तक कि उसे सिगरेट के धुएँ से ही घृणा होने लगी थी। उसे वहाँ से उठ जाना पडता था।

स्टाफेसगेरिया ३०, २००—सिगरेट छुडाने की यह भी उत्तम औषधि है। जिन लोगो का ध्यान सदा यौन सम्बन्धी बातो पर रहता हो उनके लिए तो यह बहुत ही उत्तम है।

सिगरट छुडाने के साथ साथ यह क्रोध को भी शान्त करती है और विचारो का पवित्र रखने मे सहायक होती है।

मद्यपान

एवना स्टाविया (Avena Sativa)—इस टिंक्चर की दस बूँदें पानी मे डालकर दिन मे तीन चार बार सेवन करने से शराब पीने की आदत से मुक्ति मिल सकती है।

केलि फॉस (Kali Phos) ३० एक्स—इसके प्रयोग से मद्यपायी का मन सुदृढ रहेगा और वह अपनी आदत वश मे करने में समर्थ होगा।

एसिड फास (Acid Phos) २००—सप्ताह मे एक बार एक मात्रा का प्रयोग करने से मद्यपान की आदत से छुटकारा मिल सकता है।

नक्स वोमिका (Nux Vomica) ३०—यह उस व्यक्ति के लिए उत्तम

है जो मद्यपान करने के उपरान्त नशे मे चूर हो गया हो। उसके लिए बार बार इसकी मात्रा का प्रयोग लाभकारी होगा और नशा उतर जायेगा।

गाली देना

ऐसे भी लोग होते हैं कि जिनका स्वभाव बात-बात पर गाली देने का बन जाता है। यहाँ तक कि बिना किसी प्रसग के बात-बात पर गाली अथवा इस प्रकार के शब्दो का प्रयोग करने वाले देखने को मिलते हैं। इनमे सब अशिक्षित ही हो ऐसी बात नही, सुशिक्षित भी ऐसा करते हैं। जो क्रोधी स्वभाव के होते हैं अथवा जिनकी सगति अच्छी नही है, उनकी तो बात ही कुछ और है।

जब कोई सुशिक्षित व्यक्ति इस प्रकार का व्यवहार करता है तो वह अपने मन मे यह समझता तो है कि वह कुछ बुरा कर रहा है किन्तु स्वभाव के कारण वह स्वय को रोक नही पाता। यह उनके मन की दुर्बलता ही समझी जानी चाहिए।

आयुर्विज्ञान ऐसे व्यक्तियो को 'उन्माद का रोगी' मानता है।

इस प्रकार के व्यक्ति के लिए स्टाफेसगेरिया का प्रयोग लाभकारी होता है। सिगरेट के प्रकरण मे हमने इस ओषधि के गुणो पर विस्तार मे वर्णन किया है। उसके आधार पर गाली देने के स्वभाव का व्यक्ति भी इसका प्रयोग कर अपनी बुरी आदत से मुक्ति पा सकता है।

एनाकार्डियम ३०, २००, १००० १०,००० का प्रयोग भी इसके लिए बहुत उत्तम है। शक्तिक्रम का प्रयोग व्यक्ति की अपनी स्थिति पर निर्भर करता है।

इसके लिए सरल प्रयोग भी किया जा सकता है। किसी व्यक्ति का क्रोध आया हो और उसमे वह गाली गलौज करने लगा हो तो उसके सम्मुख आप कुछ खाने को रख दीजिये, विशेषतया ऐसी चीज जो कि उसकी विशेष रुचि की हो तो वह उस ओर प्रवृत्त होगा और गाली देना भूल जायेगा।

ऐसे व्यक्ति को भी एनाकार्डियम से लाभ होता है।

ऐसा भी देखने मे आता है कि अनेक व्यक्ति ऐसे भी होते हैं जिनके मुख से महिलाओ के सम्मुख ही गाली निकल आती है। अनायास गाली बकना पीठ पीछे किसी अन्य व्यक्ति को गाली देना उनको भी एनाकार्डियम से लाभ होता है।

जो व्यक्ति आलोचक स्वभाव का है, तर्क वितर्क करता है, किसी भी बात पर बोल पडता है उसके लिए सल्फर—२०० का प्रयोग प्रति सप्ताह करने से लाभ होता है।

भय

इस विषय में हम विस्तार से इस पुस्तक के प्रारम्भ में लिख आये हैं। यहाँ हम संक्षेप में ही इसका वर्णन इसलिए कर रहे हैं क्योंकि यह मनुष्य के स्वभाव का एक अंग बन गया है। साथ घर में बैठे-बैठे भी भयभीत रहते हैं सड़क पर चलते चलते उनको भय सताता है।

एकानाइट भय की सर्वोत्तम औषधि है। इसके प्रयोग से मृत्यु का भय भी भाग जाता है, सामान्य भय की तो बात ही अलग है। प्रारम्भ में ३० शक्ति की मात्रा दीजिये और अधिक आवश्यकता पड़े तो बाद में शक्तिक्रम बढ़ाया जा सकता है।

व्यापार में आर्थिक हानि होने का भय हो तो उस स्थिति में कालकेरिया फ्लोर २०० का प्रयोग लाभकारी सिद्ध होता है।

मनुष्य आर्थिक हानि के कारण यदि रोग शय्या पर पड़ जाता है तो उस अवस्था में एम्बरा ग्रीशिया ३० नितान्त उत्तम औषधि मानी गई है।

कुछ विशिष्ट औषधियाँ

अपनी पहली पुस्तक 'घर का डॉक्टर' में भी मैंने २५ ऐसी औषधियों का उल्लेख किया है जो कि प्रत्येक घर में होनी ही चाहिए। यहाँ पर हम कुछ ऐसे होम्योपैथिक टिंक्चर का उल्लेख कर रहे हैं जो कि समय-समय पर गृहस्थ में बहुत सहायक सिद्ध होते हैं।

ग्रेटेक्स-क्यू—इसका विस्तार से उल्लेख पिछले अनेक प्रकरणों में किया जा चुका है। अतः पुनरावृत्ति की आवश्यकता नहीं।

आर्निका-क्यू—बन्द चोट पर यह उपयोगी है। बन्द चोट पर बराबर लगाते रहने से लाभ होता है। खाने के लिए ३० शक्ति की मात्रा दी जा सकती है।

कलेण्डुला क्यू—रक्त बहने की अवस्था में इसके प्रयोग से लाभ होता है। इसके लगाने से रक्त बहना रुक जायेगा।

हेमामालिस-क्यू—यदि कलेण्डुला क्यू से रक्त न रुके तो इसका प्रयोग करना चाहिए।

वाचालता

कभी-कभी ऐसा भी देखने मे आता है कि व्यक्ति बहुत वाचाल होता है अनाप शनाप बकने वाला होता है। कुछ ऐसे होते हैं कि बैठे बैठे और सडक पर चलते-चलते भी अनायास ही बोलने लगते हैं। बोलेंगे तो ऐसे कि निरन्तर बोलते चले जायेंगे, बिना रुके हुए बोलते रहेंगे।

स्ट्रेमोनियम (Stramonium) ३०, २००—सामान्यतया ऐसे व्यक्ति के लिए इस औषधि से लाभ होता है—

जो व्यक्ति या बच्चा भी, सदा अपनी जननेन्द्रिय पर हाथ रखे रहता है और बहुत अधिक व्यर्थ की बातें करने वाले होते हैं, उनके लिए धतूरा उपयोगी माना गया है और 'स्ट्रेमोनियम' का निर्माण धतूरे से ही होता है। ३० या २०० की शक्ति की मात्रा लाभकारी है।

चोरी करना

चोरी करने का स्वभाव कुछ पेशेवर लोगो का तो होता ही है किन्तु कभी कभी यह भी देखने मे आता है कि भले व्यक्ति भी इसके शिकार हो जाते हैं। रक्त से इसका गहरा सम्बन्ध है। वंशानुक्रम से इस आदत का होना स्वाभाविक है। चोर की संगति तो चोरी सिखायेगी ही। किन्तु यदि रक्त मे अर्थात् उत्तराधिकार मे ऐसी आदत प्राप्त हुई है तो उसकी चिकित्सा कुछ कठिन होती है।

इस प्रकार के व्यक्ति को पहले 'सल्फर २००' की एक मात्रा देकर चार पाँच दिन बाद कलकेरिया कार्ब २०० का प्रयोग करने से लाभ होता है। धीरे धीरे बडी शक्ति की मात्रा देते रहना चाहिए।

जो सभ्य व्यक्ति इस आदत से मुक्ति पाना चाहते है, उनके लिए यह औषधियाँ उपयोगी है।

गुमसुम रहना

अधिकांशतया ऐसे व्यक्ति भी देखने मे आते ही है कि जो कभी मुस्कराते ही न हो। देखने मे वे स्वस्थ दिखाई देते हैं किन्तु सदा बडे ही गम्भीर बने रहते हैं। यह भी एक प्रकार का मानसिक रोग है, जिससे मनुष्य को मुक्ति मिलनी ही चाहिए।

एल्युमीना (Alumina) २००—जिन व्यक्तियो का ऐसा गम्भीर स्वभाव हो अथवा गुमसुम से रहते हो उनको २०० की एक मात्रा सप्ताह मे एक बार देने से कुछ मास मे स्वभाव सामान्य हो जाता है।

भय

इसके विषय में हम विस्तार से इस पुस्तक के आरम्भ में लिख आये हैं। यहाँ हम संक्षेप में ही इसका वर्णन इसलिए कर रहे हैं क्योंकि यह मनुष्य के स्वभाव का एक अंग बन गया है। लोग घर में बैठे-बैठे भी भयभीत रहते हैं सड़क पर चलते चलते उनका भय सताता है।

एकोनाइट भय की सर्वोत्तम औषधि है। इसके प्रयोग से मृत्यु का भय भी भाग जाता है सामान्य भय की तो बात ही अलग है। आरम्भ में ३० शक्ति की मात्रा दीजिये और अधिक आवश्यकता पड़े तो बाद में शक्तिक्रम बढ़ाया जा सकता है।

व्यापार में आर्थिक हानि होने का भय हो तो उस स्थिति में कलकेरिया फ्लोर २०० का प्रयोग लाभकारी सिद्ध होता है।

मनुष्य आर्थिक हानि के कारण यदि रोग शय्या पर पड़ जाता है तो उस अवस्था में एम्बरा ग्रीशिया ३० नितान्त उत्तम औषधि मानी गई है।

कुछ विशिष्ट औषधियाँ

अपनी पहली पुस्तक 'घर का डाक्टर' में भी मैंने २५ ऐसी औषधियों का उल्लेख किया है जोकि प्रत्येक घर में होनी ही चाहिए। यहाँ पर हम कुछ ऐसे होम्योपैथिक टिंचर का उल्लेख कर रहे हैं जोकि समय-समय पर गृहस्थ में बहुत सहायक सिद्ध होते हैं।

ग्रेटेकस-क्यू—इसका विस्तार से उल्लेख पिछले अनेक प्रकरणों में किया जा चुका है। अतः पुनरावृत्ति की आवश्यकता नहीं।

आर्निका-क्यू—बन्द चोट पर यह उपयोगी है। बन्द चोट पर बराबर लगाते रहने से लाभ होता है। खाने के लिए ३० शक्ति की मात्रा दी जा सकती है।

कलेण्डुला क्यू—रक्त बहने की अवस्था में इसके प्रयोग से लाभ होता है। इसके लगाने से रक्त बहना रुक जायेगा।

हेमामालिस-क्यू—यदि कलेण्डुला क्यू से रक्त न रुके तो इसका प्रयोग करना चाहिए।

यदि गुदा से रक्तस्राव होता हो तो इसकी दो चार बूंदें पानी मे डाल कर प्रयोग करने से लाभ होता है।

बेलाडोना क्यू—यदि किसी प्रकार की सूजन हो जाय तो उसके लिए यह उपयोगी है। यदि पेट मे पीडा हो और स्त्रियो को मासिक के दिनो म पीडा हो तो इसकी बूंदें पानी मे मिलाकर लेने से लाभ होता है।

बरबेरिस-क्यू—यदि गुर्दे म पीडा हो, पेशाब रुक गया हो, रोगी तड-फता हो तो इसकी चार बूंदें पानी मे डालकर प्रयोग करने से लाभ होता है। इसके निरन्तर प्रयोग स पथरी भी निकल जाती है।

अर्टिका यूरेनस (Urtica Urens)—स्त्रियो की छपाकी के लिए यह सर्वोत्तम औषधि है। नित्य प्रति चार बूंदें पानी मे डालकर सेवन करने से लाभ होता है।

हाईड्रासटिस (Hydrastis)—यह औषधि कब्ज, पेट के रोग, लिको-रिया, दुबल रोगियों के लिए उत्तम है। दुबले-पतले बच्चो को पीलिया के बाद टानिक के रूप मे भी लिया जा सकता है। इसके निरन्तर प्रयोग से लाभ होता है।

कैनथरिस (Cantheris)—जले हुए व्यक्ति के लिए बहुत ही उत्तम औषधि है। इसका टिक्चर और मलहम दोनो ही लगाय जा सकते है। ३० शक्ति की औषधि इसके सेवन के लिए उपयुक्त है।

जल्सेमियम क्यू—जडता, बुखार, प्यास का न होना, रोगी बात करना न चाहता हो, सोने की इच्छा, नींद न आना, के साथ-साथ मलेरिया और मौसमी ज्वर मे भी लाभकारी है।

सिजाइजम—इसी अध्याय मे इसका उल्लेख किया जा चुका है। यह बहुत ही उत्तम औषधि है। विशेषकर मधुमेह के रोगी के लिए।

एवना स्टाविया—जुकाम के लिए बहुत उपयोगी औषधि है। जो लोग मद्यपान के अभ्यस्त है उनके लिए यह बहुत ही उपयोगी होती है। इसकी चार बूंदें गर्म पानी म डालकर लेनी चाहिए।

टानिक के रूप मे भी इसका प्रयोग किया जाता है।

चेलिडोनियम क्यू—यह जिगर की औषधि है, जिगर बढ़ना, उस स्थान पर पीडा होना, चेहरे का पीलापन, भूख का कम लगना, इन लक्षणो पर चार बूंद जल मे डालकर इसका प्रयोग करना लाभकारी होता है।

रस टाक्स-क्यू—मोच पर यह उत्तम औषधि है। भीतर मास फट जाय, बेचैनी हो इस अवस्था मे इसका टिक्चर अथवा मलहम उस स्थान पर लगाने से लाभ होता है।

कालमेघ क्यू (Kalmeg)—यह भी जिगर की ही औषधि है। जिगर

के काय को ठीक करने के लिए और पीलिया रोग में चेलिडोनियम क्यू दो-दो बूँदें दाना की मिलाकर ताजे पानी मे दिन में चार बार देने से बहुत लाभ होता है। इससे भूख भी बढ़ती है। रोगी स्वस्थ हो जाता है।

एल्फाएल्फा-क्यू (Alfalfa)—इसका प्रयोग टानिक के रूप मे किया जाता है। इसकी चार पाँच बूँद ताजे पानी मे डालकर दिन में तीन-चार बार लेने से भोजन भली प्रकार पच जाता है, शरीर मे स्फूर्ति का संचार होता है। पतले बच्चो को मोटा करने के लिए इस टिंचर का प्रयोग लाभकारी होता है। इसे मिल्क सुगर मे मिलाकर देना चाहिए। पानी मे भी दी जा सकती है। यह शक्तिवर्द्धक है।

'सम समम शमयति।'